اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج٥١ ص١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह किताब **(घरेलू इलाज)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है **:**

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये "**ह़ुरूफ़ की पहचान**" नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت، اِسْتِعْمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

www.dawateislami.net

हुरूफ़ की पहचान

ફ = پھ	પ = پ	ભ = بھ	બ = ب	અ = ا
સ = ث	ઠ = ٹھ	ટ = ٹ	થ = تھ	ત = ت
હ = ح	છ = چھ	ચ = چ	ઝ = جھ	જ = ج
ઢ = ڈھ	ડ = ڈ	ધ = دھ	દ = د	ખ = خ
ઝ = ز	ઢ = ڑھ	ડ = ڑ	ર = ر	ઝ = ذ
ઝ = ض	સ = ص	શ = ش	સ = س	ઝ = ژ
ફ = ف	ગ = غ	અ = ع	ઝ = ظ	ત = ط
ઘ = گھ	ગ = گ	ખ = کھ	ક = ک	ક = ق
હ = ہ	વ = و	ન = ن	મ = م	લ = ل
ઈ = ای / ئی	ઇ = اِ	ઐ = ےا	એ = ے	ય = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की

मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

इलाज के घरेलू नुस्ख़ों पर मुश्तमिल म-दनी गुलदस्ता

घरेलू इलाज

मुअल्लिफ़

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये
दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

नाशिर :
मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

नाम किताब : **घरेलू इ़लाज**

मुअल्लिफ़ : शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल अव्वल 1437 सि.हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाखें

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C/o) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपूर फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : (0145) 2629385

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली – 580024. फ़ोन : 09343268414

ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़न्वान	स.	उ़न्वान	स.
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	7	धूप ह़ासिल करने का त़रीक़ा	25
हर बीमारी की दवा है	7	मोटापे का इ़लाज	26
शिफ़ा मिलने न मिलने का राज़	8	मोटापे का सब से बेहतरीन इ़लाज	28
त़िब यक़ीनी नहीं ज़न्नी है	9	सफ़र के ज़रीए़ इ़लाज	29
सुना सुनाया इ़लाज ख़त़रनाक साबित हो सकता है	9	नींद के 5 इ़लाज	29
		जिस को नींद न आती हो उस के लिये 8 इ़लाज	30
कौन सी दवा किस के लिये नुक़्सान देह है	10	नींद लाने वाला मजे़दार शरबत	32
क्या हर मरीज़ के लिये शह्द मुफ़ीद है ?	11	नींद लाने का सांस के ज़रीए़ इ़लाज	32
क्या ह़दीस में बताया हुवा इ़लाज हर एक कर सकता है ?	12	नींद ज़ियादा होती हो तो....	33
ग़ैरे त़बीब को इ़लाज में हाथ डालना ह़राम है	13	नींद से जाग कर पढ़िये और मददे इलाही ह़ासिल कीजिये	34
माहिर त़बीब की ता'रीफ़	14	क़िब्ला रुख़ बैठने से बीनाई तेज़ होती है	34
इ़ल्मे त़िब की दिलचस्प ह़िकायत	15	आंखों का लज़ीज़ चूरन	34
बीमारियों से बचने का ला जवाब नुस्ख़ा	16	आंखों का मरीज़ और मछली	35
त़वील अ़र्सा जवान रहने का नुस्ख़ा	16	ऐनक के नम्बर कम करने के लिये	35
ख़ून टेस्ट और इस की एह़तियातें	17	ज़हरीले जानवरों के काटे के 10 इ़लाज	36
अस्पताल में दाख़िल होना पड़े तो	18	सांप बिच्छू वग़ैरा से पनाह का आसान वज़ीफ़ा	36
सगे मदीना ने जब ऑपरेशन करवाया	18	सुब्ह़ व शाम की ता'रीफ़	36
हवा से इ़लाज	19	जिल्दी अमराज़ के 16 इ़लाज	38
धूप की अहम्मिय्यत	19	फोड़े और जख़्म का रूह़ानी इ़लाज	38
एग्ज़ोस्ट फ़ेन	20	ख़ाके मदीना और ख़ाके वत़न	38
सूरज की किरनों का कमाल	21	ख़ारिश की बेहतरीन ह़िकायत	39
शीशे से छन कर आने वाली धूप	22	उम्मे अ़त्त़ार की ख़ारिश कैसे ठीक हुई !	40
बच्चों की बीमारी	22	मेंहदी से इ़लाज के बारे में आ'ला ह़ज़रत का इर्शाद	40
घरों में धूप न आने का नुक़्सान	23		
बच्चे में रिकेट्स की अ़लामात	23	ख़ारिश का ख़ुश ज़ाएक़ा ह़ल्वा	41
रिकेट्स के 14 दर्दनाक नुक़्सानात	24	ग़ुस्ल के ज़रीए़ ख़ारिश का इ़लाज	42
ऑपरेशन से बच्चे आने की एक वज्ह	24	सर्दी में हाथ पाउं फटने का इ़लाज	42
बच्चों को अन्डों की ज़र्दी खिलाइये	25	बदन के दाग़ धब्बों का इ़लाज	43

उ़न्वान	स.	उ़न्वान	स.
ख़ुश्क ख़ारिश	43	गला बैठ गया हो तो.....	62
तर ख़ारिश	44	मुंह के छाले के 7 इ़लाज	62
गरमी दानों का इ़लाज	45	केन्सर	63
सर में ख़ुश्की के 3 इ़लाज	45	मुंह के केन्सर का एक सबब	63
दर्द का रूह़ानी इ़लाज	46	बुरे ख़्वाब के 5 म-दनी इ़लाज	64
दिल की बीमारियों के 7 इ़लाज	46	पीलिया (यरक़ान) के दो इ़लाज	65
दिल की घबराहट के लिये	46	बद ज़बानी का इ़लाज	65
दिल की बन्द शिरयानें खुलने की ह़िकायत	47	शूगर के 8 इ़लाज	65
दिल की शिरयानें खोलने वाला नुस्ख़ा येह है	48	दांतों की मज़्बूती का राज़ । ह़िकायत	67
दर्दे सर का इ़लाज	48	दांतों और कानों की ह़िफ़ाज़त का आसान अ़मल	68
आधे सर के दर्द के 6 इ़लाज	50	दांत कमज़ोर होने की एक वज्ह	68
दर्दे सर के 8 इ़लाज	51	दांतों के दर्द के दो इ़लाज	69
दाइमी नज़्ले के 5 इ़लाज	53	दांतों का ख़ून बन्द करने के लिये पांच इ़लाज	69
नज़्ले का देसी इ़लाज	53	दांतों का पीलापन दूर करने के 3 इ़लाज	69
नज़्ला खोलने के लिये	54	दांतों से पीप आने के 4 इ़लाज	70
बवासीर और इस के बा'ज़ अस्बाब	54	दांतों के तमाम अमराज़ का इ़लाज	70
ज़ैतून से बवासीर का इ़लाज	54	मिस्वाक के 14 म-दनी फूल	71
अन्जीर से ख़ुश्क बवासीर का इ़लाज	55	दांतों की ह़िफ़ाज़त के 3 म-दनी फूल	72
ख़ूनी बवासीर के 4 इ़लाज	55	मुंह की बदबू के 4 इ़लाज	73
गुर्दे की पथरी	56	दांतों को बीमारी से बचाने का बेहतरीन नुस्ख़ा	74
गुर्दे के दर्द के दो इ़लाज	56	पेशाब में जलन के 4 इ़लाज	74
दमा और सांस फूलना	56	पेशाब का इ़लाज	75
मे'दे में ज़ख़्म	57	बार बार पेशाब आने के 5 इ़लाज	75
जिगर या मे'दे के तमाम अमराज़ के लिये	57	पेशाब रुक रुक कर आने के 4 इ़लाज	76
हाई ब्लड प्रेशर	57	पेशाब में ख़ून	77
चावल ब्लड प्रेशर में मुफ़ीद हैं	58	पेशाब में धात	77
खांसी के 18 इ़लाज	58	नींद में पेशाब निकल जाना, जिरयान,	
हिचकी के छ इ़लाज	60	एह़्तिलाम	77
हाथ पैर सुन हो जाने के 3 इ़लाज	61	औ़रत के बार बार पेशाब आने का इ़लाज	78
आवाज़ बैठ जाए तो तीन इ़लाज	61	अगर मर्द को शह्वत तंग करती हो तो...	78

www.dawateislami.net

उ़न्वान	स.	उ़न्वान	स.
मे'दा बीमार होने की पहचान	78	रात का खाना खाने का फ़ाएदा	98
हाज़िमा कैसे दुरुस्त हो ?	78	मसाने की पथरी का इ़लाज	99
"भूक न लगती हो तो" दो इ़लाज	79	तेज़ाबिय्यत (सीने की जलन) के 7 इ़लाज	99
बद हज़्मी के दो म-दनी इ़लाज	80	दमा के 3 इ़लाज	100
गेस और बद हज़्मी का देसी इ़लाज	81	दमा के ह़म्ले के वक़्त करने के 3 इ़लाज	101
हाज़िमे का मन भाता इ़लाज	81	उंगली कट जाए तो	101
हाज़िमा दार चटनी बनाने का त़रीक़ा	82	कांटा निकालने का त़रीक़ा	101
क़ब्ज़ के तीन अस्बाब	82	जल जाने के 4 इ़लाज	101
क़ब्ज़ के 17 इ़लाज	82	थकन दूर करने के 4 इ़लाज	102
बेहोशी के 3 इ़लाज	85	बीमारियों से ह़िफ़ाज़त के लिये....	102
जोड़ों के दर्द के 6 इ़लाज	85	ह़ैज़ की ख़राबी के नुक़्सानात	103
हड्डी जोड़ने के लिये	86	ह़ैज़ की ख़राबी और डरावने ख़्वाब	103
नक्सीर फूटने का इ़लाज	87	कसरते ह़ैज़ के दो इ़लाज	104
नाक की हड्डी बढ़ी हुई हो तो....	87	माहवारी की ख़राबियों के तीन इ़लाज	104
कान के दर्द के दो इ़लाज	87	ह़ैज़ बन्द होने के 6 इ़लाज	104
कान में कीड़ा घुस जाए तो....	87	ह़ैज़ के दर्द का इ़लाज	105
बुख़ार के इ़लाज की ह़िकायत	87	बांझपन के 5 इ़लाज	106
बुख़ार के 7 म-दनी इ़लाज	89	ह़ामिला की तकालीफ़ के 6 इ़लाज	107
हड्डियों से इ़लाज के म-दनी फूल	91	ह़सीन व अ़क़्ल मन्द औलाद के लिये	108
पेट के दर्द के 4 इ़लाज	92	अय्यामे ह़म्ल के लिये बेहतरीन अ़मल	108
बच्चों के पेट के दर्द के 4 इ़लाज	93	ह़म्ल में ताख़ीर	108
पेट की जलन के दो इ़लाज	93	अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया तो....	109
पेचिश	94	सफ़ेद पानी	109
पेट में कीड़े	94	ह़म्ल की ह़िफ़ाज़त के 7 इ़लाज	109
क़ै के फ़वाइद व नुक़्सानात	94	लीकोरिया का इ़लाज	111
क़ै बन्द करने के 8 इ़लाज	95	इ़र्क़ुन्निसा के दो इ़लाज	111
पागल पन	96	देसी मुर्ग़ी के फ़वाइद	112
पागल पन का इ़लाज	96	घरेलू झगड़ों का इ़लाज	112
गन्ज के चार इ़लाज	97	कलौंजी के 19 म-दनी फूल	113
कमज़ोरी के 2 इ़लाज	98	अन्जीर के 33 म-दनी फूल	114

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

घरेलू इलाज

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान, महबूबे रहमान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर एक दिन में **एक हज़ार बार दुरूदे पाक** पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले।

(اَلتَّرْغِيب وَالتَّرْهِيب ج۲ص۳۲۸ حديث ۲۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हर बीमारी की दवा है

अल्लाह तबा-र-क व तआला ही हक़ीक़त में शाफ़ियुल अमराज़ या'नी बीमारियों से शिफ़ा देने वाला है। सभी जानते हैं कि बा'ज़ अवक़ात बड़े बड़े **माहिरे तबीब** बेहतर से बेहतरीन दवाएं देते हैं मगर "**मरज़ बढ़ता गया जूं जूं दवा की**" के मिस्दाक़ मरज़ में मुसल्सल इज़ाफ़ा होता और बिल आख़िर मरीज़ दम तोड़ देता है। मुस्लिम शरीफ़ में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह्हत निशान है : "हर बीमारी की दवा है, जब दवा बीमारी तक पहुंचा दी जाती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मरीज़ अच्छा हो जाता है।" (مُسلِم ص۱۲۱۰حديث ۲۲۰٤)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

मीठे मीठे इस्लामी भाइय्यो ! यक़ीनन **बुढ़ापे** और **मौत** के सिवा हर बीमारी का इलाज है। हां येह बात अलग है कि कई अमराज़ का इ़लाज **अति़ब्बा** (या'नी डॉक्टर्ज़) अब तक दरयाफ़्त नहीं कर पाए। लिहाज़ा येह कहने के बजाए के "फ़ुलां मरज़ का इ़लाज नहीं है" मुनासिब येह है कि यूं कहा जाए कि हमारे पास इस बीमारी का इ़लाज नहीं या डॉक्टर्ज़ अभी तक इस मरज़ का इ़लाज दरयाफ़्त नहीं कर सके। बहर ह़ाल **रब्बे ज़ुल जलाल** جَلَّ جَلَالُهٗ चाहे तो दवा **शिफ़ा** का ज़रीआ़ बने वरना ऐन मुम्किन है कि वोही दवा मौत का सबब बन जाए ! और येह भी अक्सर देखा जाता है कि **माहिर डॉक्टर** की त़रफ़ से मिलने वाली दुरुस्त दवा के बा वुजूद किसी किसी मरीज़ को मन्फ़ी असर (REACTION) हो जाता और वोह मज़ीद शदीद बीमार, मा'ज़ूर या फ़ौत हो जाता और फिर बा'ज़ लोगों की जहालत के बाइ़स बेचारे डॉक्टर की शामत आ जाती है।

शिफ़ा मिलने न मिलने का राज़

मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان मज़्कूरा ह़दीसे पाक के तह़्त मिरआत शर्ह़े मिश्कात जिल्द 6 सफ़ह़ा 214 पर **साह़िबे मिरक़ात** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं **:** "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बीमार की शिफ़ा नहीं चाहता तो दवा और मरज़ के दरमियान एक **फ़िरिश्ते** के ज़रीए़ आड़ कर देता है जिस की वज्ह से दवा मरज़ पर वाक़ेअ़ नहीं होती, जब शिफ़ा का इरादा होता है तो वोह पर्दा हटा दिया जाता है जिस से दवा मरज़ पर वाक़ेअ़ होती है और शिफ़ा हो जाती है।"

(مرقاة المفاتيح ج۸ص۲۸۹ تحت الحديث٤٥١٥)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

तिब यक़ीनी नहीं ज़न्नी है

इस किताब में जो भी तिब्बी इलाज तज्वीज़ किये गए हैं वोह यक़ीनी नहीं हैं बल्कि सारे का सारा तिब ही ज़न्नी या'नी इस में ग़-लती का इम्कान रहता है, हर दवा इरादए इलाही عَزَّوَجَلَّ के ताबेअ़ है। अगर **शिफ़ा** मिल जाए तो **दवा** का कमाल नहीं, **रब्बे मु-तआ़ल** عَزَّوَجَلَّ का रह़मो करम और जूदो नवाल है। अगर **शिफ़ा** न हो या ख़ुदा न ख़्वास्ता मज़ीद नुक़्सान हो जाए तब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहिये। अक्सर नुस्ख़ा जात मुख़्तलिफ़ किताबों से और बा'ज़ अपने तजरिबात की रोशनी में तह़रीर किये हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़-रज़ो ग़ायत ख़िदमते उम्मत और इस के ज़रीए हुसूले रिज़ाए रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ है। उम्मत की ख़ैर ख़्वाही बड़े सवाब का काम है कि خَیْرُ النَّاسِ اَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ या'नी बेहतरीन शख़्स वोह है जो लोगों को फ़ाएदा पहुंचाए। (اَلْجامِعُ الصَّغِیر ص۲٤٦ حدیث ٤٠٤٤) **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब,[1] हम गुनाहों के मरीज़ों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मन्फ़अ़त निशान है **:** जो कोई तुम में से अपने भाई को **नफ़्अ़** पहुंचा सकता हो तो उसे **नफ़्अ़** पहुंचाना चाहिये। (مُسلِم ص۱۲۰۷ حدیث ۲۱۹۹)

सुना सुनाया इलाज ख़त़रनाक साबित हो सकता है

इलाज के लिये किसी एक त़बीब को मुस्तक़िल मख़्सूस कर

1 : लबीब या'नी अ़क़्ल मन्द, दाना

www.dawateislami.net

लेना चाहिये, वोह आप के त़ब्ई़ मिज़ाज से वाक़िफ़ रहेगा तो इ़लाज जल्द हो सकेगा और मन्फ़ी अ–सरात के ख़त़रात भी कम रहेंगे, वरना ख़्वाह म ख़्वाह जुदा जुदा त़बीबों के पास जाएंगे तो वोह नए नए नुस्ख़े आज़माएंगे, इस त़रह़ आप का पैसा और वक़्त दोनों बरबाद होते रहेंगे । इसी त़रह़ किताबों या लोगों के बताए हुए नुस्ख़ों के मुत़ाबिक़ इ़लाज करना भी ख़त़रनाक साबित हो सकता है, कि मसल मश्हूर है "नीम ह़कीम ख़त़्रए जान ।" साथों साथ येह भी ख़ास ताकीद है कि **इस किताब में दिया हुवा कोई भी नुस्ख़ा अपने त़बीब से मश्वरा किये बिग़ैर इस्ति'माल न किया जाए अगर्चे येह नुस्ख़ा उसी बीमारी के लिये हो जिस से आप दो चार हों ।** इस की बुन्यादी वज्ह येह है कि लोगों की त़ब्ई़ कैफ़िय्यात जुदा जुदा होती हैं, एक ही **दवा** किसी के लिये **आबे ह़यात** का काम दिखाती है तो किसी के लिये **मौत का पयाम** लाती है । लिहाज़ा आप की जिस्मानी कैफ़िय्यात से वाक़िफ़ आप का मख़्सूस त़बीब ही बेहतर तै़ कर सकता है कि आप को कौन सा नुस्ख़ा मुवाफ़िक़ हो सकता है और कौन सा नहीं । क्यूं कि किताब में इ़लाज के त़रीक़े बयान करना और है जब कि किसी ख़ास मरीज़ का इ़लाज करना और ।

कौन सी दवा किस के लिये नुक़्सान देह है

मैं ने एलोपेथिक अदविय्या के शो'बे से वाबस्ता अपने मर्हू़म बड़े भाईजान से सुना था कि जब पेनिसिलीन (PENICILLIN) का इन्जेक्शन नया नया ईजाद हुवा था तो लोगों को इस से काफ़ी शिफ़ाएं

www.dawateislami.net

मिल रही थीं, मगर बा'ज़ मरीज़ इसी के मन्फ़ी असर (REACTION) के सबब **फ़ौत** भी हो जाते थे । **शूगर** के मरीज़ों के लिये शकर और मीठी चीज़ों वाले, **फ़िशारुद्दम** (हाई ब्लड प्रेशर) वालों के लिये **नमक** और **चिक्नाहट** वाले और दिल के मरीज़ों के लिये **घी तेल** वाली दवाओं के नुस्ख़े नुक़्सान देह साबित हो सकते हैं । इसी त़रह़ बा'ज़ों को **खजूरों, छुहारों** से मुंह में छाले पड़ जाते हैं और किसी को **दूध** हज़्म नहीं होता ।

क्या हर मरीज़ के लिये शह्द मुफ़ीद है ?

शह्द ही को ले लीजिये ह़ालां कि इस में **शिफ़ा** है : ताहम बा'ज़ों के वुजूद इस को बरदाश्त नहीं कर पाते चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 25 **सफ़ह़ा 88 पर रद्दुल मुह़्तार** के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : “जिन मिज़ाजों (या'नी त़बीअ़तों) पर सफ़रा[1] ग़ालिब होता है **शह्द** उन्हें नुक़्सान करता है बल्कि बारहा **बीमार** कर देता है ! बा आं-कि (या'नी बा वुजूद इस के कि) वोह (या'नी शह्द) ब नस्से क़ुरआनी (दलीले क़ुरआनी से) शिफ़ा है।” **(رَدُّالْمُحتار ج١٠ص٥٠)** **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह

1 : अख़्लाते़ अर-बअ़ा या'नी चार ख़िल्तें (1) सफ़रा (या'नी पित) (2) ख़ून (3) बल्ग़म और (4) सौदा (जला हुवा सियाह बल्ग़म) इन चारों में से जिन लोगों के वुजूद में सफ़रा (पित) या'नी पीले रंग का कड़वा पानी ज़ाइद हो उस के लिये शह्द का इस्ति'माल मुज़िरें सिह़्ह़त है ।

www.dawateislami.net

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن सफ़रा की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : "वोह ज़र्द पानी कि पित्ते में होता है जिस को **सफ़रा** कहते हैं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 237) मिरआत जिल्द 6, सफ़ह़ा 218 पर दिये हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان के फ़रमान का ख़ुलासा है : "**त़िब** में **शह्द** को दस्त आवर (या'नी दस्त लाने वाला) माना गया है लिहाज़ा **दस्तों** (या'नी डाएरिया, लूज़ मोशन) में शह्द इस्ति'माल न किया जाए।"

क्या ह़दीस में बताया हुवा इ़लाज हर एक कर सकता है ?

अह़ादीसे मुबा-रका में बयान कर्दा इ़लाज भी अपनी मरज़ी से नहीं करने चाहिएं। बेशक सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीने वाला शान ह़क़, ह़क़ और ह़क़ ही हैं। मगर जो **इ़लाज** नबियों के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तज्वीज़ फ़रमाए हैं हो सकता है वोह ख़ास ख़ास मौक़ओं मौसिमों की मुनासि-बतों और मख़्सूस लोगों के मिज़ाजों और त़बीअ़तों के मुवाफ़िक़ हों जैसा कि ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक **فِى الْحَبَّةِ السَّوْدَاءِ شِفَاءٌ مِّنْ كُلِّ دَاءٍ اِلَّا السَّامَ** या'नी काला दाना (कलौंजी) में मौत के सिवा हर बीमारी से **शिफ़ा** है" (بخاری ج٤ ص١٩ حدیث٥٦٨٧) के तह़त फ़रमाते हैं : हर मरज़ (में शिफ़ा) से मुराद हर बल्ग़मी और रत़ूबत के अमराज़ में (शिफ़ा है) क्यूं कि **कलौंजी** गर्म और ख़ुश्क होती है लिहाज़ा मरत़ूब (या'नी तरी वाली) और सर्दी की बीमारियों में मुफ़ीद

होगी । आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : यहां मुराद **अ़रब की आ़म बीमारियां** हैं (مرقات) या'नी **कलौंजी** अ़रब की आ़म बीमारियों में मुफ़ीद है । ख़याल रहे कि अह़ादीसे शरीफ़ा की दवाएं किसी ह़ाज़िक़ त़बीब (या'नी माहिर त़बीब) की राय से इस्ति'माल करनी चाहिएं (अहले अ़रब को तज्वीज़ कर्दा दवाएं) सिर्फ़ (अपनी) राय से इस्ति'माल न करें कि हमारे (त़ब्ई़) मिज़ाज अहले अ़रब के (त़ब्ई़) मिज़ाज से जुदागाना हैं । (मिरआत, जि. 6, स. 216, 217)

ग़ैरे त़बीब को इ़लाज में हाथ डालना ह़राम है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोग ह़क़ीक़ी मा'नों में बा क़ाइ़दा डॉक्टर या ह़कीम न होने के बा वुजूद क्लीनिक या मत़ब खोल कर मरीज़ों का इ़लाज शुरूअ़ कर देते हैं । ऐसा करना क़ानूनन जुर्म होने के साथ साथ शरअ़न भी मम्नूअ़ है । नीज़ एक फ़न का माहिर दूसरे फ़न के त़रीक़े इ़लाज के मुत़ाबिक़ मरीज़ों पर तजरिबात न करे । म-सलन एलोपेथी या होमियोपेथी या बाइयोकेमी वाले **डॉक्टर्ज़** बा क़ाइ़दा सीखे बिग़ैर एक दूसरे के शो'बे की दवाओं से और यूनानी त़िब (ह़िक्मत) के मुत़ाबिक़ इ़लाज न फ़रमाएं । इसी त़रह़ जो जो **ह़कीम साह़िबान** बा क़ाइ़दा डॉक्टर नहीं हैं वोह भी जड़ी बूटियों के साथ साथ डॉक्टरी दवाएं मरीज़ों पर न आज़माएं । **मेडीकल स्टोर** वाले भी अपनी अपनी समझ के मुत़ाबिक़ मरीज़ों को दवाएं न दिया करें । और यूं भी बिग़ैर डॉक्टर की चिठ्ठी के दवा बेचना क़ानूनन जुर्म है । बा'ज़

www.dawateislami.net

लोगों की आ़दत होती है कि जहां किसी मरीज़ से मुलाक़ात हुई झट कोई न कोई दवा या नुस्ख़ा इर्शाद फ़रमा देते हैं ! **याद रखिये !** जो माहिर त़बीब न हो उस को मरीज़ के इ़लाज में हाथ डालना कारे सवाब नहीं बल्कि ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अगर कोई ऐसा ग़ैरे माहिर त़बीब क्लीनिक या दवाख़ाना खोल कर मरीज़ों का इ़लाज करने बैठ गया हो तो फ़ौरन येह ना जाइज़ काम बन्द करना फ़र्ज़ है और तौबा के तक़ाज़े भी पूरे करने होंगे। हां ग़ैरे त़बीब ने मत़ब या दवाख़ाना खोल रखा है मगर ख़ुद इ़लाज नहीं करता बल्कि माहिर त़बीब बिठा रखे हैं तो कोई मुज़ा-यक़ा नहीं।

माहिर त़बीब की ता'रीफ़

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 24 सफ़ह़ा 206 पर एक सुवाल के जवाब में जो कुछ इर्शाद फ़रमाया उस का बा'ज़ ह़िस्सा आसान लफ़्ज़ों में पेश करने की कोशिश करता हूं : चुनान्चे फ़रमाते हैं : ना अह्ल या'नी **जो पूरा त़बीब न हो उस को इ़लाज में हाथ डालना ह़राम है और इस का तर्क फ़र्ज़।** जिस ने फ़न्ने त़िब के बा क़ाइ़दा उसूल और त़ौर त़रीक़े सीखे और काफ़ी मुद्दत किसी त़बीबे ह़ाज़िक़ या'नी माहिर त़बीब के मत़ब (दवाख़ाना) में रह कर काम किया और तजरिबा ह़ासिल हुवा। अक्सर मरीज़ उस के हाथ पर शिफ़ा पाते हों अगर्चे मरीज़ों का कम ह़िस्सा शिफ़ा पाने में नाकाम भी रहता हो। बे इ़ल्म ना तजिरबे कार या'नी नीम ह़कीम जो कि

www.dawateislami.net

तश्ख़ीस या'नी मरज़ की शनाख़्त और इ़लाज में जिस त़रह़ की फ़ाह़िश ग़-लति़यां या'नी बड़ी बड़ी ख़त़ाएं किया करते हैं इस त़रह़ की भूलें न करता हो वोह **लाइक़ त़बीब** है। ऐसे **माहिर त़बीब** से बा'ज़ अवक़ात तश्ख़ीस (या'नी मरज़ की शनाख़्त) या इ़लाज में ग़-लती़ वाक़ेअ़ हो जाए तो उस को ना अह्ल नहीं कहा जाएगा कि ग़-लती़ से अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मा'सूम हैं व बस। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم।

इ़ल्मे ति़ब की दिलचस्प ह़िकायत

ह़ज़रते अ़ली बिन हु़सैन बिन वाक़िद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد से एक नसरानी (क्रिस्चेन) डॉक्टर ने कहा : तुम्हारे दीन में "इ़ल्मे ति़ब" बिल्कुल नहीं लिहाज़ा तुम्हारा दीन नाक़िस है। उन्हों ने जवाब दिया : हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सारे का सारा इ़ल्मे ति़ब कु़रआने पाक की इस आधी आयत كُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** खाओ और पियो और ह़द से न बढ़ो। (پارہ ۸ سورۃالاعراف ۳۱) में बयान फ़रमा दिया है। वोह डॉक्टर बोला : तुम्हारे नबी ने भी क्या कहीं इ़ल्मे ति़ब का तज़्किरा किया है ? फ़रमाया : त़बीबों के त़बीब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चन्द लफ़्ज़ों में सारा ति़ब जम्अ़ फ़रमा दिया है, इर्शाद फ़रमाया है : "मे'दा सारी बीमारियों का घर और परहेज़ सारे इ़लाजों का सर है, बदन के हर ह़िस्से को उस का ह़क़ दो।" येह सुन कर नसरानी (क्रिस्चेन) डॉक्टर ह़ैरान हो कर कहने लगा : वाक़ेई तुम्हारे **कु़रआन** और तुम्हारे **रसूल** ने जालीनूस (जो कि दुन्या का बहुत बड़ा त़बीब गुज़रा है) के लिये ति़ब का कोई

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है । (ابویعلٰی)

मस्अला छोड़ा ही नहीं, सब कुछ बयान कर दिया !

(तफ़्सीरे नईमी, पारह : 8, स. 393, زادالمسیر لابن الجوزی ج۳ص۱۵۱)

बीमारियों से बचने का ला जवाब नुस्ख़ा

सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाएं पियें और अगर नफ़्स के मुत़ा-लबे पर जो हाथ में आया वोह खाया म-सलन पिज़्ज़े पराठे और कबाब समोसे वग़ैरा देर से हज़्म होने वाली ग़िज़ाएं मे'दे में न ठोंसते रहें और फ़्रीज का एक दम ठन्डा पानी और ठन्डी ठन्डी कोला बोतलें पेट में न उंडेलते रहें तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप का मे'दा दुरुस्त रहेगा और जब हाज़िमा सह़ीह़ होगा तो न क़ब्ज़ हो न पेट में गन्द जम्अ़ हो न बदन का बे जा **वज़्न** बढ़े न पेट की ख़राबियों के सबब बीमारियां जनम लें कि बक़ौले अत़िब्बा तक़रीबन 80 फ़ीसद बीमारियां पेट की ख़राबी के बाइ़स पैदा होती हैं । यक़ीनन मे'दा बीमारियों का घर और परहेज़ दवाओं का सर है ।

सो दवा की इक दवा परहेज़ है

त़वील अ़र्से जवान रहने का नुस्ख़ा

जो खाने पीने में एह़तियात़ नहीं अपनाते और ख़ूब डट कर खाते हैं वोह गोया पैसे ख़र्च कर के बीमारियां ख़रीद फ़रमाते और उ़मूमन सख़्त तकालीफ़ उठाते और आख़िरे कार पछताते हैं । कम खाने की ह़िक्मतें तो साइन्स दान भी तस्लीम करते हैं चुनान्चे एक ख़बर मुला-ह़ज़ा हो : ''जदीद तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ अमरीका में कम खाने वाले चूहे और कुत्ते तीन गुना ज़ियादा अ़र्सा ज़िन्दा रहे, ज़ियादा न खाने

www.dawateislami.net

से इन्सान जल्द बूढ़ा नहीं होता, बल्कि त़वील अ़र्से तक जवान नज़र आता है।" (रोज़नामा आग़ाज़, 5 दिसम्बर 2007)

ख़ून टेस्ट और इस की एह़तियातें

कोशिश कर के शूगर, लिपिड प्रोफ़ाइल वग़ैरा हर तीन माह के बा'द **टेस्ट** करवाइये बल्कि कभी कभी मुकम्मल चेकअप भी करवा लेना चाहिये। मर्द, मर्द से और औ़रत, औ़रत ही से **टेस्ट** के लिये ख़ून निकलवाए। जिस लेबॉरेट्री में येह सहूलत न हो वहां से हरगिज़ टेस्ट मत करवाइये। इसी त़रह़ हाथ रख कर नब्ज़ दिखाने, मरज़ की जगह पर चेक करवाने के लिये हाथ लगवाने, ब्लड प्रेशर चेक करवाने, ज़ख़्म पर पट्टी बंधवाने, इन्जेक्शन लगवाने वग़ैरा मुआ़-मलात के लिये **बिला इजाज़ते शर-ई मर्द व औ़रत का एक दूसरे के जिस्म के किसी ह़िस्से को छूना छुवाना जाइज़ नहीं।** अगर येह ग़-लत़ियां हो चुकी हैं तो सच्ची तौबा कर के आयिन्दा बचने का अ़ह्द कीजिये। मर्द डॉक्टर से मरीज़ा सिर्फ़ इसी सूरत में रुजूअ़ करे कि उस की बीमारी के लिये लेडी डॉक्टर न मिल सके। इन वस्वसों पर तवज्जोह मत दीजिये कि टेस्ट में "कुछ" निकला तो टेन्शन हो जाएगा। येह टेन्शन आसान है वरना अचानक अस्पताल में जा पड़े तो आप का टेन्शन भी "टेन्शन" में आ जाएगा! अस्पताल में दाख़िल हो कर डॉक्टर के ख़ौफ़ज़दा करने पर परहेज़ करने से बेहतर है कि आदमी घर में ही परहेज़ कर ले। कि सो दवा की इक दवा परहेज़ है। टेस्ट वग़ैरा के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 619 ता 628 का मुत़ा-लआ़ कर लीजिये।

www.dawateislami.net

अस्पताल में दाख़िल होना पड़े तो

अगर अस्पताल में दाख़िल होने की नौबत आए तो घबरा न जाइये। ज़ेहन को हाज़िर रख कर पलंग की तरकीब इस तरह करवाइये कि क़िब्ले की तरफ़ पाउं न हों। तहारत, वुज़ू व नमाज़ की सहूलतें देख लीजिये, येह भी देख लीजिये कि इस्तिन्जा ख़ाने का रुख़ तो ग़लत नहीं। (इस्तिन्जा करते वक़्त का'बा शरीफ़ को मुंह या पीठ करना ना जाइज़ है। येह एहतियात ज़रूरी है कि मुंह या पीठ 45 डिग्री के ज़ाविये के बाहर रहे) **बहारे शरीअ़त** (मत्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) का चौथा हिस्सा साथ ले लीजिये और उस में **मरीज़ की नमाज़** का तरीक़ा देख लीजिये। कोरी मिट्टी की प्लेट (इस पर कांच का जिर्म या'नी तह न हो) या पाक साफ़ ईंट ले लीजिये ताकि ज़रूरतन तयम्मुम किया जा सके। ''मरीज़'' ताकीद कर दे कि औ़रत (नर्स या लेडी डॉक्टर) और ''मरीज़ा'' कह दे कि मर्द (डॉक्टर या वॉर्ड बॉय) मेरा बदन न छूए।

सगे मदीना ने जब ऑपरेशन करवाया

21-12-2002 में मेरा मसाने का **ऑपरेशन** हुवा था। इस ज़िम्न में की जाने वाली बा'ज़ एहतियातें तरग़ीबन अ़र्ज़ हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ऑपरेशन से क़ब्ल व बा'द कोई नमाज़ क़ज़ा न हुई, डॉक्टर ने दो पहर या शाम का वक़्त देना चाहा तो मैं ने अ़र्ज़ की, कि **इशा** के बा'द ऑपरेशन किया जाए ताकि कोई **नमाज़** बेहोशी की वज्ह से न रह जाए चुनान्चे इशा के बा'द ऑपरेशन का तै हुवा, येह भी तै कर लिया कि कोई नर्स ऑपरेशन में हिस्सा नहीं लेगी। चूंकि बे पर्दगी होनी थी

www.dawateislami.net

लिहाज़ा येह भी दर-ख़्वास्त कर दी कि ऑपरेशन के लिये ज़रूरी अ़मले के इ़लावा कोई मर्द भी बिला ज़रूरत क़रीब न हो। अल्ट्रा साउन्ड और चेकअप के वक़्त भी येही एह़तियातें करने की कोशिश की, कि ग़ैर ज़रूरी फ़र्द के सामने सित्र खुलने न पाए। ज़ाइद मुआ़विनीन को बाहर भिजवाने की दर-ख़्वास्त कर दिया करता था।

हवा से इ़लाज

खुली फ़ज़ा में (बेहतर फ़ज्र का वक़्त) आहिस्ता से सांस लेना शुरूअ़ कीजिये और जितना गहरा ले सकते ले लीजिये फिर जितनी देर तक अन्दर रोक सकते हैं रोक रखिये। रोज़ाना कम अज़् कम 40 बार इस त़रह़ कीजिये। (कामकाज करते हुए या मरीज़ बिस्तर पर लैटे लैटे भी येह अ़मल कर सकते हैं) येह अ़मल मुख़्तलिफ़ अमराज़ बिल ख़ुसूस ज़ीकुन्नफ़स (या'नी दमा) और फेफड़ों की बीमारियों के लिये मुफ़ीद है, मरीज़ अगर सांस की येह वर्ज़िश करे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रू ब सिह़्ह़त हो और सिह़्ह़त मन्द करे तो अमराज़ से ह़िफ़ाज़त हो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ। **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْهُ (राक़िमुल हुरूफ़) को एक बूढ़े ह़कीम साह़िब ने बताया था कि वोह सांस लेने के बा'द एक या दो घन्टे तक अन्दर ही रोक लेते हैं और इस दौरान अवरादो वज़ाइफ़ वग़ैरा भी पढ़ लेते हैं मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सांस नहीं टूटता ! (येह सब मश्क़ करने से आ सकता है)

धूप की अहम्मिय्यत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की एक बहुत बड़ी ने'मत **सूरज** भी है और इस की **धूप** में बहुत सारे फ़वाइद रखे गए हैं। जिस्मे इन्सानी की सिह़्ह़त

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

के लिये धूप का अहम किरदार है। एक कहावत है : "**जिस घर में सूरज दाखि़ल नहीं होता उस में डॉक्टर दाखि़ल होता है।**" बे शुमार जरासीम ऐसे होते हैं जो धूप और ताज़ा हवा से मर जाते हैं। चुनान्चे जिन घरों की खिड़कियां महूज़ गर्दो गुबार के खौ़फ़ से हर वक़्त बन्द रखी जाती हैं, और उन में **धूप** और **ताज़ा हवा** नहीं पहुंच पाती, वहां त़रह़ त़रह़ के जरासीम परवरिश पाते और ख़ूब बीमारियां फैलाते हैं, लिहाज़ा रोज़ाना दिन का अक्सर वक़्त **खिड़कियां** खुली रखनी चाहिएं। हर कमरे में आमने सामने **दो खिड़कियां** इस त़रह़ बनवाई जाएं कि एक से ताज़ा हवा दाखि़ल हो और दूसरी से बाहर निकलती रहे। सिर्फ़ एक खिड़की खुली रखना काफ़ी नहीं होता, अगर आमने सामने दो खिड़कियां न हो तो फिर खिड़की और दरवाज़े की ऐसी तरकीब हो कि एक त़रफ़ से हवा दाखि़ल हो और दूसरी त़रफ़ से ख़ारिज।

एग्ज़ोस्ट फ़ेन

बैतुल ख़ला और बावर्ची ख़ाना बल्कि ज़रूरतन कमरे में भी "एग्ज़ोस्ट फ़ेन" लगवाया जाए मगर प्लास्टिक का सिर्फ़ चार इन्च वाला मुन्ना सा नहीं बल्कि मुनासिब साइज़ वाला लोहे का हो, म-सलन घरेलू बावर्ची ख़ाने में 12 इन्च का **लोहे का एग्ज़ोस्ट फ़ेन** मुनासिब है, प्लास्टिक वाला देर पा नहीं होता और हवा भी निस्बतन कम उठाता है। **एग्ज़ोस्ट फ़ेन** वाली पूरी दीवार में बल्कि चारों त़रफ़ कहीं एक मा'मूली सी दराड़ भी खुली न हो, अगर सिर्फ़ दरवाज़े से

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (ابن عدی)

हवा खिंचने की तरकीब रही तो कमरे की हवा भी साफ़ होती रहेगी, ऐसी सूरत में ज़रूरतन दरवाज़ा पूरा या थोड़ा सा खुला रखना होगा ताकि कमरे वग़ैरा की हवा बाहर निकले और दरवाज़े से ताज़ा हवा दाख़िल हो सके वरना एग्ज़ोस्ट फ़ेन ही सुस्त चलेगा ! कमरा बड़ा हो तो 18 इन्च और ह़स्बे ज़रूरत 24 इन्च का **एग्ज़ोस्ट फ़ेन** भी लगवाया जा सकता है । अगर बड़ा हॉल हो तो येह सूरत भी हो सकती है कि आमने सामने दो बड़े बड़े एग्ज़ोस्ट फ़ेन लगवाए जाएं एक हवा के रुख़ म-सलन पाकिस्तान में मग़रिब (WEST) या'नी क़िब्ले की जानिब वाली दीवार में इस त़रह़ भी लगाया जा सकता है कि बाहर की हवा अन्दर लाए और सामने वाला अन्दर की हवा बाहर ख़ारिज करे । इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) दो से ज़ाइद **एग्ज़ोस्ट फ़ेन** भी लगाए जा सकते हैं । जब येह फ़ेन चल रहे हों उस वक़्त अगर चारों त़रफ़ खिड़कियां वग़ैरा बन्द रखी जाएं तो इस सूरत में اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ह़बस (या'नी घुटन) भी नहीं होगा और बड़े कमरे या हॉल की फ़ज़ा साफ़ हवा की फ़राहमी के सबब ठन्ठी रहेगी । अगर **एग्ज़ोस्ट फ़ेन** की गोलाई के अत़राफ़ में जगह खुली रही या दराड़ और खिड़कियां बन्द न की गई तो **एग्ज़ोस्ट फ़ेन** चलने की सूरत में ख़ातिर ख़्वाह नतीजा ह़ासिल नहीं होगा ।

सूरज की किरनों का कमाल

इन्सानी जिस्म की खाल में **विटामिन D** (सोई हुई ह़ालत) या'नी Inactive form में होता है । उस का नाम 7 डी हाइड्रो कोलेस्ट्रोल

www.dawateislami.net

(7-DEHYDRO.CHOLESTROL) है। जब सूरज की **अल्ट्रा वॉइलेट** शुआ़एं **ULTRA VOILET RAYS** इन्सानी जिस्म पर पड़ती हैं तो खाल में **सोया हुवा विटामिन D** बेदार हो कर मु–तहर्रिक होता और **विटामिन डी3 (VITAMIN D3)** में तब्दील हो कर ख़ून में शामिल हो जाता है। वहां से येह जिगर में जाता है जहां इस को मज़ीद कारआमद बनाया जाता है फिर येह गुर्दों में पहुंच कर मुकम्मल त़ौर पर सरगर्मे अ़मल हो जाता है। अब येह **विटामिन डी3** आंतों से केल्सियम और फ़ोस्फ़ोरस (PHOSPHORUS) को ख़ून के अन्दर जज़्ब करने में मदद देता बल्कि इस अ़मल को तेज़ तर कर देता है। और इन की जो मिक्दार हमारी ख़ूराक में शामिल हो कर हमारी आंतों में पहुंच रही है उस को ज़ाएअ़ नहीं होने देता बल्कि तेज़ी से उसे ख़ून में जज़्ब कर लेता है। केल्सियम और फ़ोस्फ़ोरस हमारी हड्डियों की सह़ीह़ नश्वो नमा के लिये बेह़द ज़रूरी हैं।

शीशे से छन कर आने वाली धूप

सूरज की वोह शुआ़एं जो बन्द खिड़कियों के शीशे से पार हो कर इन्सानी जिस्म तक पहुंचती हैं उन में अल्ट्रा वॉइलेट शुआ़एं नहीं होतीं लिहाज़ा उन में येह ख़ासिय्यत भी नहीं होती कि सोए हुए विटामिन डी3 को बेदार कर के कारआमद बना सकें।

बच्चों की बीमारी

जिस त़रह़ उ़मूमन पौदों की नश्वो नमा के लिये **धूप** का अहम किरदार है इसी त़रह़ बच्चा हो या जवान, उधेड़ उ़म्र का हो या बूढ़ा हर

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

ब-दने इन्सानी के लिये ताज़ा हवा और **धूप** मुफ़ीद है। 6 माह से 2 साल की उ़म्र के दरमियान बच्चों की हड्डियां तेज़ी से बढ़ती हैं। अगर ह़ड्डियों की सह़ीह़ नश्वो नमा न हो तो उन में "रिकेट्स" नामी बीमारी पैदा होती है। हड्डियों की सह़ीह़ नश्वो नमा के लिये विटामिन डी3 बहुत ज़रूरी होता है अगर इस में कमी वाके़अ़ हो जाए तो हड्डियों में मुख़्तलिफ़ नक़ाइस (ख़ामियां) रह जाते हैं जो आगे चल कर परेशानी का बाइ़स बनते हैं।

घरों में धूप न आने का नुक़्सान

आज कल "रिकेट्स" नामी बीमारी बच्चों में आ़म होती जा रही है, इस की वुजूहात में से ख़ूराक में विटामिन डी3 (VITAMIN D3) की कमी भी शामिल है, मगर सब से बड़ी वज्ह तंग मह़ल्लों और छोटी छोटी गलियों के अन्दर बड़ी बड़ी इ़मारतों के बन्द घरों में रिहाइश है। क्यूं कि ऐसी जगहों पर सूरज की अल्ट्रा वॉइलेट शुआ़एं ULTRA VOILET RAYS सह़ीह़ त़ौर पर इन्सानी जिस्म तक नहीं पहुंच पातीं और नतीजतन बच्चा RICKETS (रिकेट्स) का शिकार हो सकता है, अगर ऐसा हुवा तो उस की हड्डियों में एक या एक से ज़ियादा मुख़्तलिफ़ नौइ़य्यत के नक़्स (ऐ़ब) पैदा हो जाएंगे।

बच्चे में रिकेट्स की अ़लामात

﴾1﴿ बार बार नुमूनिया हो जाना ﴾2﴿ आए दिन दस्त लग जाना ﴾3﴿ चिड़चिड़ा पन और ﴾4﴿ ख़ून की कमी।

www.dawateislami.net

रिकेट्स के 14 दर्दनाक नुक़्सानात

﴾1﴿ सामने से पेशानी की हड्डी बढ़ जाती है ﴾2﴿ सर की हड्डी अन्दर से खोखली हो जाती है कि अगर हाथ से दबाएं तो गेंद की त़रह़ दबती है ﴾3﴿ सर बड़ा और चौकोर सा हो जाता है ﴾4﴿ दांत देर से निकलते हैं ﴾5﴿ मसूड़े ख़राब हो जाते हैं ﴾6﴿ पस्लियों और सीने की हड्डी के जोड़ गोल गोल उभर कर नुमायां हो जाते हैं ﴾7﴿ कबूतर के सीने की त़रह़ सामने से सीना उभर जाता है ﴾8﴿ कुब निकल आता या'नी पीठ टेढ़ी हो जाती है ﴾9﴿ रीढ़ की हड्डी बल खाती हुई निकलती है जिस से पूरा बदन टेढ़ा हो जाता है ﴾10﴿ सीने की हड्डी बीच में से मुड़ कर सीने को सामने की त़रफ़ उभार देती है ﴾11﴿ कलाई की हड्डी चौड़ी हो जाती है ﴾12﴿ टख़्नों की हड्डी अन्दर की त़रफ़ मुड़ जाती है ﴾13﴿ टांग की बड़ी हड्डी गोलाई में मुड़ जाती है ﴾14﴿ घुटने अन्दर की त़रफ़ बढ़ने लगते हैं।

ऑपरेशन से बच्चे आने की एक वज्ह

कूल्हे की हड्डी उ़मूमन फैली हुई और चौड़ी होती है। मर्दों के मुक़ाबले में औ़रतों में क़ुदरती त़ौर पर येह चीज़ ज़ियादा होती है ताकि आगे चल कर बच्चे की विलादत में सहूलत हो। **विटामिन D3** की कमी की वज्ह से **कूल्हे** की हड्डी की सह़ीह़ नश्वो नमा नहीं होती और येह बजाए फैलने के सुकड़ जाती है जिस से पैदाइश का रास्ता तंग हो जाता है और ख़्वातीन को बच्चों की विलादत के वक़्त त़रह़ त़रह़ की

www.dawateislami.net

परेशानियों का सामना होता है और आख़िरे कार ऑपरेशन करना पड़ता है। आज कल बच्चे की विलादत के वक़्त जो ब कसरत ऑपरेशन हो रहे हैं उन की एक बड़ी वज्ह इन के कूल्हे की हड्डी का सुकड़ा हुवा होना है।

बच्चों को अन्डों की ज़र्दी खिलाइये

बच्चों को आयिन्दा की मुसीबतों से बचाने के लिये ज़रूरी है कि एक या दो माह की उ़म्र ही से मुनासिब **धूप** मुहय्या की जाए नीज़ 4 माह की उ़म्र से ग़िज़ा में **अन्डे की ज़र्दी** भी इस्ति'माल करवाई जाए।

धूप ह़ासिल करने का त़रीक़ा

तुलूए़ आफ़्ताब के फ़ौरन बा'द और गुरूबे आफ़्ताब के आख़िरी लम्ह़ात में कम अज़ कम बारह बारह मिनट के लिये (मौसिम के लिह़ाज़ से वक़्त में कमी बेशी कर के) बच्चे को ऐसी जगह लिटाइये या बिठाइये जहां मुकम्मल **धूप** आती हो, हर उ़म्र में **धूप** खाना ज़रूरी है लिहाज़ा इन्हीं अवक़ात में हर एक को इतनी देर तक मुकम्मल **धूप** में रहना चाहिये कि खाल गर्म हो जाए। बयान कर्दा अवक़ात बेहतरीन हैं, अगर न बन पड़े तो दिन भर में किसी भी वक़्त में कुछ न कुछ धूप ह़ासिल कर लेनी चाहिये। अगर **छाउं** में हों और **धूप** आनी शुरूअ़ हो जाए तो कुछ धूप और कुछ छाउं में मत बैठिये बल्कि वहां से हट जाइये या **मुकम्मल धूप** में आ जाइये या **मुकम्मल छाउं** में। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे मदीनए मुनव्वरह,

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है । (ترمذی)

सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़्क़त निशान है : तुम में अगर कोई साए में बैठा हो और उस पर से साया हट जाए उस का कुछ हि़स्सा धूप में और कुछ साए में हो जाए तो उस को चाहिये कि वहां से उठ खड़ा हो । (ابوداؤد ج٤ ص٣٣٨ حدیث٤٨٢١)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या तो साए में ही चला जावे या बिल्कुल धूप में हो जावे क्यूं कि साया ठन्डा है और धूप गर्म और ब-यक वक़्त एक जिस्म पर ठन्डक व गरमी लेना सिह़्ह़त के लिये मुज़िर (नुक़्सान देह) है इस लिये ऐसा न करे नीज़ येह शैत़ानी निशस्त है जिस से शैत़ान ख़ुश होता है लिहाज़ा इस तश्बीह से बचना ज़रूरी है । (मिरआत, जि. 6, स. 387)

मोटापे का इ़लाज

वज़्न कम करने के लिये **सब्ज़ियां** (आलू, वग़ैरा बादी अश्या के इ़लावा) बेहतरीन ने'मत हैं । मगर सिर्फ़ पानी में उबली हुई हों या एक फ़र्द के लिये सिर्फ़ चाय की एक **चम्मच** कोर्न ऑइल डाल कर पकाई गई हों । मिर्च मसा-लह़ा और **हल्दी** डालने में ह़रज नहीं । रोज़ाना एक ग्राम (या'नी चुटकी भर) **हल्दी** सभी के पेट में जानी चाहिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **केन्सर** से हि़फ़ाज़त होगी । हर बार के खाने में मज़्कूरा त़रीक़े पर बनी हुई सब्ज़ी की कम अज़ कम एक पूरी रिकाबी खा लीजिये । अगर रोटी और चावल वग़ैरा खाना ज़रूरी हो तो सिर्फ़ आधी चपाती, पानी में उबले हुए चावल सिर्फ़ आधा कप, छोटी सी

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

एक बोटी, आम खाना ज़रूरी हो तो दिन भर में सिर्फ़ आधा आम, चाय पीना चाहें तो ''स्कीम्ड मिल्क'' की फीकी ही पी लीजिये अगर बिग़ैर मिठास के न पी सकें तो डॉक्टर के मश्वरे से मिठास के लिये चाय के कप में **Sweetener** की एक गोली डाल लीजिये। (कहा जाता है कि बा'ज़ **Sweetener** मुज़िर्रे सिह़्ह़त होती हैं) अगर शूगर का मरज़ न हो तो मुम्किना सूरत में चीनी की जगह चाय में शह्द या गुड़ डाल लीजिये। (दिन रात में सिर्फ़ दो बार दरमियाना कप वोह भी आधा आधा पियें) सलाद, ककड़ी, खीरा वग़ैरा (बिग़ैर छिल्का उतारे) भी ब कसरत इस्ति'माल कीजिये। हर त़रह़ के खाने और सालन वग़ैरा में कॉर्न ऑइल **CORN OIL** वोह भी कम से कम मिक़्दार में इस्ति'माल कीजिये। खाने से क़ब्ल सालन के पियाले के ऊपर से चम्मच के ज़रीए़ घी या तेल इस त़रह़ से निकाल दीजिये कि एक क़त़रा भी नज़र न आए। अगर मसा-लह़ा गाढ़ा हो तो बरतन को किसी चीज़ की मदद से तिरछा खड़ा कर दीजिये और सालन ऊपरी ह़िस्से की जानिब कर लीजिये इस त़रह़ ज़ाइद तेल नीचे की त़रफ़ इकट्ठा हो जाएगा। उस को निकाल दीजिये। मगर बे इजाज़ते शर-ई येह तेल या घी फेंक देना मम्नूअ़ है। दोबारा पकाने में इस्ति'माल फ़रमा लीजिये। चावल, ऊंट, गाय और बकरे के गोश्त, घी, मख्खन, दूध की मलाई, अन्डे की ज़र्दी, केक पेस्ट्रियों, मीठे कोको चॉक्लेट और टॉफ़ियों निम्को वालों की तली हुई चीज़ों, **CREAM** लगी हुई या मीठी ग़िज़ाओं, मिठाइयों, आइसक्रीम, ठन्डे मश्रूबात, पकोड़े, कबाब, समोसे, पिज़्ज़े पराठे वग़ैरा हर वोह

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है । (عبدالرزاق)

चीज़ जिस में **मेदा, चिक्नाहट या मिठास** शामिल हो उन से बचिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वज़्न में कमी आएगी । और आप اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ खु़श अन्दाम **(SMART)** हो जाएंगे । डॉक्टरों के पास खाने का "चार्ट" मिलता है उन के ज़रीए भी वज़्न का तनासुब बर क़रार रखा जा सकता है । अपने डॉक्टर से मश्वरा कर के वज़्न कम करना ज़ियादा मुनासिब है । ह़त्तल इम्कान एक ही डॉक्टर से इ़लाज का सिल्सिला रखना चाहिये । इस से फ़ाएदा येह होगा कि वोह डॉक्टर आप की जिस्मानी कैफ़िय्यत से वाक़िफ़ हो जाएगा लिहाज़ा इ़लाज बेहतर त़रीक़े पर हो सकेगा । वरना डॉक्टर बदलते रहेंगे तो हर नया डॉक्टर "एक इकाई" से इ़लाज शुरूअ़ करेगा और आप हर एक का तख़्तए मश्क़ बनते रहेंगे ।

मोटापे का सब से बेहतरीन इ़लाज

सब से बेहतरीन इ़लाज **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तज्वीज़ फ़रमूदा है और वोह येह कि "भूक के तीन ह़िस्से कर लिये जाएं एक ह़िस्सा ग़िज़ा, एक ह़िस्सा पानी और एक ह़िस्सा हवा और सांस ।" **(مَجْمَعُ الزَّوائِد ج٥ص١٥٩حديث٨٣٤٦)** अगर खाने में येह त़रीक़ा अपना लिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ न कभी बदन मोटा होगा न कभी गेस, बादी, पेट में गड़बड़, क़ब्ज़ वग़ैरा का आ़रिज़ा । मगर हाए ! लज़्ज़त ख़ोर नफ़्स की ह़ीला बाज़ियां :

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना
कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

सफ़र के ज़रीए इलाज

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : **سَافِرُوْا تَصِحُّوْا** **सफ़र** करो, तन्दुरुस्त हो जाओगे। (مسند امام احمد ج۳ ص۳۲۲ حدیث ۸۹۰۴) **सफ़र** के ज़रीए आबो हवा तब्दील होती है और तजरिबात बढ़ते हैं। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सवाब की निय्यत से सफ़र करते रहा कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब भी मिलेगा और ज़िम्नन सिह़्ह़त में भी ब-र-कत ह़ासिल होगी अगर फ़क़त हुसूले सिह़्ह़त की निय्यत की तो सवाबे आख़िरत नहीं मिलेगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने वालों की बीमारियों से सिह़्ह़त याबियों की **म-दनी बहारें** सुनने को मिलती रहती हैं। मक़ूला है

سفر وسیلۂ ظفر (या'नी सफ़र काम्याबी का ज़रीआ़ है)

"अजमेर" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से नींद के 5 इलाज

﴾1﴿ नींद से जे़हन पुर सुकून, मे'दा दुरुस्त और खाना हज़्म होता है ﴾2﴿ रात का सोना सिह़्ह़त के लिये मुफ़ीद और रात भर जागना मुज़िर है। रात जागते रहने से बदन में खुश्की, बद हज़्मी, दिमाग़ की कमज़ोरी और अ़क़्ल में कमी आती और बा'ज़ अवक़ात आदमी पागल हो जाता है ﴾3﴿ बेशक बा'ज़ औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى का रात भर इ़बादत करना साबित है। लेकिन उन्हें रूह़ानी कुव्वत ह़ासिल हो जाती है, जैसा

www.dawateislami.net

कि सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से 40 दिन तक के फ़ाक़े भी मन्क़ूल हैं। (बह्जतुल असरार, स. 118) ह़ालां कि आ़म आदमी के लिये येह ना मुम्किन है ﴾4﴿ बू अ़ली सीना का क़ौल है : दिन को ज़ियादा सोना सोए हुए अमराज़ को जगाता, **तिल्ली** को सख़्त करता, और **रंग** को ख़राब करता है ﴾5﴿ रात इ़बादत करने वालों के लिये दो पहर के खाने के बा'द **क़ैलूला** या'नी कुछ देर आराम करना सुन्नत और मुफ़ीदे सिह़्ह़त है। इस से **दिमाग़** क़वी और **अ़क़्ल तेज़** होती है।

"आठ जन्नतें" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से जिस को नींद न आती हो उस के लिये 8 इ़लाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नींद आवर गोलियों से ह़त्तल इम्कान दूर रहिये और इस की आ़दत तो हरगिज़ मत बनाइये क्यूं कि शुरूअ़ में अगर्चे इन से नींद आ जाती है मगर फिर रफ़्ता रफ़्ता इन गोलियों की मिक़्दार बढ़ानी पड़ती है और बिल आख़िर नौबत यहां तक पहुंचती है कि चाहे कितनी ही गोलियां खा ली जाएं नींद नहीं आती ! और येह गोलियां मुज़िर्रे सिह़्ह़त भी होती हैं लिहाज़ा नीचे दिये हुए इ़लाज फ़रमाइये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करम फ़रमाएगा।

नींद न आती हो तो सोने से क़ब्ल اِنَّ اللهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲ الاحزاب ۵۶) पढ़ कर दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ नींद आ जाएगी।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

﴾1﴿ रात को सोने से पहले येह दुआ़ पढ़िये : اَللّٰھُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيَا **तरजमा : या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे नाम से मरता और जीता हूं। (بُخاری ج٤ ص١٩٢ حدیث ٦٣١٤) ﴾2﴿ **नींद** न आती हो तो पारह 30 **सू-रतुन्नबा** की आयत नम्बर 9 وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿۹﴾ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारी नींद को आराम किया) बार बार पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जल्दी नींद आ जाएगी ﴾3﴿ **नींद** न आती हो तो सोने से क़ब्ल अव्वल आख़िर दुरूदे पाक के साथ कम अज़ कम तीन बार येह पढ़िये : لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ۔ ''या'नी कोई मा'बूद नहीं मगर वोह (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) सब से सच्चा और ज़ाहिर''

﴾4﴿ **नींद** न आती हो तो सोते वक़्त येह दुआ़ पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ غَارَتِ النُّجُوْمُ وَهَدَاَتِ الْعُيُوْنُ وَاَنْتَ حَيٌّ قَيُّوْمٌ لَّا تَاْخُذُكَ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ يَاحَيُّ يَا قَيُّوْمُ اَهْدِئْ لَيْلِيْ وَاَنِمْ عَيْنِيْ۔ (عمل الیوم واللیلة لابن السنی ص٢٢٢ رقم٧٤٩)

(अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) **तरजमा : ''या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तारे छुप गए और आंखें सोने लगीं और तू हमेशा ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम रखने वाला है तुझ को न ऊंघ आए न नींद ऐ हमेशा ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम करने वाले ! मेरी रात को सुकून बख़्श और मेरी आंखों को नींद अ़त़ा फ़रमा।'' اِنْ شَآءَاللّٰه इस की ब-र-कत से **नींद** आ जाएगी ﴾5﴿ बे ख़्वाबी (या'नी नींद न आना) बहुत पुराना मरज़ है ज़मानए क़दीम में इस का इ़लाज आ़म त़ौर पर **प्याज़** से किया जाता था। जिस

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (کنز العمال)

को नींद न आती हो वोह या तो **कच्ची प्याज़** चबा कर खा ले या **उबली हुई प्याज़** गर्म दूध में डाल कर इस्ति'माल करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब **नींद** आएगी (मुंह में बदबू होने की सूरत में मस्जिद का दाख़िला **ह़राम** है लिहाज़ा नमाज़े फ़ज्र के लिये जाने से क़ब्ल ख़ूब अच्छी त़रह़ मुंह साफ़ करे यहां तक कि बदबू ख़त्म हो जाए)

नींद लाने वाला मज़ेदार शरबत

﴾6﴿ **आध** किलो पानी में छ माशा (या'नी तक़रीबन 6 ग्राम) सोंफ़ डाल कर पानी को चूल्हे पर जोश दीजिये जब दो छटांक (या'नी तक़रीबन 125 ग्राम) पानी रह जाए तो उस में **गाय का दूध** 250 ग्राम और एक तोला (या'नी तक़रीबन 12 ग्राम) **गाय का घी** और ह़स्बे ज़रूरत **चीनी** मिला कर इस्ति'माल कीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ नींद आने लगेगी ﴾7﴿ एक दरमियाना प्याज़ काट कर दही (मुनासिब मिक़्दार) में मिला कर सोने से पहले खा लें । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **नींद** आ जाएगी ।

नींद लाने का सांस के ज़रीए़ इलाज

﴾8﴿ **चटाई**, बिछोने या पलंग पर चित लैट जाइये, दोनों हाथ सीधे कर के पहलूओं के बराबर कर लीजिये, अब 6 सेकन्ड तक आहिस्ता आहिस्ता गहरा सांस लीजिये, तीन सेकन्ड तक हवा को अन्दर रोक लीजिये और फिर 6 सेकन्ड में आहिस्ता आहिस्ता मुंह से ख़ारिज कीजिये, इस के बा'द उल्टी करवट लैट कर चन्द बार येह अ़मल दोहराइये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **नींद** आ जाएगी ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

नींद ज़ियादा होती हो तो.....

﴾1﴿ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ۫ یُغْشِی الَّیْلَ النَّهَارَ یَطْلُبُهٗ حَثِیْثًاۙ وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ وَ النُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَ الْاَمْرُؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۵۴﴾ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْیَةًؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ﴿ۚ۵۵﴾ وَ لَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَ ادْعُوْهُ خَوْفًا وَّ طَمَعًاؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۶﴾

(پارہ 8 سورۃ الاعراف آیت 54 تا 56)

पढ़ कर येह दुआ मांगिये, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मीठे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वासिता मेरी ग़ैर ज़रूरी नींद दूर फ़रमा दे । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा ह़ासिल होगा । (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) ﴾2﴿ रोज़ाना सुब्ह़ नहार मुंह नीम गर्म पानी के गिलास में एक चम्मच **शह्‌द** घोल कर उस में **आधा लीमूं** निचोड़ कर पी लीजिये । येह लज़ीज़ शरबत पीने की मुस्तक़िल आ़दत बनाएं तब भी ह़रज नहीं बल्कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा । जब दौराने मुत़ा-लआ़ वग़ैरा नींद चढ़े तो हो सके तो वुज़ू कर लीजिये वरना मुंह धो लीजिये, कोई चीज़ चबाइये, कुछ देर चहल क़दमी कर लीजिए या कुछ देर खड़े हो जाइये इस त़रह़ की तराकीब से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वक़्ती तौ़र पर काम चल जाएगा ।

www.dawateislami.net

नींद से जाग कर पढ़िये और मददे इलाही हासिल कीजिये

يَا مُقْتَدِرُ 20 बार जो **नींद से बेदार** हो कर पढ़ लिया करेगा उस के हर काम में मददे इलाही عَزَّوَجَلَّ शामिल रहेगी।

क़िब्ला रुख़ बैठने से बीनाई तेज़ होती है

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : चार चीजे़ं आंखों की (बीनाई की) तक़्वियत का बाइ़स हैं : (1) क़िब्ला रुख़ बैठना (2) सोते वक़्त सुरमा लगाना (3) सब्ज़े की त़रफ़ नज़र करना और (4) लिबास को पाक व साफ़ रखना। **(اِحیاءُ العُلُوم ج۲ ص۲۷)** سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के इर्शाद के मुत़ाबिक़ सब्ज़े का नज़्ज़ारा भी निगाहों की तेज़ी का बाइ़स है। सब्ज़ रंग की तो क्या ही बात है ! एक रिवायत के मुत़ाबिक़ सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद वाले आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम रंगों में **सब्ज़ रंग** सब से प्यारा था। **(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرَانِی ج ٦ ص ٦٩ حدیث ٨٠٢٧)**

आंखों का लज़ीज़ चूरन

सोंफ़, मिस्री और **ईरानी बादाम** तीनों हम-वज़्न ले कर अच्छी त़रह़ बारीक पीस कर यकजान (MIX) कर के बड़े मुंह की बोतल में मह़फ़ूज़ कर लीजिये और बिला नाग़ा रोज़ाना नहार मुंह एक चाय की चम्मच बिग़ैर पानी के खा लीजिये (एक चम्मच से कुछ ज़ियादा खाने में भी ह़रज नहीं) त़वील अ़र्सा इस्ति'माल करने से اِنْ شَآءَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ आंखों की बीनाई को फ़ाएदा होगा। **तजरिबा :** एक म-दनी मुन्नी की आंखों में पानी आता था, बिल आख़िर आंखों के

www.dawateislami.net

डॉक्टर से वक़्त ले लिया था, मैं ने येही **लज़ीज़ चूरन** पेश किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ एकआध बार खाने ही से उस की बीमारी जाती रही और डॉक्टर के पास जाने की नौबत ही न आई। जिन को तक्लीफ़ न हो वोह भी मुस्तक़िल इस्ति'माल कर सकते हैं।

आंखों का मरीज़ और मछली

आंखों के मरीज़ों, ज़रूरी मिक़्दार से ज़ाइद कोलेस्ट्रोल वालों के लिये भी **मछली** खाना मुफ़ीद है। मगर तेल में तली हुई दीगर ग़िज़ाओं की तरह मछली भी मुज़िर्रे सिह्हत है। कोएले पर सेंकी हुई मछली बहुत मुफ़ीद है कहते हैं कि मे'दे में ऐसी मछली की मौजू-दगी में अगर ब्लड कोलेस्ट्रोल का मरीज़ ख़ून टेस्ट करवाएगा तो ख़ून में कोलेस्ट्रोल की मिक़्दार में कमी ज़ाहिर होगी।

ऐनक के नम्बर कम करने के लिये

गाजर के मौसिम में रोज़ाना एक **गाजर** खा लिया करें اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **हाफ़िज़ा क़वी** और **बीनाई तेज़** होगी हत्ता कि चश्मा है तो اِنْ شَآءَاللہ नम्बर कम होना शुरूअ़ हो जाएंगे। (गाजर धो लीजिये और छीले बिग़ैर खा लीजिये कि छिलने से ऊपरी तह के ऐन नीचे मौजूद विटामिन C ज़ाएअ़ हो सकता है, वोह सब्ज़ियां और फल जिन के छिल्के खाए जा सकते हों वोह छिल्कों समेत ही खाने ज़ियादा मुफ़ीद हैं। म-सलन कद्दू शरीफ़, आलू, टमाटर, खीरा, तूरी, टिन्डे, पेठा, शकर क़न्दी, सेब, चीकू, आड़ू, वग़ैरा के छिल्के और अनार व मोसम्बी की अन्दरूनी झल्लियां वग़ैरा खा लीजिये)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

"या इमाम हुसैन" के दस हुरूफ़ की निस्बत से ज़हरीले जानवरों के काटे के 10 इलाज

सांप बिच्छू वग़ैरा से पनाह का आसान वज़ीफ़ा

﴾1﴿ **बारगाहे** रिसालत में एक शख़्स ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कल शाम मुझे एक बिच्छू ने डंक मार दिया। फ़रमाया : काश ! अगर तुम ने शाम को اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ۔ (या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कामिल कलिमात के साथ मख़्लूक़ के शर से पनाह लेता हूं) कह लिया होता तो तुम्हें कोई चीज़ तक्लीफ़ न पहुंचाती। (مُسلِم ص۱۴۵۳ حدیث ۲۷۰۹) "श-ज-रए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या" सफ़हा 11 पर है : रोज़ाना **सुब्ह व शाम** तीन तीन बार मज़्कूरा दुआ़ पढ़ लेने से सांप बिच्छू वग़ैरा मूज़िय्यात (या'नी ईज़ा देने वाले जानवरों) से पनाह मिलती है।

सुब्ह व शाम की ता'रीफ़ : आधी रात के बा'द से ले कर सूरज की पहली किरन चमक्ने तक **सुब्ह** है और इब्तिदाए वक़्ते ज़ोह्र से गुरूबे आफ़्ताब तक **शाम** कहलाती है। (अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 12)

﴾2﴿ सांप, बिच्छू, शह्द की मख्खी या कोई सा भी **ज़हरीला जानवर** काट ले, पानी में **नमक** मिला कर डंक की जगह पर लगाइये बल्कि मुम्किन हो तो वोह जगह उस नमक वाले पानी में डबो दीजिये और मुअ़व्व-ज़तैन या'नी **सू-रतुल फ़लक़** और **सू-रतुन्नास** पढ़ कर दम कीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़ह्र का असर ज़ाइल हो जाएगा।

﴾3﴿ अगर **शह्द की मख्खी** वग़ैरा काट ले तो फ़ौरन उस जगह अपना

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

या किसी मुसल्मान का थूक लगा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ राह़त मिलेगी।

﴾4﴿ अगर आप ऐसी जगह रहते हैं जहां शह्द की मख्खियां या बिच्छू होते हैं तो प्याज़ का रस 3 तोला (तक़्रीबन 35 ग्राम), अनबुझा चूना 4 ग्राम, नौशादर एक तोला (तक़्रीबन 12 ग्राम) बाहम मिला कर निथार लीजिये। और मह़फ़ूज़ कर लीजिये और ब वक़्ते ज़रूरत **बिच्छू** और **शह्द की मख्खी** के काटने के मक़ाम पर लगाइये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

﴾5﴿ अगर किसी को **सांप** डस ले तो **प्याज़** का रस और **सरसों** का तेल हम-वज़्न मिला कर मरज़ की शिद्दत के मुत़ाबिक़ आध आध घन्टा या एक एक घन्टा बा'द 4 तोला (तक़्रीबन 50 ग्राम) की मिक़्दार में पिलाइये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आराम आ जाएगा।

﴾6﴿ अगर **शह्द की मख्खी** काट ले तो उस पर **प्याज़** का टुकड़ा बांध लीजिये। गर्म पानी या आग से जल जाने की सूरत में भी येही त़रीक़ा इख़्तियार कीजिये।

﴾7﴿ अगर **बिच्छू** या **शह्द की मख्खी** वग़ैरा काट ले तो उस पर **प्याज़** काट कर या मसल कर लगाइये और नमक लगा कर प्याज़ खिलाइये।

﴾8﴿ जब किसी को **सांप** डस जाए तो उस को **प्याज़** कसरत से खिलाइये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़ह्र का असर दूर हो जाएगा।

﴾9﴿ कन-खजूरा काट ले तो **प्याज़** और **लह्सन** को पीस कर ज़ख़्म पर लेप कर दीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **ज़ह्र** का असर ख़त्म हो जाएगा।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

﴾10﴿ अगर **प्याज़** को पानी में घोट कर घर में छिड़कें तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **सांप बिच्छू** वग़ैरा भाग जाएंगे।

"या रब ! शिफ़ा इनायत फ़रमा" के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से जिल्दी अमराज़ के 16 इलाज

﴾1﴿ फोड़े और ज़ख़्म का रूहानी इलाज

जब किसी शख़्स का कुछ दुखता या उसे फोड़ा फुन्सी और ज़ख़्म होता तो नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी उंगली के साथ यूं फ़रमाते : **بِاسْمِ اللّٰہِ تُرْبَۃُ اَرْضِنَا بِرِیْقَۃِ بَعْضِنَا لِیُشْفٰی بِہٖ سَقِیْمُنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا** **तरजमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, हमारी ज़मीन की मिट्टी, हमारे बा'ज़ के लुआ़ब (थूक) से हमारा बीमार, **रब** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से शिफ़ा पाएगा। (مُسلِم ص ۱۲۰۶ حدیث ۲۱۹۴)

ख़ाके मदीना और ख़ाके वत़न

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الحَنَّان दी हुई ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी अव्वलन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मरज़ की जगह उंगली रखते फिर उंगली पर कुछ लुआ़ब शरीफ़ लगा कर मिट्टी लगाते, फिर उस का लेप मरज़ की जगह कर देते और येह फ़रमाते जाते कि बि फ़ज़्लिही हमारा लुआ़ब और **मदीने की मिट्टी** शिफ़ा है। इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए, एक येह कि बीमारी पर टोटके और मन्तर जाइज़ हैं बशर्ते कि उस के अल्फ़ाज़ कुफ़्रिय्या न हों और कोई काम ह़राम न हो। आगे चल कर

www.dawateislami.net

मज़ीद तह़रीर करते हैं (ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने) "**मिरक़ात**" में फ़रमाया : **वत़न की ख़ाक** भी शिफ़ा होती है अगर कोई मुसाफ़िर अपने वत़न की मिट्टी परदेस ले जाए जिस में से थोड़ी पीने के घड़े में डाल दिया करे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ वहां का पानी नुक़्सान न देगा । (मिरआत, जि. 2, स. 407, 408)

﴾2﴿ ख़ारिश की बेहतरीन ह़िकायत

किसी शख़्स के ख़ारिश हो गई थी और किसी तदबीर से फ़ाएदा न होता था । उस ने ह़िजाज़े मुक़द्दस जाने वाले एक क़ाफ़िले के साथ सफ़र इख़्तियार किया मगर आ़जिज़ आ कर इस्नाए राह कूफ़ा शरीफ़ में रुक गया और अमीरुल मुअमिनीन मौलाए काएनात, ह़ज़रते मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार पर मुक़ीम हो गया, रात जब सोया तो उस की सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और उस ने ख़्वाब में मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का जल्वए ज़ैबा देखा । तड़प कर अपनी बीमारी की फ़रियाद की । आप كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने येह आयते करीमा पढ़ी :

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○ فَکَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰہُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَکَ اللّٰہُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِیْنَ ؕ (پ۱۸ المؤمنون ۱٤) सुब्ह़ जब उठा तो ख़ारिश की बीमारी से मुकम्मल शिफ़ा मिल चुकी थी । मज़्कूरा आयते करीमा ख़ारिश का मरीज़ ख़ुद पढ़ कर अपने ऊपर दम कर ले या कोई दूसरा

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

पढ़ कर मरीज़ पर दम कर दे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा देने वाला है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

﴾3﴿ उम्मे अ़त्त़ार की ख़ारिश कैसे ठीक हुई !

अम्मीजान رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا को बरसों तक हथेलियों में परेशान कुन "**मीठी खुजली**" ने दिक़ (परेशान) किया, किसी इ़लाज से न जाती थी। किसी के बताने के मुत़ाबिक़ उन्हों ने **मेंहदी** पानी के ज़रीए ज़रा पतली कर के उस में मुनासिब मिक़्दार में **लीमूं** निचोड़ कर थोड़ा सा **नीला थोथा**[1] शामिल कर के ख़ारिश पर लगाना शुरूअ़ किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन को फ़ाएदा हो गया। येह इ़लाज ता हुसूले शिफ़ा जारी रखना चाहिये। अगर फिर ख़ारिश हो जाए तो दोबारा भी येही इ़लाज कर लेना चाहिये।

﴾4﴿ मेंहदी से इ़लाज के बारे में आ'ला ह़ज़रत का इर्शाद

मेंहदी ख़ारिश के लिये मुफ़ीद है मगर हाथ पाउं में **ख़ारिश** होने की सूरत में मर्द उसी वक़्त लगाए जब कि दूसरा इ़लाज मुम्किन न हो, बदन की ऐसी जगह जहां औ़रतें नहीं लगाया करतीं वहां मर्द **मेंहदी** लगा सकता है म-सलन रान, कन्धा, वग़ैरा। इस ज़िम्न में **हुक्मे शर-ई़** बयान करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या

1 : येह ज़ह्र है, पन्सारी के यहां मिल सकता है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

जिल्द 24 सफ़ह़ा 542 पर फ़रमाते हैं : मर्द को **हथेली** या (पाउं के) **तल्वे** बल्कि सिर्फ़ **नाख़ुनों** ही में **मेंहदी** लगानी ह़राम है कि औ़रतों की तशब्बोह (या'नी मुशा-बहत, मुवा-फ़क़त) है। मज़ीद सफ़ह़ा 543 पर मौजूद तह़रीर का ख़ुलासा है : इस से मर्द इ़लाज इसी सूरत में कर सकता है जब कि **मेंहदी** के क़ाइम मक़ाम कोई दूसरी चीज़ न हो नीज़ मेहंदी किसी ऐसी दूसरी चीज़ के साथ मख़्लूत़ (MIX) न हो सके जो उस के रंग को ज़ाइल (या'नी ख़त्म) कर दे, ज़ैबो ज़ीनत और आराइश मक़्सूद न हो।

﴾5﴿ ख़ारिश का ख़ुश ज़ाएक़ा ह़ल्वा

सोंफ़ 250 ग्राम, धन्या 250 ग्राम दोनों को बारीक पीस कर इस में अस्ली घी 750 ग्राम और एक किलो चीनी डाल कर मिला कर (मिक्स कर के) मह़फ़ूज़ कर लीजिये। रोज़ाना सुब्ह़ व शाम दो दो तोला (तक़रीबन 25, 25 ग्राम) खा लीजिये। **ख़ून की ख़राबी, ख़ारिश, जिरयान और ज़ो'फ़े बसर** (या'नी नज़र की कमज़ोरी) के लिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद पाएंगे।

﴾6﴿ रोज़ाना सुब्ह़ नहार मुंह या रोज़ा हो तो ब वक़्ते इफ़्त़ार (फ़्रिज के ठन्डे नहीं बल्कि) सादा पानी में दो तोले ख़ालिस **शह्द** मिला कर पीने से **जिल्द की बीमारियां** म-सलन ख़ारिश, जलन और फोड़ों वग़ैरा से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ छुटकारा ह़ासिल होगा।

﴾7﴿ ख़ारिश वाली जगह को गर्म या सादा पानी से धोना भी मुफ़ीद रहता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

﴾8﴿ ग़ुस्ल के ज़रीए ख़ारिश का इलाज

रोज़ाना नहाना यूं भी सिह़्ह़त के लिये मुफ़ीद है और अगर आप को **ख़ारिश** है तो रोज़ाना कोई सा साबुन अच्छी त़रह़ लगा कर नहाइये और अगर **सूखी ख़ारिश** हो तो ख़ूब मल कर बल्कि बाज़ार से नहाने के इस्ति'माल का लम्बे हेन्डल वाला प्लास्टिक का ब्रश ख़रीद कर उस से अच्छी त़रह़ रगड़ कर ग़ुस्ल कीजिये। जो कपड़े उतारे हैं वोह धूप में डाल दीजिये ताकि जरासीम मर जाएं। दूसरे दिन नहा कर पहले दिन जो उतारे थे वोह पहन लीजिये और आज जो उतारे हैं वोह धूप में डाल दीजिये। येह अ़मल रोज़ाना जारी रखिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ख़ारिश** में काफ़ी राह़त मह़सूस करेंगे। अगर **धूप** में डालना मुम्किन न हो तो किसी भी मुनासिब जगह पर रस्सी वग़ैरा पर डाल दीजिये मगर **धूप** ज़ियादा मुफ़ीद है। (मेडीकल स्टोर से ख़ारिश में इस्ति'माल के ख़ुसूसी साबुन भी मिल सकते हैं)

﴾9﴿ **प्याज़ का रस, ख़ालिस शह्द और नमक** मिला कर खरल कर लीजिये और ख़ूब अच्छी त़रह़ मिला लीजिये रोज़ाना बरस (कोढ़) के दाग़ों पर लेप कीजिये। कुछ ही अ़र्से में اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दाग़ दूर हो जाएंगे।

﴾10﴿ जो फोड़ा फूटता न हो उस पर प्याज़ को कूट कर गर्म कर के बांध दीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ चन्द बार के बांधने से फूट जाएगा।

﴾11﴿ सर्दी में हाथ पाउं फटने का इलाज

सर्दी की शिद्दत से बा'ज़ अवक़ात हाथ पाउं और होंट फट

www.dawateislami.net

जाते हैं और उन में चीरे से पड़ जाते हैं जो सख़्त तक्लीफ़ देते हैं। इस का आसान **इ़लाज** येह है कि रात को आग के सामने बैठ कर मु-तअस्सिरा मक़ाम पर **प्याज़ का टुकड़ा** मलिये।

﴾12﴿ बदन के दाग़ धब्बों का इ़लाज

बा'ज़ अवक़ात जिस्म पर सियाह धब्बे निकल आते हैं जो देखने वाले को बहुत बदनुमा मा'लूम होते हैं। इस का इ़लाज येह है कि रोज़ाना पानी में नमक पिघला कर उस में प्याज़ के एक टुकड़े को डुबो कर धब्बों पर आहिस्ता आहिस्ता रगड़िये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ थोड़े ही दिनों में शिफ़ा नसीब हो जाएगी।

﴾13﴿ **ट्रावो कोर्ट क्रीम** (TRAVO CORT CREAM) को सूखी ख़ारिश पर लगा कर उंगली वग़ैरा से रगड़िये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद तरीन पाएंगे। येह मरहम हर त़रह़ की ख़ारिश फोड़े फुन्सियों और ज़ख़्म वग़ैरा के लिये कारआमद है।

﴾14﴿ ख़ुश्क ख़ारिश

ख़ुश्क ख़ारिश अगर लम्बा अ़र्सा रहे तो "एग्ज़ीमा" में तब्दील हो जाती है और आगे चल कर इस से पानी भी बहने लगता है और ज़ख़्म भी हो जाते हैं। इस को Infected eczema कहते हैं। इस के इ़लाज के लिये येह नुस्ख़ा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद पाएंगे।

(1) सोलीसायसीलिक एसीड 2 फ़ीसद Salicylic acid 2%

(2) लिक्वीड पाइसिज़ कार्ब 2 फ़ीसद Liquid pices carb 2%

(3) क्लोबिटासोल 30 फ़ीसद Clobbetasyl 30%

www.dawateislami.net

(4) रेसोर्सीनाल 1 फ़ीसद Resorcinal 1%

(5) व्हाइट पेट्रोलियम जेली 100 फ़ीसद White petroleum jelly100%

त़रीक़ए इस्ति'माल : जिस्म के मु-तअस्सिरा ह़िस्सों पर सुब्ह़ व शाम येह मरहम लगाइये। ज़ियादा तक्लीफ़ न हो तो ह़स्बे ज़रूरत कभी कभी लगा लेना भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद होगा। न मा'लूम हो तो किसी भी मेडीकल स्टोर से पूछ लीजिये।

﴾15﴿ तर ख़ारिश

स्केबीज़ scabies : येह ख़ारिश की वोह क़िस्म है कि जिस में इब्तिदाअन ख़ुश्क ख़ारिश होती है बा'द में फुन्सियां और ज़ख़्म हो जाते हैं, इस ख़ारिश में ज़ियादा तर हाथ, पाउं की उंग्लियों के दरमियान की जगह, बग़ल और पेशाब की जगह मु-तअस्सिर होती और तक़रीबन पूरे जिस्म में रात को ख़ारिश होती है। इस का नुस्ख़ा येह है :

(1) सल्फ़्यूरीक पावडर दस ग्राम Sulphuric powder 10 gram

(2) व्हाइट पेट्रोलियम जेली सो ग्राम White petroleum jelly 100 gram

इस का नाम ''10 फ़ीसद सल्फ़्यूरिक ऑइन्टमेन्ट'' है। Sulphuric ointment

रात को सोने से पहले अच्छी त़रह़ से ग़ुस्ल कर लीजिये और बा'द में पूरे जिस्म पर गरदन से ले कर पाउं के तल्वों तक मरहम लगा लीजिये। और सुब्ह़ गर्म पानी से नहा लीजिये। जो कपड़े या बिस्तर तब्दील करेंगे तो उन को अच्छी त़रह़ धो कर ख़ूब धूप में रखिये। येह

www.dawateislami.net

अ़मल मुसलसल तीन दिन तक कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ारिश का मुकम्मल ख़ातिमा हो जाएगा। (इस मरहम का ज़ियादा इस्ति'माल नुक़्सान देह भी हो सकता है। बेहतर येह है कि इस्ति'माल से पहले किसी जिल्दी अमराज़ के डॉक्टर से मश्वरा कर लीजिये। Dispenser या chemist से येह मरहम बनवाया जा सकता है)

﴾16﴿ गरमी दानों का इलाज

गरमी दाने सताते हों तो **नीम** की 11 कूंपलें (नई निकली हुई छोटी छोटी पत्तियां) सात दिन और तक्लीफ़ ज़ियादा हो तो 40 दिन तक नहार मुंह (या'नी नाश्ते से क़ब्ल ख़ाली पेट) पानी के साथ खा लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **गरमी दाने और फोड़े फुन्सियां ख़त्म**। अगर गर्मियां शुरूअ़ होने से क़ब्ल ही 30 दिन तक येह कोर्स कर लें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गरमी दाने वग़ैरा निकलेंगे ही नहीं।

"हरम" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सर में ख़ुश्की के 3 इलाज

﴾1﴿ **सर** में ज़ैत या'नी **ज़ैतून शरीफ़** का तेल डाल कर रोज़ाना कम अज़ कम सात मिनट बालों की जड़ों में अच्छी त़रह मालिश कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सात दिन में **सर की ख़ुश्की**, पपड़ियां उतरना, सर में खुजली आना वग़ैरा सब ख़त्म हो जाएगा ﴾2﴿ रोज़ाना थोड़े से **नीम के पत्ते** पीस कर पानी में डाल कर सर धोइये ﴾3﴿ अंगूर, तरबूज़, नाशपाती, सेब और मोसम्बी वग़ैरा ज़ियादा इस्ति'माल फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

दर्द का रूह़ानी इ़लाज

बदन में दर्द या किसी चीज़ की शिकायत हो तो तक्लीफ़ की जगह पर सीधा हाथ रख कर **बिस्मिल्लाह** तीन बार और फिर सात मरतबा येह दुआ़ पढ़िये : اَعُوْذُ بِاللّٰہِ وَقُدْرَتِہٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَ اُحَاذِرُ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस की कुदरत के साथ उस चीज़ के शर से पनाह चाहता हूं जिसे मैं पाता हूं और जिस से आयिन्दा ख़ौफ़ करता हूं) (مسلم ص ۱۲۰۹ حدیث ۲۲۰۲، حصن حصین ص ۱۰۹) पढ़ कर दम करना ज़रूरी नहीं ।

"अल मदीना" के सात हुरूफ़ की निस्बत से दिल की बीमारियों के 7 इ़लाज

दिल की घबराहट के लिये

﴾1﴿ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ (پ ۹ الانفال ۱۱) اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ (پ ۱۳ الرعد ۲۸) ऊपर दी हुई दो आयतें मरीज़ खुद पढ़ कर दम किया हुवा पानी पिये या कोई पढ़ कर पिला दे اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **दिल की घबराहट** ख़त्म हो जाएगी ﴾2﴿ हर नमाज़ के बा'द दिल पर हाथ रख कर कम अज़ कम सात बार (ज़ियादा बार की कोई क़ैद नहीं) يَا اَللّٰہُ قَوِّنِیْ وَ قَلْبِیْ (**तरजमा :** या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे और मेरे दिल को कुव्वत अ़त़ा फ़रमा) पढ़िये । जब कभी दिल में तक्लीफ़ उठे उस वक़्त भी येह अ़मल कीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इफ़ाक़ा (कमी) हो जाएगा । ग़ैरे मरीज़ भी हर नमाज़ के बा'द येह अ़मल करे اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ दिल के अमराज़ से मह़फ़ूज़ रहेगा ﴾3﴿ रोज़ाना किसी भी वक़्त एक बार **यासीन शरीफ़** पढ़ कर एक सेब पर दम कर लीजिये

फिर नहार मुंह (या'नी नाश्ते से क़ब्ल ख़ाली पेट) खा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी भी दिल की बीमारी नहीं होगी ﴾4﴿ रोज़ाना **लाल अंगूरों** का रस (JUICE) आधा गिलास पियें ﴾5﴿ रोज़ाना दो या तीन गिलास **गाजर** का रस पियें ﴾6﴿ दिल के मरीज़ के लिये **मोसम्बी** और **कीनू** बहुत मुफ़ीद हैं ।

﴾7﴿ दिल की बन्द शिरयानें खुलने की ह़िकायत

एक साहिब का बयान है : दिल की तक्लीफ़ की वज्ह से मैं ने ''एन्जियोग्राफ़ी'' करवाई तो दिल की तीन शिरयानें या'नी ख़ून की छोटी छोटी रगें (VEINS) बन्द थीं, डॉक्टरों ने एक माह बा'द ऑपरेशन की तारीख़ दी । इस दौरान मैं ने एक ह़कीम साहि़ब से रुजूअ़ किया, उन्हों ने मुझे एक **नुस्ख़ा** तज्वीज़ किया । मैं ने एक माह तक उस को इस्ति'माल किया । मुक़र्ररा तारीख़ पर कार्डियो लोजी सेन्टर में **सवा दो लाख रूपै** जम्अ़ करवा दिये । डॉक्टरों ने मुख़्तलिफ़ **टेस्ट** करवाए । दूसरे रोज़ ''बायपास सर्जरी'' होने वाली थी, तीन डॉक्टरों का बॉर्ड मेरी एक माह पहले की और इस बार की नई रिपोर्टों को ले कर बैठा । उन्हों ने मुझ से पूछा : एन्जियोग्राफ़ी (ANGIOGRAPHY) करवाने के बा'द आप ने कौन सी दवा इस्ति'माल की थी ? मैं ने ह़कीम साहि़ब के दिये हुए नुस्ख़े की तफ़्सील बयान कर दी । डॉक्टरों ने बताया : **आप की तीन बन्द शिरयानों में से दो खुल चुकी हैं येही नुस्ख़ा जारी रखिये हो सकता है बक़िय्या (VEINS) भी खुल जाए ।** फ़िलह़ाल आप को ''बायपास सर्जरी'' की ज़रूरत नहीं । चुनान्चे मैं ने अपनी

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

जम्अ़ करवाई हुई रक़म वापस ली और ख़ुशी ख़ुशी लौट आया।

दिल की शिरयानें खोलने वाला नुस्ख़ा येह है :

﴾1﴿ लीमूं का रस एक पियाली ﴾2﴿ अदरक का रस एक पियाली ﴾3﴿ लह्सन का रस एक पियाली ﴾4﴿ सेब का सिर्का एक पियाली। इन चारों को यकजान **(MIX)** कर के हल्की आग पर आधे घन्टे तक उबालिये, जब एक पियाली के बराबर रस कम हो जाए या'नी तीन पियाली जितना रस रह जाए तो चूल्हे पर से उतार लीजिये। जब ठन्डा हो जाए तो तीन पियाली शह्द उस में ह़ल कर लीजिये दवा तय्यार है, इस को बोतल में भर लीजिये रोज़ाना सुब्ह़ नहार मुंह तीन चम्मच येह दवा पी लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दिल की जानिब जाने वाली तमाम बन्द शिरयानें खुल जाएंगी।

दर्दे सर का इ़लाज

क़ैसरे रूम ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़त़ लिखा कि मुझे **दाइमी दर्दे सर** की शिकायत है अगर आप के पास इस की दवा हो तो भेज दीजिये! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस को एक टोपी भेज दी। क़ैसरे रूम उस टोपी को पहनता तो उस का **दर्दे सर** काफ़ूर हो जाता और जब सर से उतारता तो दर्दे सर फिर लौट आता। उसे बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। आख़िरे कार उस ने उस टोपी को उधेड़ा तो उस में से एक काग़ज़ बरआमद हुवा जिस पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिखा था। **(تفسیر کبیر ج۱ ص۱۵۵)**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि जिस को दर्दे सर हो वोह एक काग़ज़ पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिख कर या लिखवा कर उस का **ता'वीज़** सर पर बांध ले। **लिखने का त़रीक़ा** येह है कि अनमिट सियाही म-सलन बॉल पोइन्ट से लिखिये और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के ہ और तीनों "م" के दाएरे खुले रखिये, ता'वीज़ लिखने का उसूल येह है कि आयत या इ़बारत लिखने में हर दाएरे वाले ह़र्फ़ का दाएरा खुला हो या'नी इस त़रह़ म-सलन ق،ف،م،و، ض، ص،ھ، ہ ، ظ،ط वग़ैरा। ए'राब लगाना ज़रूरी नहीं, लिख कर मोमजामा (या'नी मोम में तर किये हुए कपड़े का टुकड़ा लपेट लीजिये) या प्लास्टिक कोटिंग कर लीजिये फिर कपड़े, रेग्ज़ीन या चमड़े में ता'वीज़ बना लीजिये, और सर पर बांध लीजिये जिन को **इ़मामा शरीफ़** का ताज सजाने की सआ़दत ह़ासिल है वोह चाहें तो इ़मामा शरीफ़ की टोपी में सी लें। इसी त़रह़ इस्लामी बहनें दुपट्टे या बुरक़अ़ के उस ह़िस्से में सी लें जो सर पर रहता है। अगर ए'तिक़ाद कामिल होगा तो اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **दर्दे सर** जाता रहेगा। सोने या चांदी या किसी भी धात की डिबिया में ता'वीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नहीं। इसी त़रह़ किसी भी धात की ज़न्जीर ख़्वाह उस में ता'वीज़ हो या न हो मर्द को पहनना **ना जाइज़** व गुनाह है। इसी त़रह़ सोने, चांदी और स्टील वग़ैरा किसी भी धात की तख़्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुवा हो या न लिखा हुवा हो अगर्चे **अल्लाह** का मुबारक नाम या **कलिमए त़य्यिबा** वग़ैरा खुदाई किया हुवा हो उस का पहनना मर्द के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा–फ़ह़ा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

लिये ना जाइज़ है। **औ़रत** सोने चांदी की डिबिया में ता'वीज़ पहन सकती है। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 68, 69)

"या अल्लाह" के छ ह़ुरूफ़ की निस्बत से आधे सर के दर्द के 6 इ़लाज

﴾1﴿ **अगर** किसी को आधे सर का दर्द हो तो एक बार **सू–रतुल इख़्लास** (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये, ह़स्बे ज़रूरत तीन बार, सात बार या **ग्यारह** बार इसी त़रह़ दम कीजिये। ग्यारह का अ़दद पूरा होने से क़ब्ल ही اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **आधे सर** का दर्द ठीक हो जाएगा।

﴾2﴿ **जब** दर्द हो रहा हो उस वक़्त सूंठ (या'नी सूखी हुई अदरक जो कि पन्सारी या'नी देसी दवा वालों से मिल सकती है) को थोड़े से पानी में घिस कर सूंठ का घिसा हुवा ह़िस्सा पेशानी पर मलने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **आधे सर** का दर्द जाता रहेगा।

﴾3﴿ **ख़ुश्क** धन्या के थोड़े दाने और थोड़ी सी किशमिश (या'नी ख़ुश्क छोटे अंगूर जिस को पंजाबी में "सोगी" कहते हैं) मटके के ठन्डे या सादा पानी में चन्द घन्टे भिगो कर पीने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

﴾4﴿ **गर्म** दूध में देसी घी मिला कर पीने से भी फ़ाएदा होता है।

﴾5﴿ **नारियल** का पानी पीने से आधा सीसी (या'नी आधे सर का दर्द) और पूरे सर के दर्द में कमी आती है।

﴾6﴿ **नीम** गर्म पानी के बड़े बरतन में नमक डाल कर दोनों पाउं 12

www.dawateislami.net

मिनट के लिये उस में डाले रहिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा। (ज़रूरतन वक़्त में कमी बेशी कर लीजिये)

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 70, 71)

"या रब्बे करीम" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से दर्दे सर के 8 इलाज

﴾1﴿ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ﴿ۙ۱۹﴾ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** इस से न उन्हें दर्दे सर हो न होश में फ़र्क़ आए। (پ ۲۷ الواقِعہ ۱۹) येह आयते करीमा तीन बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर **दर्दे सर वाले** पर दम कर दीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा। (तरजमा पढ़ने की ज़रूरत नहीं)

﴾2﴿ **सू-रतुन्नास** सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर सर पर दम कीजिये, और पूछिये, अगर अभी दर्द बाक़ी हो तो दूसरी बार भी इसी त़रह़ दम कीजिये। अगर अब भी दर्द हो तो तीसरी बार भी इसी त़रह़ दम कीजिये। **पूरे सर** का दर्द हो या **आधे सर** का कैसा ही शदीद दर्द हो तीन बार में اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जाता रहेगा।

﴾3﴿ **पूरे** सर का दर्द हो या शक़ीक़ा (या'नी आधे सर का दर्द) बा'द नमाज़े अ़स्र **सू-रतुत्तकासुर** एक बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्द में इफ़ाक़ा होगा।

﴾4﴿ **ज़बान** पर एक चुटकी **नमक** रख कर 12 मिनट के बा'द एक

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

गिलास पानी पी लीजिये सर में कैसा ही दर्द हो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इफ़ाक़ा हो जाएगा। (हाई ब्लड प्रेशर के मरीज़ के लिये नमक का इस्ति'माल नुक़्सान देह होता है)

﴾5﴿ **एक** कप पानी में एक चम्मच **हल्दी** डाल कर जोश दे कर पीने या भाप लेने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **सर का दर्द** दूर हो जाएगा। (सालन वग़ैरा में हल्दी ज़रूर इस्ति'माल कीजिये, रोज़ाना एक ग्राम (या'नी चुटकी भर) हल्दी खाने वाला اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **केन्सर** से मह़फ़ूज़ रहेगा)

﴾6﴿ रोज़ाना रात को सात दाने **बादाम** और 21 दाने किशमिश या'नी सूखे हुए अंगूर (छोटे बड़े कोई से भी हों) पानी में भिगो दीजिये और येह दोनों चीज़ें सुब्ह़ दूध के साथ खा लीजिये। बिल ख़ुसूस बादाम अच्छी त़रह़ चबा कर या पीस कर खाइये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दर्दे सर** दूर हो जाएगा। **क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा** के लिये भी येह नुस्ख़ा मुफ़ीद है।

﴾7﴿ **देसी** घी में तली हुई, गर्मा गर्म ताज़ा जलेबियां त़ुलूए़ आफ़्ताब से क़ब्ल खाने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दर्दे सर** में आराम आ जाएगा।

﴾8﴿ **कभी** इत्तिफ़ाक़िय्या **दर्दे सर** हो जाए तो खाना खाने के बा'द डिस्प्रीन (DISPIRIN) की दो टिक्या पानी में घोल कर पी लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ठीक हो जाएगा। (हर त़रह़ के दर्द की टिक्या खाना खाने के बा'द ही इस्ति'माल की जाए वरना नुक़्सान का अन्देशा है)

म-दनी मश्वरा : अगर दवाओं से दर्दे सर ठीक न होता हो तो आंखें

टेस्ट करवा लीजिये अगर नज़र कमज़ोर हो तो ऐनक पहनने से اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ **दर्दे सर** ठीक हो जाएगा। फिर भी ठीक न हो तो दिमाग़ के खुसूसी डॉक्टर से रुजूअ़ करना ज़रूरी है। इस में कोताही बा'ज़ अवक़ात सख़्त नुक़्सान देह साबित होती है।

"मदीना" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से दाइमी नज़्ले के 5 इलाज

﴾1﴿ 30 दिन तक रोज़ाना नाश्ते के दो घन्टे बा'द मछली का तेल (CODLIVER OIL) आधी **चम्मच** पियें। सर्दियों में रात को भी मज़ीद **आधी चम्मच** इस्ति'माल कर सकते हैं اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ **दाइमी नज़्ले** से आराम हो जाएगा ﴾2﴿ बच्चों को अगर बार बार नज़्ला होता हो तो **मछली का तेल** तीन तीन क़त़्रे दिन में एक या दो बार 30 दिन तक पिलाइये। बच्चों के लिये ख़ुश्बूदार **मछली का तेल** मेडीकल स्टोर से त़लब कीजिये ﴾3﴿ रोज़ाना रात मुठ्ठी भर भुने हुए चने छिल्के समेत खाना फिर एक घन्टे तक पानी या चाय वग़ैरा कोई सा मशरूब न पीना दाइमी नज़्ले के लिये मुफ़ीद है ﴾4﴿ नाक से गहरे गहरे सांस लीजिये। नमाज़े फ़ज्र के बा'द ज़ियादा बेहतर है ﴾5﴿ हर वुज़ू में (रोज़ा न हो तो) नाक में तीनों बार पानी क़दरे (या'नी थोड़ा सा) ज़ोर से चढ़ाइये।

नज़्ले का देसी इलाज

एक तोला (या'नी तक़रीबन 12 ग्राम) **सौंफ़** और सात अ़दद **लौंग** दो किलो पानी में डाल कर चूल्हे पर ख़ूब जोश दीजिये। जब 250 ग्राम पानी रह जाए तो एक तोला (या'नी तक़रीबन 12 ग्राम)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

मिस्री डाल कर चाय की त़रह़ नोश फ़रमाइये। दो तीन बार के इस्ति'माल से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **नज़्ला व ज़ुकाम** दूर हो जाएगा।

नज़्ला खोलने के लिये

दहक्ते हुए कोएलों पर **पिसी हुई हल्दी** डाल कर धूनी लेने से नाक खुल जाती और नज़्ले की रुत़ूबत बहने लगती है।

बवासीर और इस के बा'ज़ अस्बाब

बासूर या'नी मक़्अ़द में होने वाला मस्सा, **बासूर** की जम्अ़ **बवासीर** है। **बवासीर** के तीन अहम अस्बाब हैं : (1) पुरानी क़ब्ज़ (2) तब्ख़ीरे मे'दा (या'नी वोह बुख़ारात (भाप) जो खाना खाने के बा'द मे'दे से दिमाग़ को चढ़ते और बदन को भी थोड़ा सा गर्मा देते हैं) (3) अक्सर कुर्सी पर बैठना, इन चीज़ों से मक़्अ़द (दुबुर) के आस पास की अन्दरूनी रगों में ख़ून का ठहराव हो जाता है जिस के सबब वोह रगें फूल कर मस्सों (PILES) की सूरत में बाहर निकल आती हैं या अन्दर की त़रफ़ रहती हैं। इस को **बवासीर** कहते हैं। बा'ज़ लोगों की **बवासीर** ब-यक वक़्त अन्दरूनी और बैरूनी दोनों त़रफ़ होती है।

ज़ैतून से बवासीर का इ़लाज

ह़दीस शरीफ़ में है कि : **ज़ैतून का तेल** खाओ इसे लगाओ कि येह मुबारक दरख़्त से है और इस में **सत्तर** बीमारियों की शिफ़ा है जिन में जुज़ाम भी है इस में **बवासीर** को भी शिफ़ा है। (मिरआत, जि. 6, स. 226, مرقاة المفاتيح ج٨ ص ٣٠٨ تحت الحديث ٤٥٣٥) **ज़ैतून का तेल** बिग़ैर पकाए खाना फ़ाएदा मन्द होता है और येह कॉलेस्ट्रोल को भी कम

www.dawateislami.net

करता है। लिहाज़ा कच्चा इस्ति'माल किया जाए। कच्चा खाने में किसी क़िस्म की बद मज़गी नहीं होती, खाना खाते वक़्त अपनी रिकाबी में चावल, सालन वग़ैरा निकाल कर चम्मच से ज़ैतून शरीफ़ का तेल डाल कर शौक़ से तनावुल फ़रमाइये।

अन्जीर से ख़ुश्क बवासीर का इलाज

अगर तक्लीफ़ ज़ियादा हो तो **शह्द** के शरबत (या'नी शह्द मिले पानी) के साथ रोज़ाना नहार मुंह पांच अ़दद **ख़ुश्क अन्जीर** खा लीजिये। मुसल्सल इस त़रीक़े पर अ़मल करने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ चार माह से ले कर दस माह के अ़र्से में **बवासीर** के मस्से खुश्क हो जाएंगे (येह त़रीक़े इलाज ख़ूनी **बवासीर** के लिये भी मुफ़ीद है) अगर **बवासीर** में तक्लीफ़ कम और बद हज़्मी ज़ियादा हो तो हर बार खाना खाने से आधा घन्टा क़ब्ल **ख़ुश्क अन्जीर** तीन अ़दद खा लीजिये। अगर्चे **बवासीर** न भी हो यूं ही पेट में बोझ होता हो तब भी हर बार खाना खाने के बा'द तीन अ़दद **अन्जीर** तनावुल फ़रमाइये।

ख़ूनी बवासीर के 4 इलाज

﴾1﴿ 6 माह तक रोज़ाना तीन **अन्जीर** और इतने ही वज़्न का अदरक का मुरब्बा नहार मुंह खाइये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **बवासीर** में फ़ाएदा हो जाएगा **﴾2﴿** 5 **अन्जीर** के टुकड़े कर के मुनासिब मिक़्दार में दूध के अन्दर पका लीजिये और ठन्डा कर के सोते वक़्त खा लीजिये। येह ख़ूनी **बवासीर** का मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा) इलाज है اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ून बन्द हो जाएगा। ता हुसूले शिफ़ा जारी रखिये अगर मुस्तक़िल

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

इस्ति'माल करें तब भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा ही फ़ाएदा है। **अन्जीर** की ता'दाद कम ज़ियादा भी कर सकते हैं। ﴾3﴿ **अनार** का छिल्का सुखा कर बारीक पीस कर बोतल में मह़फ़ूज़ कर लीजिये और सुब्ह़ व शाम छ माशा (या'नी तक़रीबन 6 ग्राम) ताज़ा पानी से निगल लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **ख़ूनी बवासीर** दुरुस्त हो जाएगी ﴾4﴿ नीम के दरख़्त से जो पकी हुई "निबोलियां" गिर पड़ती हैं वोह रोज़ाना 12 अ़दद छिल्का उतार कर खा लिया करें, मुसल्सल खाते रहने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **बवासीर** में फ़ाएदा होगा और ख़ून भी साफ़ होगा।

गुर्दे की पथरी

हम-वज़्न **मूली** और **आलू** भून कर ह़स्बे ज़रूरत सोंफ़, नमक और काली मिर्च शामिल कर के इस्ति'माल करना गुर्दे के दर्द और **पथरी** के लिये मुफ़ीद है।

गुर्दे के दर्द के दो इलाज

﴾1﴿ ख़रबूज़े के थोड़े से बीज छील कर रोज़ाना खा लीजिये और ऊपर पानी पी लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **गुर्दे के दर्द** में राह़त मिलेगी ﴾2﴿ मूली और उस के पत्ते, ककड़ी, खीरा, तरबूज़, ख़रबूज़ा कसरत से खाना भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **गुर्दे के दर्द** से नजात का बाइ़स होगा।

दमा और सांस फूलना

5 अ़दद काली मिर्च, दस अ़दद मग़्ज़ बादाम, दस ग्राम मुनक़्क़ा सोते वक़्त खाइये, उस के बा'द पानी न पियें। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ राह़त मह़सूस करेंगे।

www.dawateislami.net

मे'दे में ज़ख़्म

दो हफ़्ते तक दिन में तीन मरतबा **बन्द गोभी** का रस एक एक गिलास पी लीजिये, बन्द गोभी का सालन भी खाइये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सब बेहतर हो जाएगा।

जिगर या मे'दे के तमाम अमराज़ के लिये

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○ لَوْ کَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّکَلِمٰتِ رَبِّیْ[1] (پ۱۶ الکھف ۱۰۹) बा'दे नमाज़े फ़ज्र तीन अ़दद सादी चीनी की प्लेटों पर या मोमी काग़ज़ों पर ज़र्दे के रंग से ऊपर दी हुई आयते मुबा-रका लीखिये (ए'राब लगाने की ह़ाजत नहीं अलबत्ता दाएरे वाले ह़ुरूफ़ के दाएरे खुले रखिये) और सुब्ह़, दो पहर और रात एक एक प्लेट पानी से धो कर पी लीजिये। (मुद्दते इ़लाज 40 दिन) इस के इ़लावा इसी रंग से लिख कर रेग्ज़ीन या चमड़े में ता'वीज़ बना लीजिये। इस्लामी बहनें अपने गले में और इस्लामी भाई अपने सीधे बाज़ू पर बांध लें। येह इ़लाज जिगर और मे'दे के इ़लावा गुर्दों के दर्द के लिये भी मुफ़ीद है। जब भी ता'वीज़ पहनना हो उस को प्लास्टिक कोटिंग या मोमजामा कर लेना चाहिये।

हाई ब्लड प्रेशर

﴾1﴿ सात अ़दद काली मिर्च और सात अ़दद नीम की कूंपलें (या'नी नीम के दरख़्त की इब्तिदाई छोटी छोटी पत्तियां) रोज़ाना खाइये या नीम की पत्तियों का एक चम्मच रस रोज़ाना सुब्ह़ पी लीजिये। **हाई ब्लड**

1 : तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही हो।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

प्रेशर के साथ साथ **शूगर, जिल्द, जिगर और जिन्सी बीमारियों** से भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल होगा ﴾2﴿ हर खाने के साथ लह्सन का एक (या तीन) जवा (या'नी लह्सन की पोथी की रेक, फांक) छील कर कच्ची निगल लिया करें। टुकड़े कर के या कूट कर भी इस्ति'माल कर सकते हैं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बहुत सारी बीमारियों से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल होगा। (कच्चा लह्सन, कच्ची मूली, और कच्ची प्याज़ वग़ैरा कोई भी ऐसी चीज़ खाई जिस से मुंह में बदबू हो जाती है तो जब तक मुंह में बदबू हो मस्जिद का दाख़िला ह़राम है। इस मस्अले की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ मुख़्तसर रिसाला ''मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये'' हदिय्यतन ह़ासिल कर के पढ़ लीजिये)

चावल ब्लड प्रेशर में मुफ़ीद हैं

फ़िशारुद्दम या'नी हाई ब्लड प्रेशर, दिल के मरज़ और मे'दे की ख़राबी के दो हज़ार मरीज़ों पर डॉक्टरों ने दस साल तक तजरिबात करने के बा'द येह राय क़ाइम की है कि इन अमराज़ में ''चावल की गिज़ा'' बेहतरीन इलाज है। बिल ख़ुसूस ब्लड प्रेशर के मरज़ के आग़ाज़ में चावल ज़ियादा मुफ़ीद हैं।

''परहेज़ में आधा इलाज है'' के अठ्ठारह हुरूफ़ की निस्बत से खांसी के 18 इलाज

﴾1﴿ हर त़रह़ की **खांसी** के मरीज़ दिन में कई बार ख़ालिस शह्द चाटें **खांसी** बल्कि **गले** के हर त़रह़ के दर्द में भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा ﴾2﴿ अगर काली **खांसी** हो तो मुनासिब मिक़्दार में पिसी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

हुई सूंठ (या'नी ख़ुश्क अदरक) ख़ालिस **शह्द** पर छिड़क दीजिये और सात दिन रोज़ाना सुब्ह़ व शाम थोड़ा थोड़ा चाट लीजिये। **काली खांसी** बल्कि हर त़रह़ की **खांसी** के लिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद पाएंगे ﴾3﴿ हर घन्टे के बा'द **एक लोंग** मुंह में रख कर चबाते और चूसते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **खांसी** का ज़ोर टूटेगा ﴾4﴿ पोदीना का रस पीने से भी **खांसी** ठीक हो जाएगी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ﴾5﴿ चन्द खजूरें खा कर एक कप नीम गर्म पानी पी लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बल्ग़म पतला हो कर ख़ारिज हो जाएगा। **खांसी** और दमा दोनों के लिये येह इ़लाज फ़ाएदा मन्द है (जिन को खजूरें मुवाफ़िक़ नहीं आतीं वोह येह इ़लाज न करें और आंखों के मरीज़ के लिये भी खजूरें खाना नुक़्सान देह हो सकता है) ﴾6﴿ तक़रीबन 25 ग्राम **अदरक** के रस में **शह्द** मिला कर दिन में तीन बार चाटने से भी बल्ग़म ख़ारिज होगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ﴾7﴿ केले के दरख़्त का पत्ता सुखाने के बा'द तवे पर जला कर उस की राख **शह्द** में मिला कर **खांसी** के मरीज़ को थोड़ी थोड़ी चटाते रहिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आराम आ जाएगा ﴾8﴿ **शह्द** में प्याज़ का रस मिला कर पीने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर त़रह़ की **खांसी** में फ़ाएदा होगा ﴾9﴿ थोड़ी सी **पिसी हुई काली मिर्च** दूध में जोश दे कर पी लीजिये ﴾10﴿ दो चम्मच अदरक का रस और एक चम्मच शह्द मिला कर पी लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **खांसी** से नजात मिलेगी ﴾11﴿ प्याज़ उबाल कर पीने से बल्ग़म निकलता और **खांसी** में आराम आता है ﴾12﴿ किशमिश (या'नी ख़ुश्क अंगूर) और शकर या अनार का छिल्का चूसना **खांसी** के लिये

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

मुफ़ीद है ﴾13﴿ गर्म दूध में थोड़ी सी हल्दी और देसी घी मिला कर पीने से **खांसी** में फ़ाएदा होता है ﴾14﴿ पानी में थोड़ा सा नमक घोल कर पीने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **खांसी** को आराम मिलेगा ﴾15﴿ रात को **नमक की डली** मुंह में रख लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **खांसी** में कमी हो जाएगी ﴾16﴿ दवाओं की दुकान पर मिलने वाला जूशांदा भी इस्ति'माल किया जा सकता है ﴾17﴿ पान के दो चार पत्ते तवे वग़ैरा पर गर्म कर के उन पर हलका गर्म तेल लगा कर गले पर बांधना **पुरानी खांसी** के लिये मुफ़ीद है । (पान के पत्ते गर्म करते वक़्त येह ख़याल रखिये कि जल न जाएं और गले पर बांधते वक़्त गर्म हों मगर न इतने कि तक्लीफ़ पहुंचे) ﴾18﴿ **रोज़ाना** किशमिश (ख़ुश्क छोटे अंगूर जिस को पंजाबी में "सोगी" कहते हैं) के 40 दाने (अगर मुवाफ़िक़ आते हों तो दुगने करने में भी ह़रज नहीं) और तीन अ़दद बादाम ले कर इस पर 11 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दम कर के खा लीजिये इस के ऊपर दो घन्टे तक पानी न पियें । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **खांसी** में बहुत फ़ाएदा होगा । **बल्ग़म** निकलेगा और मज़ीद नहीं बनेगा । (ज़रूरतन किशमिश की ता'दाद बढ़ा दीजिये) बहुत छोटे बच्चों के लिये ह़स्बे ज़रूरत मिक़्दार कुछ कम कर दीजिये । ता ह़ुसूले शिफ़ा इ़लाज जारी रखिये ।

"या अल्लाह" के छ ह़ुरूफ़ की निस्बत से हिचकी के 6 इ़लाज

(वोह हवा जो कि गले से रुक रुक कर आवाज़ के साथ निकलती है उस को हिचकी बोलते हैं)

﴾1﴿ **दो लौंग** मुंह में डाल कर उन का रस चूसिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **हिचकी** फ़ौरन बन्द हो जाएगी ﴾2﴿ थोड़ी सी **हल्दी** या थोड़ा सा **ज़ीरा** पानी के साथ फांक लीजिये ﴾3﴿ मूली या गन्ने का रस पी लीजिये ﴾4﴿ गाजर को पीस कर सूंघ लीजिये ﴾5﴿ आम के दरख़्त के पत्ते जला कर **धूनी** ले लीजिये ﴾6﴿ अगर बच्चे को बार बार **हिचकी** आ रही हो और ख़ुद ब ख़ुद बन्द न हो तो थोड़ा सा शह्द चटा दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **हिचकी बन्द** हो जाएगी।

"करम" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से हाथ पैर सुन हो जाने के 3 इ़लाज

﴾1﴿ रोज़ाना नहार मुंह (नाश्ते से क़ब्ल या रोज़ा हो तो इफ़्त़ार के वक़्त ख़ाली पेट) चुटकी भर **कलौंजी** पानी के साथ इस्ति'माल कीजिये ﴾2﴿ ग्यारह अ़दद **ख़ुश्क ख़ूबानी** रात को पानी में भिगो लीजिये और सुब्ह़ खा लीजिये (कम अज़ कम 40 दिन तक) ﴾3﴿ पानी के गिलास में **एक चम्मच शह्द** मिला कर उस में **आधा लीमूं** निचोड़ कर रोज़ाना नहार मुंह (नाश्ते से क़ब्ल या रोज़ा हो तो इफ़्त़ार के वक़्त ख़ाली पेट) पी लीजिये (मुद्दते इ़लाज कम अज़ कम 40 दिन)

"ख़ुदा" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से आवाज़ बैठ जाए तो तीन इ़लाज

﴾1﴿ **नमक** का छोटा सा टुकड़ा आग में ख़ूब गर्म कर के किसी चीज़ से पकड़ कर फ़ौरन ठन्डे पानी के गिलास में बुझा दीजिये, फिर वोह **नमक की डली** पानी से निकाल कर उस पानी को पी जाइये। दो तीन

www.dawateislami.net

बार येह इ़लाज करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा ﴾2﴿ एक चम्मच **जव शरीफ़** के दाने चबाइये और चूसिये फिर आख़िर में निगल जाइये ﴾3﴿ ख़शख़ाश के छिल्के और अज्वाइन हम वज़्न लीजिये और पानी में उबाल कर बरदाश्त के क़ाबिल हो जाने के बा'द इस पानी से ग़रारे कीजिये।

गला बैठ गया हो तो....

प्याज़ का रस एक तोला (तक़रीबन 12 ग्राम), **शह्द** दो तोला (तक़रीबन 25 ग्राम) मिला कर गर्म कर के पीने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **बैठी हुई आवाज़** साफ़ हो जाएगी, मगर आतिशक (एक जिन्सी बीमारी) और जुज़ाम (या'नी कोढ़) के मरीज़ को इस से फ़ाएदा नहीं होगा।

"ग़ौसे आ'ज़म" के सात हुरूफ़ की निस्बत से मुंह के छाले के 7 इ़लाज

﴾1﴿ अत़िब्बा (या'नी त़बीबों) का कहना है : "बा'ज़ अवक़ात मे'दे की गरमी और तेज़ाबिय्यत से मुंह में छाले पड़ जाते हैं और इस मरज़ से ख़ास क़िस्म के जरासीम मुंह में फैल जाते हैं। इस के लिये मुंह में **ताज़ा मिस्वाक** मलिये और इस के लुआ़ब को कुछ देर तक मुंह के अन्दर फिराते रहिये। इस त़रह़ कई मरीज़ ठीक हो चुके हैं।" ﴾2﴿ मुठ्ठी भर बर्गे ह़िना (या'नी मेंहदी के पत्ते) पानी में उबाल कर (दिन में दो बार) इस के **ग़रारे** कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा ﴾3﴿ पाव भर गर्म पानी के अन्दर एक **लीमूं** निचोड़ कर उस से कुल्लियां कीजिये। (दिन में तीन बार) ﴾4﴿ अन्डे की सफ़ेदी फेंट कर रूई की फुरेरी से छालों पर

www.dawateislami.net

लगाइये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आराम आ जाएगा ﴾5﴿ दिन में दो तीन बार ग्लीसिरीन लगाना भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद होगा ﴾6﴿ मेडीकल स्टोर से DAKTARIN (MICONAZOLE) नामी ट्यूब ले कर दिन में चन्द बार थोड़ी थोड़ी दवा डाल कर मुंह में चन्द मिनट फिराइये फिर थूक दीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **छाले** ठीक हो जाएंगे। छोटे बच्चों को भी इस्ति'माल करवा सकते हैं। अगर येह दवा मा'मूली सी पेट में चली जाए तब भी ह़रज नहीं (रोजे़ की ह़ालत में दिन के वक़्त मुंह में दवा नहीं लगा सकते) ﴾7﴿ मुंह के छालों और तक़्रीबन 80 फ़ीसद बीमारियों का इ़लाज कम खाने में है अगर यक़ीन न आता हो तो पेट भर कर खाना छोड़ दीजिये और रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ के करिश्मे देखिये। **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल के बाब "पेट का कुफ़्ले मदीना" में दी हुई हिदायात के मुत़ाबिक़ अ़मल कीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप इस की ब-र-कतें देख कर ह़ैरान रह जाएंगे। यक़ीन मानिये! ज़ियादा खाने से जान "बनती" नहीं "बिगड़ती" है।

केन्सर

﴾1﴿ पिसा हुवा **काला ज़ीरा** तीन तीन ग्राम दिन में तीन मरतबा पानी से इस्ति'माल कीजिये ﴾2﴿ रोज़ाना चुटकी भर पिसी हुई ख़ालिस हल्दी खाने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कभी **केन्सर** नहीं होगा।

मुंह के केन्सर का एक सबब

सिगरेट नोशी, तम्बाकू, ख़ुश्बूदार मीठी छालिया, इलायची

के ख़ुश्बूदार बीज, मेनपूड़ी, पान गुटका, सिटी और पान के मुख़्तलिफ़ ख़ुश्बूदार मसा-लहे का कसरत से इस्ति'माल सांस की नाली में ज़ख़्म, फेफड़ों में पीप पड़ जाना और त़रह़ त़रह़ की ख़ौफ़नाक बीमारियों का सबब बन सकता है और इस से **मुंह का केन्सर** भी हो सकता है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ मुख़्तसर रिसाला "पान गुटके की तबाह कारियां" का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये)

"या नबी" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से बुरे ख़्वाब के 5 म-दनी इ़लाज

﴿1﴾ बा वुज़ू सोने की आ़दत बनाइये ﴿2﴾ सोने से क़ब्ल اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط सात बार पढ़ कर दुआ़ कीजिये, "**या अल्लाह ! मीठे मीठे मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सदक़ा मुझे **बुरे ख़्वाबों** से बचा।" (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बुरा ख़्वाब नहीं आएगा। ﴿3﴾ **बुरा ख़्वाब** देख कर आंख खुलने पर اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط और لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ तीन तीन बार पढ़ लीजिये ﴿4﴾ **बुरा ख़्वाब** देखने के बा'द बाएं कन्धे की त़रफ़ थुत्कार कर करवट बदल लीजिये और तीन बार पढ़िये : اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط ﴿5﴾ **یا مُتَکَبِّرُ** 21 बार (सोने से क़ब्ल) पढ़ लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़्वाब में नहीं डरेंगे। (मज़्कूरा तमाम म-दनी इ़लाज अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उ़म्र भर जारी रखिये और शिफ़ा के साथ साथ सवाब भी कमाइये)

www.dawateislami.net

पीलिया (यरक़ान) के दो इ़लाज

﴾1﴿ भुने हुए चनों पर अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ **सू-रतुल फ़लक़** और **सू-रतुन्नास** एक एक बार या तीन तीन बार पढ़ कर दम कर दीजिये और थोड़े थोड़े खाते रहिये ﴾2﴿ **गन्ने** को रात **शबनम** में रख दीजिये और सुब्ह़ इस्ति'माल कर लीजिये।

बद ज़बानी का इ़लाज

जो बे तुकी बातें कर के, गुस्से से झाड़ कर लोगों के दिल दुखा बैठता हो वोह रोज़ाना **اَسْتَغْفِرُاللّٰه** सो मरतबा (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बद ज़बानी की आ़दत निकल जाएगी। मुसल्मानों की नाह़क़ दिल आज़ारियां कर बैठने की सूरत में **अल्लाहु तव्वाब** عَزَّوَجَلَّ की जनाब में तौबा के साथ साथ जिन जिन का दिल दुखाया हो उन से मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी है।

ह़ज़रते सय्यिदुना हु़ज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे रिसालत में **ज़बान की तेज़ी** की शिकायत की तो फ़रमाया, तुम इस्तिग़फ़ार को लाज़िम क्यूं नहीं कर लेते ? बेशक मैं दिन में सो बार इस्तिग़फ़ार करता हूं।

(مُسنَد اِمام اَحمد بن حَنبل ج۹ ص ۹۵ حدیث۲۳۴۰۰)

"नबी का करम" के आठ हु़रूफ़ की निस्बत से शूगर के 8 इ़लाज

﴾1﴿ رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِیْرًا ﴿۸۰﴾

(پ۱۵بنی اسرائیل۸۰) रोज़ाना सुब्ह़ व शाम ऊपर दी हुई आयते मुबा-रका

www.dawateislami.net

तीन बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **शूगर** से नजात मिलेगी (ता हुसूले शिफ़ा) 《2》 एक कप **कलौंजी**, एक कप राई, आधा कप अनार का सूखा छिल्का और आधा कप पत (पापड़ी) मिला कर पीस लीजिये। इस पर सात बार **सू-रतुल फ़ातिह़ा** (अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये और 30 रोज़ तक बिला नाग़ा रोज़ाना नहार मुंह (या'नी नाश्ते से क़ब्ल या रोज़ा हो तो इफ़्त़ार के वक़्त ख़ाली पेट) आधा चम्मच इस्ति'माल कीजिये। परहेज़ भी जारी रखिये एक हफ़्ते के बा'द **शूगर टेस्ट** करवा लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इफ़ाक़ा (कमी) पाएंगे 《3》 ख़ुश्क सोंफ़ और ख़ुश्क आमला हम-वज़्न पीस कर बारीक छान कर इस पर 313 बार दुरूदे पाक पढ़ कर दम कर के रख लीजिये और अन्दाज़न छ छ माशा (6 ग्राम) ता हुसूले शिफ़ा रोज़ाना सुब्ह़ व शाम ताज़ा या मटके के पानी से इस्ति'माल कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इसे **शूगर** कम करने का बेहतरीन इ़लाज पाएंगे 《4》 रोज़ाना एक अ़दद **सदा बहार फूल** (सफ़ेद) नहार मुंह खा लीजिये 《5》 एक किलो सूखे **करेले** पीस कर रख लीजिये। रोज़ाना सुब्ह़ नहार मुंह चौथाई **चम्मच,** पानी के साथ इस्ति'माल कीजिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम का नज़ारा फ़रमाइये (मुद्दते इ़लाज कम अज़ कम 92 दिन) 《6》 **करेले के पावडर** के बजाए अगर रोज़ाना सुब्ह़ व शाम करेले का रस एक एक चम्मच पी लें तब भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **शूगर की बीमारी** में ह़ैरत अंगेज़

त़ौर पर फ़ाएदा होगा। इस के साथ अगर खाना कम खाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **शूगर** के मरज़ के साथ साथ ज़िम्नन **मोटापे** का इ़लाज भी होता चला जाएगा ﴾7﴿ पिसे हुए काले चने और **जव शरीफ़** की रोटी रोज़ाना खाइये या भुने हुए चने खा लीजिये, ब्राउन ख़ुब्ज़ (या'नी ब्राउन रोटी) या ब्राउन ब्रेड (येह दोनों बेकरी से मिल सकते हैं) इस्ति'माल कीजिये। मगर कोई सी भी ग़िज़ा ज़ियादा मिक़्दार में मत खाइये कि **शूगर** बढ़ने का ख़त़रा रहेगा ﴾8﴿ **बड़ी इलायची** के अन्दर से दाने निकाल कर (ता ह़ुसूले शिफ़ा) रोज़ाना सुब्ह़ व शाम पांच पांच दाने चबा कर निगल लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बहुत फ़ाएदा होगा।

दांतों की मज़बूत़ी का राज़ : ह़िकायत

एक साह़िब जिन की उ़म्र 100 बरस से कुछ कम थी अपने दांतों से **गन्ना** खा लेते थे और फ़रमाते थे कि जब **गन्ना** खाता हूं तो मेरे दांतों पर जवान आदमी रश्क करते हैं। किसी ने उन से दांतों की मह़फ़ूज़ी और मज़बूत़ी का सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : "**आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझे बचपन में येह अ़मल बताया था कि इ़शा के **वित्र** जब पढ़े जाएं तो पहली रक्अ़त में बा'दे **अल ह़म्द** सूरए اِذَاجَآء दूसरी में تَبَّتْ یَدَاۤ और तीसरी में **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ने से दांत उ़म्र भर तक्लीफ़ से मह़फ़ूज़ रहते हैं। जब से मैं इसी त़रह़ पढ़ता हूं और इसी अ़मल की येह ब-र-कत है।"

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

दांतों और कानों की ह़िफ़ाज़त का आसान अ़मल

जब छींक आए तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे और अगर رَبِّ الْعٰلَمِيْن भी बढ़ा दे या'नी اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن कहे तो बेहतर है जब कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَال कहना बहुत ही बेहतर है। ह़ज़रते मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : जो शख़्स छींक आने पर[1] اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَال कहेगा उसे कभी दाढ़ और कान का दर्द न होगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(مرقاۃ ج۸ ص ۴۹۹ تحت الحدیث۴۷۳۹) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : जो कोई शख़्स छींक पर कहे : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَال और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फैर लिया करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दांतों की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा, मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा अ़मल) है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 396) बहारे शरीअ़त जिल्द 3 सफ़ह़ा 477 पर है : छींकने वाले से पहले ही सुनने वाले ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा तो एक ह़दीस में आया है कि येह शख़्स दांतों और कानों के दर्द और तुख़्मा[2] से मह़फ़ूज़ रहेगा। और एक ह़दीस में है कि कमर के दर्द से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(رَدُّالْمُحتار ج۹ ص ۶۸۴)

दांत कमज़ोर होने की एक वज्ह

खाने के बा'द ख़िलाल कीजिये न करने से दांत कमज़ोर हो जाते हैं।

---

1 : **तरजमा :** या'नी हर ह़ाल में सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो तमाम जहान वालों का मालिक है। 2 : तुख़्मा या'नी बद हज़्मी।

www.dawateislami.net

दांतों के दर्द के दो इ़लाज

﴾1﴿ "हींग" को पानी में जोश दे कर कुल्लियां करने से **दांतों का दर्द** दूर होता है ﴾2﴿ हिलते हुए दांतों में दर्द हो तो "हींग" या "**अ़क़र क़रहा**" दांत में दबाने से आराम आ जाता है। मसूड़ों की **सूजन** दूर होती है।

"**बरेली**" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से दांतों का ख़ून बन्द करने के लिये पांच इ़लाज

﴾1﴿ (गर्म तवे वग़ैरा के ज़रीए) फुलाई हुई फट्करी का पावडर मसूड़ों में लगाइये ﴾2﴿ लीमूं का रस मसूड़ों पर मलिये ﴾3﴿ सेब के रस में **खाने का सोडा** मिला कर मसूड़ों में लगाइये ﴾4﴿ दिन में तीन मरतबा **लाल टमाटर** का रस थोड़ा थोड़ा पी लीजिये ﴾5﴿ **अनार** के फूल छाउं में सुखा कर ख़ूब बारीक पीस कर बोतल में भर लीजिये सुब्ह़ व शाम मन्जन के त़रीक़े पर दांतों पर मलिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ून बन्द हो जाएगा और हिलते दांत भी मज़बूत़ होंगे।

"**मक्का**" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से दांतों का पीलापन दूर करने के 3 इ़लाज

﴾1﴿ तिल का तेल, लीमूं का रस और नमक मिला कर दांतों पर मलने से **दांतों का पीलापन** दूर होता, ख़ून बन्द और दर्द भी दूर होता है ﴾2﴿ लीमूं के छिल्के सुखा कर, पीस कर उस में नमक मिला कर **दांत** मांझिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चमकदार हो जाएंगे ﴾3﴿ तीन हि़स्से

www.dawateislami.net

नमक और एक ह़िस्सा खाने का सोडा मिला कर डिबिया में रख लीजिये, रोज़ाना दांतों पर लगा कर दो तीन मिनट रहने दीजिये फिर दांत मांझ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दांत साफ़ हो जाएंगे।

"बक़ीअ़" के चार हुरूफ़ की निस्बत से पाएरिया (दांतों से पीप आने) के 4 इ़लाज

﴾1﴿ गन्दुम की चपाती सालन के साथ ख़ूब अच्छी त़रह़ चबा कर खाइये इस त़रह़ मसूड़ों की वर्ज़िश भी होगी और गन्दुम **पाएरिया** के लिये मुफ़ीद भी है। नीज़ अच्छी त़रह़ ख़ूब चबा कर खाने से बहुत सारी बीमारियों से तह़फ़्फ़ुज़ भी ह़ासिल होता है (अगर चबाने के दौरान ख़ून या पीप आता हो तो येह इ़लाज मत कीजिये वरना ख़ून या पीप पेट में जाएगा) ﴾2﴿ पालक का रस पीना भी मुफ़ीद है, बेहतर है कि इस में गाजर का रस भी शामिल कर लीजिये ﴾3﴿ अमरूद के दरख़्त की कूंपलें (नए नर्म पत्ते) मुनासिब मिक़्दार में खाइये ﴾4﴿ हड़, नमक और काली मिर्च हम-वज़्न बारीक पीस लीजिये और इस से दिन में दो बार मन्जन कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मसूड़ों की सूजन और **पाएरिया** का बेहतरीन इ़लाज है।

दांतों के तमाम अमराज़ का इ़लाज

मिस्वाक दांतों के तमाम अमराज़ का इ़लाज है जब कि इस को उसूल के मुत़ाबिक़ किया जाए। आज कल अक्सर लोग शायद **मिस्वाक** नहीं, फ़क़त़ "रस्मे मिस्वाक" अदा करते हैं।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

“मिस्वाक करना सुन्नत है” के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के 14 म-दनी फूल

﴾1﴿ **मिस्वाक** की मोटाई छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ﴾2﴿ **मिस्वाक** एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैत़ान बैठता है ﴾3﴿ **मिस्वाक** के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूड़ों के दरमियान ख़लाअ (GAP) का बाइ़स बनते हैं ﴾4﴿ **मिस्वाक** ताज़ा हो तो ख़ूब वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ﴾5﴿ **मिस्वाक** के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कारआमद रहते हैं जब तक उन में तल्ख़ी बाक़ी रहे ﴾6﴿ दांतों की चौड़ाई में **मिस्वाक** कीजिये ﴾7﴿ जब भी **मिस्वाक** करना हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ﴾8﴿ हर बार धो लीजिये ﴾9﴿ **मिस्वाक** सीधे हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छुंग्लिया इस के नीचे और बीच की तीन उंग्लियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ﴾10﴿ पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उल्टी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उल्टी त़रफ़ नीचे **मिस्वाक** कीजिये ﴾11﴿ चित लैट कर **मिस्वाक** करने से **तिल्ली** बढ़ जाने और ﴾12﴿ मुठ्ठी बांध कर करने से **बवासीर** हो जाने का अन्देशा है ﴾13﴿ **मिस्वाक** वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता सुन्नते मुअक्कदा उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1, स. 623) ﴾14﴿ मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) **मिस्वाक** के रेशे

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

नीज़ जब **मिस्वाक** ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह **आलए अदाए सुन्नत** है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समुन्दर में डुबो दीजिये। **मिस्वाक** या मुक़द्दस अवराक़ वग़ैरा किनारे पर डाल देने से बह कर वापस आ जाने का इम्कान रहता है। गहरे समुन्दर में डालते वक़्त भी मुक़द्दस अवराक़ के थेले या बोरी में दो एक जगह शिगाफ़ या'नी चीरे वग़ैरा ज़रूर डालिये ताकि पानी अन्दर आ जाए और तह में बिठा दे। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 294 ता 295 का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये)

"ग़ौस" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से दांतों की ह़िफ़ाज़त के 3 म-दनी फूल

﴾1﴿ हमेशा चाय या कॉफ़ी पीने के बा'द थोड़ा थोड़ा पानी पियाले में डाल कर ख़ूब हिला कर कुल्ली भर लीजिये और चन्द बार मुंह में फिरा कर ख़ूब **जुम्बिशें** दे कर पी लीजिये या निकाल दीजिये, ऐसा ही तीन बार कीजिये। इसी त़रह़ हर ग़िज़ा खाने के बा'द भी येह अ़मल कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दांत** साफ़ रहेंगे ﴾2﴿ जब भी मौक़अ़ मिले मुंह में **कुल्ली** भर लीजिये और चन्द मिनट तक हिलाते रहिये फिर उगल दीजिये। येह अ़मल रोज़ाना मुख़्तलिफ़ अवक़ात में चन्द बार कीजिये ﴾3﴿ अगर मज़्कूरा अन्दाज़ पर **कुल्लियों** के लिये सादा

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

पानी के बजाए नमक वाला नीम गर्म पानी इस्ति'माल किया जाए तो मज़ीद मुफ़ीद है। अगर पाबन्दी से येह इ़लाज जारी रखेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दांतों** के दरमियान अटके हुए ग़िज़ा के अज्ज़ा धुल धुल कर निकलते रहेंगे, न वोह मसूढ़ों में ठहरेंगे कि सड़ें, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ करने से **मसूढ़ों में ख़ून** की शिकायत भी न होगी और दांतों की बे शुमार बीमारियों से बचे रहेंगे।

"का'बा" के चार हुरूफ़ की निस्बत से मुंह की बदबू के 4 इ़लाज

﴾1﴿ **اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَی النَّبِیِّ الطَّاھِرِ** येह दुरूद शरीफ़ मौक़अ़ ब मौक़अ़ एक ही सांस में ग्यारह मरतबा पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुंह की **बदबू** ज़ाइल हो जाएगी ﴾2﴿ अगर मुंह में **बदबू** आती हो तो **हरा धनिया** चबा कर खाइये नीज़ ﴾3﴿ **गुलाब** के ताज़ा या सूखे हुए फूलों से **दांत मांझने** से भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बदबू दूर हो जाएगी ﴾4﴿ हां अगर **पेट की ख़राबी** की वज्ह से बदबू आती हो तो "कम ख़ोरी" (या'नी हमेशा खाना कम खाने) की सआ़दत ह़ासिल कर के भूक की ब-र-कतें लूटने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ टांगों और बदन के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों के दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन "मुंह के छाले, बार बार होने वाले नज़्ले **खांसी** और गले के दर्द, मसूढ़ों में ख़ून आना वग़ैरा बहुत सारे अमराज़ के साथ साथ मुंह की बदबू से भी जान छूट जाएगी। भूक से कम खाने की ब-र-कत से 80 फ़ीसद अमराज़ से बचत हो सकती है। (तफ़्सीली

www.dawateislami.net

मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के बाब "पेट का कुफ़्ले मदीना" का मुता-लआ फ़रमाइये) अगर नफ़्स की ह़िर्स का इ़लाज हो जाए तो कई ज़ाहिरी बातिनी अमराज़ खुद ही खत्म हो जाएं।

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना

कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

दांतों को बीमारी से बचाने का बेहतरीन नुस्ख़ा

याद रहे ! डट कर खाने से हाज़िमा ख़राब होता, त़रह़ त़रह़ की बीमारियां पैदा होतीं और अक्सर मसूड़ों से ख़ून भी आता है। **पेट का कुफ़्ले मदीना** लगाने या'नी भूक से कम खाने की आ़दत बनाइये। पिज़्ज़ों, पराठों, होटल की नहारियों, कबाब समोसों, मिठाइयों, पकोड़ों, पूरियों, कचोरियों और अन्वाअ़ व अक़्साम की तली हुई चीज़ों, त़रह़ त़रह़ की मीठी डिशों और इसी त़रह़ की दीगर देर से हज़्म होने वाली गिज़ाओं नीज़ आइस्क्रीमों, कोला मश्रूबों और ठन्डे ठन्डे शरबतों वगै़रा के इस्ति'माल से परहेज़ कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मोटापे** समेत बहुत सारी बीमारियों के साथ साथ **मसूड़ों** से आने वाला ख़ून भी बन्द हो जाएगा। इस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल के बाब **पेट का कुफ़्ले मदीना** का मुता-लआ कीजिये।

पेशाब में जलन के 4 इ़लाज

﴾1﴿ पेशाब में **जलन** हो या रुक कर बार बार आता हो इस के लिये तिल के लड्डू मुफ़ीद हैं बाज़ार में आ़म तौ़र पर पॉलिश वाले

तिल मिलते हैं, पॉलिश करने से तिल, चावल, दालों वग़ैरा के ह़यातीन (VITAMINS) को शदीद नुक़्सान पहुंचता है, तेल के कारख़ाने से बिग़ैर पॉलिशी के तिल मिल सकते हैं, हो सके तो घर ही पर गुड़ की चाश्नी बना कर लड्डू तय्यार कर लीजिये ﴾2﴿ गर्म दूध में शकर और अस्ली घी डाल कर पीने से **पेशाब की जलन,** रुकावट और **दर्द** में फ़ाएदा होता है ﴾3﴿ सो ग्राम दूध में सिर्फ़ एक ग्राम खाने का सोडा डाल कर दिन में दो मरतबा पीने से **पेशाब** खुल कर आता और **जलन** दूर होती है ﴾4﴿ ''जव शरीफ़'' उबाल कर उस का पानी पीने से पेशाब साफ़ आता और **जलन** दूर होती है।

पेशाब का इ़लाज

बार बार और वोह भी ज़ियादा मिक़्दार में **पेशाब** आना और ख़ूब प्यास लगना ज़ियाबीतुस (DIABETIC) की अ़लामात हैं। इस के लिये **ख़ालिस हल्दी** बारीक पिसी हुई सुब्ह़ व शाम चार चार माशा (या'नी तक़रीबन चार चार ग्राम) ताज़ा पानी से इस्ति'माल कीजिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से इस ब ज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाली दवा की ब-र-कतों का नज़्ज़ारा कीजिये।

बार बार पेशाब आने के 5 इ़लाज

﴾1﴿ ''ज़ियाबीतुस'' न होने के बा वुजूद अगर **बार बार पेशाब** आ रहा हो तो ''उड़द की दाल'' चन्द घन्टे भिगो कर नर्म कर के पीस कर ह़स्बे ज़रूरत शकर डाल कर अस्ली घी में भून लीजिये। येह

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह् व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

ह़ल्वा मुनासिब मिक़्दार में सात दिन तक रोज़ाना तीन बार खाइये। साथ में **रोटी** और **दही** खाना ज़ियादा मुफ़ीद है ﴾2﴿ रोज़ाना सुब्ह् व शाम एक चम्मच तिल और एक चम्मच **शह्द** मिला कर ख़ूब चबा कर खाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ पेशाब मा'मूल पर आ जाएगा ﴾3﴿ रोज़ाना रात को **तीन बादाम** पानी में भिगो दीजिये और सुब्ह् छिल्के उतार कर नहार मुंह खा लीजिये ﴾4﴿ **सर्दी** की वज्ह से बार बार **पेशाब** आता हो तो **बारीक पीसी हुई दारचीनी** दो माशा (या'नी तक़रीबन दो ग्राम) दूध से इस्ति'माल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद पाएंगे ﴾5﴿ ''मा'जूने फ़लासफ़ा'' बार बार पेशाब आने बल्कि पेशाब की मुख़्तलिफ़ बीमारियों के लिये मुफ़ीद है। (ह़कीम के मश्वरे से इस्ति'माल कीजिये) पानी और चाय एक साथ न पियें। **चाय बहुत ही कम पियें कि चाय पीने से पेशाब भी ज़ियादा आता है और येह गुर्दे के लिये भी मुज़िर है।** (दूध वाली चाय का ज़ियादा इस्ति'माल मोटापा लाता और चीनी वाली चाय का इस्ति'माल शूगर को बढ़ाता है)

पेशाब रुक रुक कर आने के 4 इलाज

﴾1﴿ मुनासिब मिक़्दार में **मूली का रस** पीने से पेशाब खुल कर आता है ﴾2﴿ ताज़ा छाछ में गुड़ डाल कर पीने से पेशाब की रुकावट दूर होती है बल्कि अगर पेशाब बन्द हो गया हो तो येह पीने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आ जाएगा ﴾3﴿ रात को **गेहूं** भिगो कर रख दीजिये और सुब्ह् पीस कर **शकर** मिला कर **ह़ल्वा** बना लीजिये इस का इस्ति'माल

www.dawateislami.net

भी पेशाब की रुकावट को दूर करता है ﴿4﴾ **इलायची और सूंठ** (या'नी ख़ुश्क अदरक) थोड़ी सी हम-वज़्न पीस लीजिये फिर नमक मिले हुए पानी में डाल कर पीने से اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ पेशाब खुल कर आ जाएगा ।

पेशाब में ख़ून

अगर **शूगर** न हो तो ख़ूब **गन्ने का रस** पियें, पेशाब की रुकावट और ख़ून आना सब ख़त्म اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ । दौलत कमाने के शौक़ में आज कल उ़मूमन गन्ने के रस में बर्फ़ का पिघला हुवा पानी काफ़ी मिक़्दार में मिलाया जाता और सेक्रीन[1] के ज़रीए़ इस को मीठा किया जाता है । लिहाज़ा आप ज़ियादा पैसे दे कर बिग़ैर बर्फ़ के गन्ने का ख़ालिस रस निकलवाइये ।

पेशाब में धात

सूंठ (या'नी सूखी अदरक) को पानी में जोश दे कर **पिसी हुई हल्दी** और गुड़ डाल कर पीने से पेशाब के साथ अगर **धात** आती है तो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ बन्द हो जाएगी ।

नींद में पेशाब निकल जाना, जिरयान, एह़तिलाम

गूंद एक माशा, **कतीरा** एक माशा, **सबूस अस्पग़ोल** तीन माशा आपस में मिला कर सुब्ह़ व शाम पी लें ।

1 : सेक्रीन एक सफ़ेद रंग का सफ़ूफ़ होता है जो कि मस्नूई त़ौर पर बनाया जाता है और चीनी से तक़रीबन पांच सो गुना मीठा होता है ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

औ़रत के बार बार पेशाब आने का इ़लाज

आमला और शकर पक्के केले के साथ मिला कर इस्ति'माल करने से औ़रत को कस्रते पेशाब से नजात मिलती है।

अगर मर्द को शह्वत तंग करती हो तो......

﴾1﴿ कसरत से **रोज़े** रखे ﴾2﴿ गोश्त कम और सब्ज़ियां और फल ज़ियादा इस्ति'माल करे ﴾3﴿ मुल्हट्टी तीन माशा, **धनिया ख़ुश्क** तीन माशा पीस कर पानी के साथ इस्ति'माल कीजिये 15 दिन तक।

मे'दा बीमार होने की पहचान

कूतुल कुलूब जिल्द 2 सफ़्ह़ा 316 पर नक़्ल है कि खाने के बा'द (अलिफ़) "**6** घन्टे से क़ब्ल अगर खाना निकल जाए तब भी मे'दा बीमार और अगर **24** घन्टे से ज़ियादा वक़्त तक ख़ारिज न हो तब भी समझ लीजिये कि मे'दा बीमार है।" (बा) **जोड़ों का दर्द** पेट की हवा रोकने का नतीजा है (जीम) जिस त़रह़ नह्र का चलता पानी अगर रोक दिया जाए तो नह्र के कनारों को नुक़्सान होता और कनारे टूट कर पानी बहने लगता है इसी त़रह़ पेशाब रोकने से जिस्म को नुक़्सान होता है।"

हाज़िमा कैसे दुरुस्त हो ?

वक़्त बे वक़्त खाते पीते रहने से मे'दा तबाह और हाज़िमा बरबाद हो जाता है। जब तक भूक न लगे उस वक़्त तक खाना सुन्नत नहीं। जब भी खाए तो भूक के तीन ह़िस्से कर ले, एक ह़िस्सा खाना,

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

एक हिस्सा पानी और एक हिस्सा हवा। खाने के बा'द डेढ़ दो घन्टे तक न सोए, गोश्त कम और सब्ज़ी और फलों का इस्ति'माल ज़ियादा करे। हत्तल इम्कान रोज़ाना पौन घन्टा पैदल चले। चलने का बेहतर त़रीक़ा येह है कि पहले 15 मिनट तेज़ तेज़ क़दम, फिर 15 मिनट दरमियाना, आख़िर में फिर 15 मिनट तेज़ क़दम चले। रात का खाना खा कर कम अज़ कम 150 क़दम चले। बद हज़्मी की वोह बीमारियां जो किसी दवा को जवाब नहीं देतीं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुरुस्त हो जाएंगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को **80%** अमराज़ से तहफ़्फ़ुज़ ह़ासिल होगा जिन में हार्ट अटेक, फ़ालिज, लक्वा, दिमाग़ी अमराज़, हाथ पाउं और बदन का दर्द, ज़बान और गले की बीमारियां, मुंह के छाले, सीने और फेफड़े के अमराज़, सीने की जलन, शूगर, हाई ब्लड प्रेशर, जिगर और पित्ते के अमराज़ वग़ैरा शामिल हैं। (माख़ूज़ अज़ फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 608)

"भूक न लगती हो तो" दो इलाज

﴾1﴿ **भूक** बहुत कम लगती हो, खाना जल्द हज़्म न होता हो, खाने को जी न चाहता हो तो **संगतरे** की क़ाशों पर बारीक पिसी हुई **सूंठ** या'नी सूखी हुई अदरक और **काला नमक छिड़क** कर खाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सात दिन तक येह खाने से भूक पहले के मुक़ाबले में बढ़ जाएगी ﴾2﴿ **अदरक** काट कर छोटी छोटी टुकड़ियां बना लीजिये और उस पर **नमक** छिड़क कर एक या दो ग्राम खा लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चमक कर **भूक** लगेगी, **गेस** ख़ारिज होगी और क़ब्ज़ दूर होगी।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

बद हज़्मी के दो म-दनी इलाज

﴾1﴿ जिस शख़्स को **बद हज़्मी** की शिकायत हो और वोह नीचे दी हुई इन दो आयाते करीमा को पढ़ कर अपने हाथ पर दम कर के उसे पेट पर फैरे और खाने वग़ैरा पर दम कर के खाना खाया करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **बद हज़्मी** की शिकायत दूर हो जाएगी। आयते मुबा-रका येह है :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِیْٓــٴًـۢا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۴۴﴾ (پ۲۹،المرسلٰت۴۳،۴۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा अपने आ'माल का सिला बेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

﴾2﴿ इमाम कमालुद्दीन दमैरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی बा'ज़ उ़-लमाए किराम से नक़्ल करते हैं : जिस ने खाना ज़ियादा खा लिया और **बद हज़्मी** का ख़ौफ़ हो वोह अपने पेट पर हाथ फैरता हुवा तीन मरतबा येह कहे :

اَللَّیْلَةُ لَیْلَةُ عِیْدِیْ یَا كَرِشِیْ وَرَضِیَ اللّٰهُ عَنْ سَیِّدِیْ اَبِیْ عَبْدِ اللّٰهِ الْقُرَشِیْ-

तरजमा : ऐ मेरे मे'दे आज की रात मेरी ई़द की रात है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो हमारे सरदार ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह क़-रशी[1] से।

1 : सय्यिदी अबू अ़ब्दुल्लाह क़-रशी हाशिमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی अकाबिर औलियाए मिस्र से हैं, सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ज़माने में सोलह सत्तरह साल के थे 6 ज़ुल हि़ज्जह 599 सि.हि. को बैतुल मुक़द्दस में इन्तिक़ाल फ़रमाया। (फ़तावा अफ़्रीक़ा, स.173)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

और अगर दिन का वक़्त हो तो اَللَّیْلَۃُ لَیْلَۃُ عِیْدِی की जगह اَلْیَوْمُ یَوْمُ عِیْدِی कहे। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 609, حیاۃ الحیوان الکبرٰی ج ١ ص ٤٦٠)

गेस और बद हज़्मी का देसी इलाज

अगर पेट में हवा भर जाती हो, **अफारा** या'नी हवा के सबब पेट फूल जाता हो तो पिसी हुई **ख़ालिस हल्दी** 10 रत्ती (या'नी एक ग्राम से मा'मूली ज़ाइद) और नमक 10 रत्ती (या'नी एक ग्राम से मा'मूली ज़ाइद) गर्म पानी से इस्ति'माल कीजिये। **हवा** ख़ारिज हो कर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ पेट हलका हो जाएगा। कई रोज़ तक इस्ति'माल करने से **बद हज़्मी** भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दूर हो जाएगी।

हाज़िमे का मन भाता इलाज

काली मिर्च, काला ज़ीरा और **नमक** बारीक पीस कर एक बोतल में मह़फ़ूज़ कर लीजिये, **तरबूज़** पर छिड़क कर इस्ति'माल कीजिये। इस त़रह़ **तरबूज़** की लज़्ज़त में भी इज़ाफ़ा हो जाएगा और वोह **हाज़िमे** की बेहतरीन दवा साबित होगा और भूक भी चमक उठेगी। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن रिवायत नक़्ल करते हैं : "खाने से पहले तरबूज़ खाना पेट को ख़ूब धो देता है और बीमारी को जड़ से ख़त्म कर देता है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 5, स. 442) **तरबूज़** के मुकम्मल छिल्के का या धारियां या गोल धब्बे हों तो उन का **सब्ज़ रंग** जितना गहरा होगा उतना ही اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अन्दर से लाल और मीठा निकलेगा। कहते हैं : तरबूज़

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

पर हल्का सा हाथ मारने पर मध्धम सी आवाज़ आना उस के उ़म्दा और पक्के होने की अ़लामत है।

हाज़िमा दार चटनी बनाने का त़रीक़ा

रोज़ाना खाने के साथ इस चटनी का हाज़िमा वग़ैरा के लिये इस्ति'माल मुफ़ीद है ﴾1﴿ सुर्ख़ टमाटर 50 ग्राम ﴾2﴿ अदरक 50 ग्राम ﴾3﴿ लहसन 50 ग्राम ﴾4﴿ एक अ़दद लीमूं का रस ﴾5﴿ हरी मिर्च 25 ग्राम ﴾6﴿ ज़ीरा सफ़ेद 25 ग्राम ﴾7﴿ पोदीना एक गड्डी ﴾8﴿ हल्दी 25 ग्राम ﴾9﴿ नमक ह़स्बे ज़ाएक़ा

क़ब्ज़ के तीन अस्बाब

﴾1﴿ कुरसी की पुश्त या दीवार वग़ैरा से टेक लगा कर या ﴾3﴿ खड़े खड़े या ﴾3﴿ सुवारी पर बैठ कर खाना खाने से बद हज़्मी होती है।

''दिल मदीना बना लिया हम ने'' के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से क़ब्ज़ के 17 इ़लाज

अगर क़ब्ज़ रहती हो तो ﴾1﴿ अपना **हाज़िमा** दुरुस्त रखिये। मुनासिब मिक्दार में बीज समेत **पक्के अमरूद** (कच्चे अमरूद क़ब्ज़ बढ़ाते हैं) या ﴾2﴿ मुनासिब मिक्दार में पपीता खा लीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ पेट साफ़ हो जाएगा ﴾3﴿ अगर दाइमी क़ब्ज़ हो तो आप का **डॉक्टर इजाज़त दे तो** हर दो या तीन माह बा'द पांच दिन तक सुब्ह़ व शाम

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

एक एक टिक्या ग्रामेक्स 400 मिली ग्राम **GRAMEX400mg** (Metronidazole) इस्ति'माल कीजिये। इसे क़ब्ज़, बद हज़्मी वग़ैरा अमराज़ और पेट की इस्लाह़ के लिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बेहतरीन दवा पाएंगे। मगर जब भी येह टिक्या लेना शुरूअ़ करें तो मुसल्सल पांच दिन पूरे करना ज़रूरी है। ख़ाली पेट में भी ले सकते हैं ﴾4﴿ जिस वक़्त **क़ब्ज़** हो उस दिन दो एक वक़्त खाने का **फ़ाक़ा** कीजिये ﴾5﴿ नहार मुंह एक गिलास नीम गर्म या चार गिलास पानी पी लीजिये ﴾6﴿ सोते वक़्त एक गिलास **नीम गर्म** पानी में थोड़ा सा नमक घोल कर पी लीजिये ﴾7﴿ सोते वक़्त एक या दो संगतरे खा लीजिये ﴾8﴿ थोड़ी सी **सोंफ़** दूध या हल्के गर्म पानी से ले लीजिये ﴾9﴿ सादा या नीम गर्म पानी में **लीमूं** निचोड़ कर सुब्ह़ व शाम इस्ति'माल कीजिये ﴾10﴿ एक गिलास नीम गर्म पानी में दो चम्मच **ख़ालिस शह्द,** एक चम्मच **लीमूं** और एक चम्मच **अदरक का रस** ह़ल कर के पी लीजिये ﴾11﴿ "अमल्तास" के थोड़े से फूल गोश्त में पका कर कुछ दिन तक खाने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **दाइमी क़ब्ज़** में इफ़ाक़ा (कमी) हो जाएगा ﴾12﴿ रात को **तीन खजूरें** पहले धो लीजिये फिर भिगो कर रखिये और सुब्ह़ उसी पानी में मसल कर छान कर पी लीजिये (खजूरें और हर त़रह़ के फल और सब्ज़ियां धो कर ही इस्ति'माल करने चाहिएं ता कि मैल कुचैल, मख्खियों की बीट और खुसूसन जरासीम कुश दवा के अ-सरात

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

धुल जाएं) ﴾13﴿ पक्के **टमाटर का रस** एक कप पी लीजिये ﴾14﴿ अस्पग़ोल की भूसी एक या तीन चम्मच (ज़रूरतन कमी बेशी कर सकते हैं) सादा पानी के साथ फांक लीजिये। **अस्पग़ोल** रोज़ रोज़ लें तो फ़ाएदा नहीं होता लिहाज़ा अगर अक्सर क़ब्ज़ रहती हो तो हफ़्ते में एक बार ले लीजिये। काम न चले वक़्फ़ा मज़ीद बढ़ा दीजिये ﴾15﴿ **कच्चा केला** उबाल कर खाना क़ब्ज़ के लिये बेह़द मुफ़ीद है ﴾16﴿ मा'मूल के ख़िलाफ़ "सिह़ह़त कुश" गिज़ाएं या किसी सरमाया दार की दा'वत में ह़िर्स के मारे बहुत ज़ियादा मुरग़्ग़न और सक़ील (या'नी वज़्नी) या'नी "बीमार कुन" गिज़ाएं खाने की भूल कर बैठें तो घर आ कर तीन चार चम्मच "**अस्पग़ोल** पानी के साथ फांक लीजिये। शायद नुक़्सान में थोड़ी सी कमी आए। मगर येह ज़ेह्न तो बना लीजिये कि इस त़रह़ की **दा'वतों के खाने** उ़मूमन सिह़ह़त के दुश्मन होते हैं ﴾17﴿ हाज़िमा दार चूरन घर में रखा कीजिये। अगर कभी **क़ब्ज़** हो जाए, ज़ियादा घी तेल वाली गिज़ा, देग की मसा-लह़ दार बिरयानी, बिल ख़ुसूस **र-मज़ानुल मुबारक** या बक़र ई़द में अगर लालच में पड़ कर ज़ियादा कबाब समोसे वग़ैरा खा डालें तो पेट में गड़बड़ का इन्तिज़ार किये बिग़ैर **चूरन** फांक लीजिये। (मक-त-बतुल मदीना का मत़बूआ़ मुख़्तसर रिसाला "कबाब समोसे के नुक़्सानात" हदिय्यतन ह़ासिल कर के ज़रूर पढ़ लीजिये ह़ैरत अंगेज़ मा'लूमात ह़ासिल होंगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

"रज़ा" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से बेहोशी के 3 इलाज

﴾1﴿ आ-यतुल कुर्सी का येह हिस्सा, لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ पढ़ कर पानी पर दम कर के मुंह पर छींटे मारिये और **रोज़ा** न हो तो ह़ल्क़ में भी चन्द क़त़रे टपकाइये । फिर कोई रुकावट न हो तो हिलाने जुलाने, बिठाने और ज़रूरतन अपने हाथ से मरीज़ की आंखें खोलने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **होश** आ जाएगा ﴾2﴿ पिसी हुई सियाह मिर्च के चन्द ज़र्रे बेहोश आदमी के नाक के नथनों में डाल कर फूंक मारिये । अगर छींकें शुरूअ़ हो गई तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **होश** आ जाएगा ﴾3﴿ प्याज़ के चार टुकड़े कर के सुंघाने से भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **होश** आ जाएगा । (इलाज नम्बर 2 और 3 मस्जिद के अन्दर न कीजिये)

"आबे कौसर" के छ हुरूफ़ की निस्बत से जोड़ों के दर्द के 6 इलाज

﴾1﴿ **يَا غَنِيُّ** रीढ़ की हड्डी, घुटनों, जोड़ों वग़ैरा जिस्म में कहीं भी दर्द हो, चलते फिरते उठते बैठते पढ़ते रहिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दर्द जाता रहेगा ﴾2﴿ रोज़ाना दो भुने हुए **आलू** (छिलके समेत) और थोड़ी सी **अदरक** मिला कर खा लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **जोड़ों के दर्द** में फ़ाएदा होगा ﴾3﴿ **मोसम्बी** के आधे गिलास ख़ालिस रस में एक चम्मच **मछली का तेल** (मेडीकल स्टोर से मिल सकता है) मिला कर पहली बार मुसल्सल चार दिन तक रोज़ाना दिन के ग्यारह बजे पियें । इस के बा'द चार माह तक हर 15 दिन के बा'द मुसल्सल दो दिन उसी वक़्त

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

में पियें। येह इ़लाज सर्दियों में ज़ियादा मुनासिब है। इस इ़लाज के दौरान ठन्डी तासीर वाले फल म-सलन मेठे, मोसम्बी, अनन्नास और अनार वग़ैरा ज़ियादा इस्ति'माल कीजिये ﴾4﴿ सुब्ह़ नहार मुंह **घी कवार का ह़ल्वा** खाइये। (येह बाज़ार में मिल सकता है) ﴾5﴿ प्याज़ का रस और राई का तेल मिला कर जोड़ों पर मालिश करें। इस से सुस्त जोड़ खुल जाएंगे और बि फ़ज़्लिही तआ़ला आप राह़त मह़सूस फ़रमाएंगे। ﴾6﴿ अगर डॉक्टर इजाज़त दे तो रोज़ाना एक गोली न्यूरोमेट (NEUROMET) खाने के बा'द पानी से इस्ति'माल कीजिये जोड़ों के दर्द के लिये मुजर्रब[1] है। डॉक्टर के मश्वरे से रोज़ाना एक से ज़ियादा भी ले सकते हैं और अगर दर्द की शिद्दत कम हो तो नाग़े से भी ली जा सकती है। इस त़रह़ की दवाएं बिला नाग़ा मुसल्सल न खाई जाएं बीच में कुछ दिन वक़्फ़ा कर लेना चाहिये म-सलन अगर मुसल्सल 12 दिन इस्ति'माल कर ली तो 7 या 12 दिन तक वक़्फ़ा कर लिया फिर ज़रूरत मह़सूस हुई तो शुरूअ़ कर दे।

हड्डी जोड़ने के लिये

فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُلۡ حَسۡبِیَ اللّٰہُ ۫٭ۖ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ ؕ عَلَیۡہِ تَوَکَّلۡتُ وَ ہُوَ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِیۡمِ ﴿۱۲۹﴾ (پ۱۱ توبہ ۱۲۹) तीन दिन तक अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक एक बार पढ़ कर बार बार दम कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ टूटी या फटी हुई हड्डी जुड़ जाएगी।

1 : पठ्ठों के लिये कुव्वत बख़्श है और ज़िम्नन इस से जोड़ों के दर्द को भी फ़ाएदा पहुंचता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

नक्सीर फूटने का इलाज

अगर किसी की **नक्सीर** फूट जाए और ख़ून बहने लगे तो शहादत की उंगली से पेशानी पर से بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिखना शुरूअ़ कर के नाक के आख़िर पर ख़त्म करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ख़ून बन्द** हो जाएगा।

नाक की हड्डी बढ़ी हुई हो तो...

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۙ﴿۲﴾ (پ ۳۰ العصر ۲)

नाक या बदन में कोई सी भी हड्डी बढ़ी हुई हो तो 92 दिन तक रोज़ाना रात को सोने से पहले अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ ऊपर दी हुई आयते करीमा 100 मरतबा पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लीजिये।

कान के दर्द के दो इलाज

﴾1﴿ ख़ालिस शहद या तुलसी के तेल के चन्द क़त़रे **कान** में टपकाने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कान के दर्द में राहत मिलेगी ﴾2﴿ अदरक के रस का एक क़त़रा कान में टपकाने से दर्द व कसक اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दूर होंगे।

कान में कीड़ा घुस जाए तो......

कान में अगर कोई **कीड़ा** चला जाए तो **सरसों का तेल** डालने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मर जाएगा।

बुख़ार के इलाज की हिकायत

मन्कूल है, एक शख़्स को बुख़ार आ गया, उस के उस्ताज़े मोहतरम हज़रते सय्यिदुना शैख़ उ़मर बिन सई़द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُعِيْد

www.dawateislami.net

इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए, जाते हुए एक **ता'वीज़** इनायत कर के फ़रमाया : इस को खोल कर मत देखना। उन के जाने के बा'द उस ने **ता'वीज़** बांध लिया, फ़ौरन बुख़ार जाता रहा। उस से रहा न गया, खोल कर जो देखा तो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم लिखा था। दिल में वस्वसा आया, येह तो कोई भी लिख सकता है ! अ़क़ीदत में कमी आते ही फ़ौरन **बुख़ार** लौट आया। घबरा कर शैख़ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर ग़-लती की मुआफ़ी चाही। उन्हों ने ता'वीज़ बना कर अपने दस्ते मुबारक से बांध दिया, **बुख़ार** फ़ौरन चला गया। अब की बार देखने की मुमा-न-अ़त न फ़रमाई थी मगर डर के मारे खोल कर न देखा। बिल आख़िर साल भर के बा'द जब खोल कर देखा तो वोही بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم तह़रीर थी। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم की बड़ी ब-र-कतें हैं और इस में **बीमारियों का इ़लाज** भी। इस ह़िकायत से दर्स मिला कि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين अगर किसी मुबाह़ बात से भी मन्अ़ कर दें तो समझ में न आने के बा वुजूद भी उस से बा'ज़ रहना चाहिये। येह भी **दर्स** मिला कि ता'वीज़ खोल कर नहीं देखना चाहिये कि इस से ए'तिक़ाद मु-त-ज़लज़िल होने का अन्देशा

www.dawateislami.net

रहता है। फिर इस की तह करने के मख़्सूस त़रीके़ के साथ साथ लपेटने के दौरान बा'ज़ अवक़ात कुछ पढ़ा हुवा भी होता है। लिहाज़ा खोल कर देखने से उस के फ़वाइद में कमी आ सकती है।

"या मुस्त़फ़ा" के सात हु़रूफ़ की निस्बत से बुख़ार के 7 म-दनी इलाज

﴾1﴿ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ﴿۱۳﴾ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** न उस में धूप देखेंगे न ठिठर[1]। (پ۲۹،الدھر۱۳) येह आयते करीमा सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **बुख़ार** की शिद्दत में नुमायां कमी मह़सूस होगी और मरीज़ सुकून मह़सूस करेगा ﴾2﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق फ़रमाते हैं, **सू-रतुल फ़ातिह़ा** 40 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के **बुख़ार** वाले के मुंह पर छींटे मारिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बुख़ार चला जाएगा ﴾3﴿ **सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुख़ार था तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह दुआ पढ़ कर दम किया था : بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُّؤْذِيْكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ اَوْعَيْنٍ حَاسِدٍ ط اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ (**तरजमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से आप पर दम करता हूं हर उस चीज़ से जो आप को अज़िय्यत पहुंचाए हर नफ़्स की

1 : या'नी सर्दी

www.dawateislami.net

बुराई से या हर ह़सद वाली आंख से। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को शिफ़ा अ़ता फ़रमाए। मैं आप पर **अल्लाह** के नाम से दम करता हूं) (صحیح مُسلِم ص۱۲۰۲حدیث ۲۱۸۶) बुख़ार के मरीज़ को अ़-रबी में दुआ़ (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये ﴾4﴿ बुख़ार में मुब्तला शख़्स येह दुआ़ पढ़े **:** بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَعَّارٍ وَّمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ (**तरजमा :** किब्रियाई वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से मैं हर जोश मारने वाली रग की बुराई से और आग की तपिश के शर से, अ़-ज़मत वाले रब عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं) (تِرمِذی ج ٤ ص ٢٠ حدیث ٢٠٨٢) ﴾5﴿ **ह़दीसे** पाक में है **:** जब तुम में से किसी को **बुख़ार** आ जाए तो उस पर तीन दिन तक सुब्ह़ के वक़्त ठन्डे पानी के छींटे मारे जाएं। (اَلْمُستَدرَك ج ٥ ص ٥٧٦ حدیث ٨٢٧٦) ﴾6﴿ ह़दीसे मुबारक में है **: बुख़ार** जहन्नम के जोश से है, इस को पानी के ज़रीए ठन्डा करो। (بُخاری ج۲ ص۳۹٦ حدیث۳۲٦۳)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان के फ़रमाने वाला शान का ख़ुलासा है **:** अहले अ़रब को अक्सर "सफ़रावी बुख़ार" आते थे जिन में ग़ुस्ल मुफ़ीद होता है। हम लोगों को जो कि अ़-जमी या'नी ग़ैरे अ़रब हैं। त़बीबे ह़ाज़िक़ (या'नी माहिर त़बीब) के मश्वरे के बिग़ैर ग़ुस्ल के ज़रीए **बुख़ार** का इ़लाज नहीं करना चाहिये क्यूं कि हमें अक्सर वोह बुख़ार होते हैं जिन

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

में गुस्ल नुक़्सान देह है, इस से **नुमूनिया** का ख़त़रा होता है। **ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی "मिरक़ात" में फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने ह़दीसे पाक का तरजमा पढ़ कर **बुख़ार** में गुस्ल के ज़रीए़ इ़लाज किया तो उस को **नुमूनिया** हो गया और बड़ी मुश्किल से उस की जान बची तो वोह ह़दीसे पाक ही का **मुन्किर** हो गया, ह़ालां कि उस की अपनी जहालत थी। (मुलख़्ख़सन मिरआत, जि. 2, स. 429, 430) **इस से येह भी सीखने को मिला कि अ़वामुन्नास को तरजमे के साथ साथ तफ़्सीरे क़ुरआन व शुरूहे़ अह़ादीस भी पढ़नी चाहिएं।**

हड्डियों से इ़लाज के म-दनी फूल

हड्डियां भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत हैं और इन में भी ग़िज़ाइय्यत रखी गई है। जो लोग घर में पकाने के लिये बिग़ैर हड्डी का गोश्त ही ख़रीदते हैं वोह अपने साथ साथ अहले ख़ाना को भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक ने'मत से मह़रूम करते हैं। यक़ीनन **अल्लाहु** ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ ने कोई चीज़ बेकार नहीं बनाई। हड्डियां ग़िज़ा के साथ साथ दवा का काम भी देती हैं। अत़िब्बा बा'ज़ मरीज़ों को **हड्डियों की यख़्नी** पीने का मश्वरा देते हैं। बल्कि आप ने भी बारहा हड्डियों की यख़्नी पी होगी। अलबत्ता ख़ालिस बोटी का सूप कभी नहीं पिया होगा ! हड्डियां बहुत अहम हैं, त़िब्बी त़रीक़े पर हड्डियों से ह़ासिल शुदा अ़रक़ के इन्जेक्शन भी मरीज़ों

www.dawateislami.net

को लगाए जाते हैं। **गाय के सींग** पीस कर खाने में मिला कर चौथिया वाले (या'नी जिस को हर चौथे दिन बुख़ार आता हो) को खिलाने से बि इज़्निल्लाह عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा ह़ासिल हो जाती है। **गाय के बाल** जला कर पानी में घोल कर पी लेने से **दांतों का दर्द** जाता रहता है। (حیاۃ الحیوان الکبریٰ ج۱ص۲۱۹) **कबूतर** जो कि ह़लाल परिन्दा है उस की हड्डी जला कर ज़ख़्म पर लगाने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से **ज़ख़्म** ठीक हो जाता है। (अ़जाइबुल हैवानात, स. 147)

"रह़ीम" के चार हुरूफ़ की निस्बत से पेट के दर्द के 4 इलाज

﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक बार मैं नमाज़ पढ़ कर **सरकारे नामदार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठ गया, आप ने फ़रमाया : क्या तुझे **पेट में दर्द** है। अ़र्ज़ की : जी हां। फ़रमाया : "उठो और नमाज़ पढ़ो क्यूं कि **नमाज़** में शिफ़ा है।"

(ابن ماجہ، ج٤ ص٩٨ حدیث٣٤٥٨)

﴾2﴿ (پارہ ٢٣ سورۃ الصّٰفّٰت آیت ٤٧) لَا فِیْهَا غَوْلٌ وَّ لَا هُمْ عَنْهَا یُنْزَفُوْنَ ۝[1] एक बार, और अव्वल आख़िर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ कर पानी या किसी खाने की चीज़ पर दम कर के इस्ति'माल कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **पेट के दर्द** में फ़ाएदा होगा। दूसरा कोई भी पढ़ कर दम कर के दे सकता है ﴾3﴿ अच्छी त़रह़ पके हुए अनार के दानों पर नमक और काली मिर्च

مدینہ

1 : तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : न उस में खुमार है और न उस से उन का सर फिरे।

www.dawateislami.net

छिड़क कर ख़ूब चबा कर खा लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **पेट का दर्द** काफ़ूर (रुख़्सत) होगा (ख़ूब चबा कर खाना ज़रूरी है) ﴾4﴿ रोज़ाना सुब्ह़ व शाम एक एक अन्डे की सिर्फ़ **कच्ची सफ़ेदी निगल** लिया करें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **पेट का दर्द** और इस की अक्सर बीमारियां दूर होंगी।

''ह़बीब'' के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से बच्चों के पेट के दर्द के 4 इ़लाज

बच्चों के पेट के दर्द की अ़लामत येह है कि वोह बार बार टांगों को सुकेड़ते और चीख़ते हैं। जब ऐसा हो तो ﴾1﴿ **प्याज़** को आग में सेंक कर पानी निचोड़ लीजिये और 3 ग्राम पिला दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **पेट के दर्द** में आराम आ जाएगा या ﴾2﴿ **पेट की सेंकाई** कीजिये ﴾3﴿ शह्द चटाइये या ﴾4﴿ अन्डे की सिर्फ़ **कच्ची सफ़ेदी** थोड़ी थोड़ी वक़्फ़े से पिलाइये, मे'दे की गर्मी से पक जाएगी और जरासीम वग़ैरा का ख़ातिमा कर देगी। और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **पेट** की तक्लीफ़ दूर हो जाएगी।

पेट की जलन के दो इ़लाज

﴾1﴿ रोज़ाना पांच खजूरें (धो कर) रात को पानी में भिगो लीजिये, सुब्ह़ कुचल कर **शह्द** में मिला कर नहार मुंह पी लीजिये। (येह इ़लाज सात दिन तक जारी रखिये) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ठन्डक हो जाएगी ﴾2﴿ मुनासिब मिक़्दार में **ग्लूकोज़** पानी में घोल कर दिन में दो या तीन बार पी लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ पेट में ठन्डक हो जाएगी।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

पेचिश का इलाज

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ﴿۳۲﴾ (پ ٥ النساء ٣٢)

तुलूए आफ़्ताब से क़ब्ल अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक मरतबा पढ़ कर एक गिलास पानी पर दम कर के नहार मुंह पी लीजिये और आधे घन्टे तक कोई भी खाने पीने की चीज़ इस्ति'माल मत फ़रमाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **पुरानी पेचिश** भी ख़त्म हो जाएगी।

(इलाज की मुद्दत 21 दिन)

पेट में कीड़े

पेट में कीड़े हों तो **शह्द** में **अज्वाइन** मिला कर चाट लीजिये या ज़ीरे का जोशान्दा या'नी ज़ीरा उबाल कर उस का पानी पी लीजिये।

क़ै के फ़वाइद व नुक़्सानात

《1》 क़ै से मे'दे की सफ़ाई होती है। मशहूर तबीब "बक़रात" का कहना है कि हर शख़्स को महीने में दो बार क़ै करना चाहिये ताकि एक बार अगर कुछ रह जाए तो दूसरी बार में निकल आए 《2》 ज़ियादा **क़ै** आना नुक़्सान देह है कि इस से सीने और मे'दे में दर्द पैदा होता है 《3》 जब **क़ै** आने लगे तो उस को ज़बर दस्ती न रोका जाए कि **सख़्त अमराज़** पैदा होने का ख़तरा है, म–सलन इस से फ़ौते बढ़ जाते हैं।

मस्अला : खाना या पानी या सफ़रा (या'नी पीले रंग के कड़वे पानी) की **मुंह भर क़ै** (या'नी जो बिला तकल्लुफ़ न रोकी जा सके) इन्सानी पेशाब

www.dawateislami.net

की तरह नापाक होती है, इस की छींटों से अपने कपड़े वगैरा को बचाना ज़रूरी है। ऐसी कै वुज़ू तोड़ देती है और रोज़ा याद होने की सूरत में क़स्दन करने से रोज़ा भी टूट जाता है जब कि **मुंह भर कै** हो और इस में खाना, पानी या सफ़रा आए। बल्ग़म की **मुंह भर कै** से वुज़ू और रोज़ा नहीं टूटता। कै के तफ़्सीली अह़काम सीखने के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1047 ता 1050 का मुता–लआ़ बेह़द ज़रूरी है।

"ग़रीब नवाज़" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से कै बन्द करने के 8 इलाज

﴾1﴿ किसी खाने या पीने की चीज़ पर **सू-रतुत्तारिक़** पढ़ कर दम कर के खा या पी लीजिये ﴾2﴿ وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ (پ۱۲هود ٤٤) येह आयत काग़ज़ पर लिख कर नहार मुंह सात रोज़ तक पिलाइये। (चाहें तो एक ही बार में सात ता'वीज़ात लिख लीजिये और रोज़ाना एक एक पानी में डाल कर पिला दीजिये) ﴾3﴿ आधे कप पानी में एक **लीमूं** निचोड़ लीजिये और थोड़ा सा **नमक** डाल कर पी लीजिये ﴾4﴿ एक **छोटी इलाएची** और **अन्जीर** चबा कर खा लीजिये ﴾5﴿ हरे **धनिये** का अ़रक़ निकाल कर दिन में चार मरतबा एक एक चम्मच पी लीजिये ﴾6﴿ **बर्फ़** चूसिये

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

《7》 **लीमूं** काट कर पिसी हुई **काली मिर्च** और **नमक** छिड़क कर चूसिये 《8》 गर्म पानी में **लौंग** भिगो कर पीने से या **मोसम्बी** खाने से ज़च्चा[1] की कै़ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बन्द हो जाएगी।

पागल पन

येह मरज़ उ़मूमन नींद न आने या पेट की ख़राबियों के बाइ़स या कुंवारों को शादी में रुकावट या مَعَاذَاللّٰہ जलक़ (या'नी अपने हाथ के ज़रीए़ गु़स्ल फ़र्ज़ करने की वज्ह) से हो जाता है। **पागल पन** के सबब आदमी अ़जीब अ़जीब ह़-र-कतें करता, डरावनी आवाज़ें निकालता, बा'ज़ अवक़ात मारधाड़ करता और जो बातें पहले दिमाग़ से गुज़र चुकी होती हैं उन को दोहराता है। जब उस की आंखें सुर्ख़ हो जाती हैं, गुर्राता है तो बसा अवक़ात तवह्हुमात (या'नी वहमों) के मारे लोग समझते हैं कि इस को **जिन्नात** के अ-सरात हो गए हैं ! अगर्चे शरीर जिन्नात भी परेशान करते हैं लेकिन इस की मख़्सूस अ़लामात होती हैं, हर मरीज़े नफ़्सिय्यात को ख़्वाह म ख़्वाह ''आसेब ज़दा'' क़रार नहीं दिया जा सकता।

पागल पन का इ़लाज

जुनून (पागल पन) के मरीज़ को काली हड़ का मोटा मोटा सुफूफ़ (चूरा) 6 ग्राम खिलाइये और एक पाव दूध में एक **शह्द** का

1 : जिस के पेट में बच्चा हो उसे ''ह़ामिला'' कहते हैं जब कि बच्चा जनने के बा'द से ख़ून बन्द होने तक औ़रत ''ज़च्चा'' कहलाती है।

www.dawateislami.net

चम्मच ह़ल कर के **सू-रतुल फ़ातिह़ा** सात बार अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर इस पर दम कर के पिला दीजिये, मरीज़ पर भी येही दम कीजिये और कोशिश कर के सुला दीजिये।

गन्ज के चार इलाज

《1》 रोज़ाना **ज़ैत** (या'नी ज़ैतून शरीफ़ का तेल) सर में डाल कर **गन्ज** की ख़ूब मालिश कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ बन्द शुदा मसाम खुल जाएंगे और बाल उगने लगेंगे। मगर येह अ़मल बहुत दिनों तक जारी रखना होगा **《2》** सर में **प्याज़ का रस** तेल की त़रह़ डालने से जूओं का ख़ातिमा हो जाता है नीज़ बीमारी से जो बाल झड़ चुके होते हैं दोबारा उग जाते हैं। (इस से सर में बदबू हो जाएगी, इस सूरत में मस्जिद का दाख़िला ह़राम रहेगा। लिहाज़ा इस्लामी भाई सर अच्छी त़रह़ धो कर बदबू ख़त्म कर के मस्जिद में ह़ाज़िर हों) **《3》** दाढ़ी या सर के बाल झड़ते हों या गन्ज हो तो आठ चम्मच ज़ैतून के गर्म किये हुए तेल में एक चम्चा अस्ली शह्द और एक चम्चा बारीक पिसी हुई दारचीनी मिला लें फिर जहां के बाल झड़ते हों वहां ख़ूब मस्लें फिर अन्दाज़न पांच मिनट के बा'द धो लें या नहा लें। बचा हुवा तेल दोबारा भी इस्ति'माल कर सकते हैं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ 12 दिन में फ़ाएदा नज़र आ जाएगा, मगर ता हुसूले शिफ़ा येह अ़मल जारी रखिये **《4》** **कलौंजी** पीस कर मेंहदी में मिला कर सर में लगाने से सर के बाल झड़ना बन्द होते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

"रब" के दो हुरूफ़ की निस्बत से कमज़ोरी के 2 इलाज

﴾1﴿ **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان के फ़रमाने आलीशान का खुलासा है **: तल्बीना** कमज़ोरी का बेहतरीन इ़लाज है इस को बनाने का त़रीक़ा येह है **: दूध** में (जव शरीफ़ या) गेहूं का आटा या भूसी डाल कर पतला पका लीजिये। और ज़रूरत के मुत़ाबिक़ शह्द डाल लीजिये। ह़स्बे ख़्वाहिश तनावुल फ़रमाइये। इस को अ़-रबी में **तल्बीना** उर्दू में **लपटा** (राब) और पंजाबी में **सीरा** कहते हैं खुसूसन बीमारी के बा'द हो जाने वाली **कमज़ोरी** के लिये बेह़द मुफ़ीद है। येह बहुत हलकी ग़िज़ा है, ज़ूद हज़्म है, पेट में बोझ नहीं करता, दिल को कुव्वत बख़्शता है, रन्जो ग़म और दिल की घबराहट को दूर करता है। (मिरआत, जि. 6, स. 17 मुलख़्ख़सन)

﴾2﴿ भेंस के गर्म दूध में दो बड़े चम्मच **शह्द** मिला कर रोज़ाना पीना जिस्मानी त़ाक़त बढ़ाने के लिये बेह़द मुफ़ीद है।

रात का खाना खाने का फ़ाएदा

मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़ह़त निशान है **:** रात का खाना न छोड़ो चाहे एक मुट्ठी खजूर ही क्यूं न हो क्यूं कि रात का खाना तर्क करना आदमी को ज़ईफ़ कर देता है। **(ابن ماجه ج٤ص ٥٠ حديث٣٣٥٥)**

www.dawateislami.net

मसाने की पथरी का इ़लाज

ख़रबूज़ा ख़ूब खाइये कि येह सर की खुश्की और ख़ारिश को दूर भगाता, जिस्म की गांठें गलाता, ख़ूब पेशाब लाता और **मसाने की पथरी** से नजात दिलाता है । ख़रबूज़ा और खजूर मिला कर खाना नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है ।

(شمائل ترمذی ص ۱۲۱ حدیث ۱۹۰)

"ग़मे मदीना" के सात हुरूफ़ की निस्बत से तेज़ाबिय्यत (सीने की जलन) के 7 इ़लाज

﴾1﴿ अगर मुवाफ़िक़ आए तो रोज़ाना दिन के वक़्त एक केला खा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा ﴾2﴿ हर तीसरे दिन तीन चम्मच **असपग़ोल** की भूसी पानी से फांक लीजिये । ख़ाली मुंह में असपग़ोल डालेंगे तो चिपकेगी लिहाज़ा पहले थोड़ा सा पानी मुंह में भर लीजिये इस के बा'द असपग़ोल डालिये ﴾3﴿ हफ़्ते में दो रोज़े रखिये, **स-ह़री** में खाना कम खाइये । हो सके तो जुमुआ़ और हफ़्ता या जुमा'रात और जुमुआ़ रोज़ा रख लीजिये । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जुमुआ़ या'नी जब इस के साथ पन्जशम्बा (या'नी जुमा'रात) या शम्बा (या'नी हफ़्ता) भी शामिल हो मरवी हुवा कि दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 653) ﴾4﴿ खीरा, ककड़ी,

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

पत्तों समेत मूली, शल्जम, चुक़न्दर, गाजर, और सेब खाइये । इन सब्ज़ियों और सेब के न छिल्के उतारिये न ही उन को खुरचिये कि इस त़रह़ अक्सर विटामिन्ज़ ज़ाएअ़ हो सकते हैं, यूं ही धो कर इस्ति'माल कीजिये ﴾5﴿ रोज़ाना कुल 12 गिलास पानी पिया कीजिये (ग़िज़ाओं के ज़रीए़ पेट में जाने वाला पानी भी 12 गिलास में शामिल है) ﴾6﴿ ठन्डे मश्रूबात, अचार, मेदे की बनावटों, पिज़्ज़ों पराठों और मीठी डिशों वग़ैरा से ह़त्तल इम्कान परहेज़ कीजिये । नीज़ खाना कम खाइये, ख़्वाहिश बाक़ी हो और हाथ रोक लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **सीने की जलन** समेत कई बीमारियों से बचे रहेंगे ﴾7﴿ जिस वक़्त **सीने में जलन** मचे या तीखा पानी मे'दे से ह़ल्क़ में आता मह़सूस हो । PEPTINIL नामी टिक्या पानी से ले लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बहुत मुफ़ीद पाएंगे । (डॉक्टर के मश्वरे से येह गोली इस्ति'माल फ़रमाइये)

''शिफ़ा'' के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से दमा के 3 इ़लाज

﴾1﴿ रोज़ाना तीन या पांच खजूरें (धो कर) खा कर ऊपर से गर्म पानी पी लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बल्ग़म पतला हो कर निकल जाएगा और दमा में आराम मिलेगा ﴾2﴿ तीन खुश्क **अन्जीर** दूध में पका कर रोज़ाना सुब्ह़ और रात को इस्ति'माल करने से **बल्ग़म** और **दमा** से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नजात मिलेगी ﴾3﴿ रोज़ाना गाजर का रस पीने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **दमा** में आराम मिलेगा ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

"फ़ज़्ल" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से दमा के ह़म्ला करने के वक़्त के 3 इ़लाज

﴾1﴿ हल्दी और सूंठ (या'नी सूखी अदरक) का थोड़ा सा चूरन **शह्द** के साथ ले लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **दमा** में राह़त मिल जाएगी ﴾2﴿ एक पका हुवा **केला** आग की लौ पर गर्म कीजिये फिर छील कर पिसी हुई काली मिर्च छिड़क कर खा लीजिये ﴾3﴿ दो चम्मच अदरक का रस **शह्द** के साथ इस्ति'माल कीजिये।

उंगली कट जाए तो

उंगली वग़ैरा कट जाए तो कपड़े पर ख़ालिस **शह्द** लगा कर पट्टी बांध दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ून बन्द और ज़ख़्म ठीक हो जाएगा।

कांटा निकालने का त़रीक़ा

अगर जिस्म में कहीं **कांटा** पैवस्त हो गया हो और न निकलता हो तो **अन्डे की सफ़ेदी** में थोड़ी सी **फट्करी** मिला कर उस जगह बांध दीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ थोड़ी देर में निकल आएगा।

"मुह़म्मद" के चार हुरूफ़ की निस्बत से जल जाने के 4 इ़लाज

﴾1﴿ चूल्हे पर ख़ूब जोश दिया हुवा नारियल का तेल (क़ाबिले बरदाश्त होने के बा'द) **जले** हुए ह़िस्से पर मलने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा ﴾2﴿ बहुत ज़ियादा पक्का केला अच्छी त़रह़ मसल कर जली

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

हुई जगह पर चिपका कर पट्टी बांध दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل फ़ौरन सुकून मिलेगा ﴾3﴿ गर्म पानी या भाप से जले हुए ह़िस्से पर चावल का आटा छिड़क्ना मुफ़ीद है ﴾4﴿ जली हुई जिल्द पर सफ़ेद दाग़ रह जाने की सूरत में ख़ालिस शह्द में रूई डबो कर बांधने से اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل दाग़ निकल जाएगा ।

''रह़मत'' के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से थकन दूर करने के 4 इ़लाज

﴾1﴿ ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मह़बूबे रब्बे ज़ुल मिनन, सुल्त़ाने ज़मीनो ज़मन, शहन्शाहे शीरीं सुख़न صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने थकन का येह इ़लाज इर्शाद फ़रमाया : ''सोते वक़्त 33 बार سُبْحٰنَ اللّٰه 33 बार اَلْحَمْدُ لِلّٰه 34 बार اَللّٰهُ اَکْبَر पढ़ लिया करो । (مُسلِم ص۱٤٦٠حدیث۲۷۲۸) ﴾2﴿ يَاقُدُّوْسُ का जो कोई (चलते फिरते उठते बैठते) विर्द करता रहेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل **थकन** से मह़फ़ूज़ रहेगा ﴾3﴿ लीमूं का शरबत शकर डाल कर पीने से भी **थकन** दूर हो जाती है ﴾4﴿ दो बड़े चमचे ख़ालिस शह्द एक गिलास पानी में मिला कर पी लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل **थकन** दूर हो जाएगी ।

बीमारियों से ह़िफ़ाज़त के लिये......

पुरानी ज़नानी बीमारियों से नजात और आयिन्दा इन से तह़फ़्फ़ुज़ात के लिये इस्लामी बहनें येह चीज़ें ब कसरत इस्ति'माल करें

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

《1》 चुक़न्दर 《2》 पत्ते वाली सब्ज़ियां 《3》 साग 《4》 सोयाबीन 《5》 चोलाई का साग 《6》 सरसों का साग 《7》 कढ़ी पत्ता मरीज़ ग़ैर मरीज़ सभी इस को खा लें, इसे सालन से निकाल कर फेंक न दिया करें 《8》 हरा धनिया 《9》 पोदीना 《10》 काले और सफ़ेद चने 《11》 दालें 《12》 बिग़ैर छने आटे की रोटी । (ब्राऊन ख़ुब्ज़ (रोटी) और ब्राऊन ब्रेड (डबल रोटी) के नाम से बिग़ैर छने आटे की रोटियां बेकरी से मिल सकती हैं)

हैज़ की ख़राबी के नुक़्सानात

हैज़ खुल कर न आने, या तक्लीफ़ से आने या बन्द हो जाने से कई क़िस्म के अमराज़ जनम लेते हैं । म-सलन चक्कर आना, सर का दर्द और ख़ून की ख़राबी के अमराज़ जैसे ख़ारिश, फोड़े फुन्सियां वग़ैरा ।

हैज़ की ख़राबी और डरावने ख़्वाब

हैज़ की ख़राबियों की वज्ह से मरीज़ा को दूसरी परेशानियों के इलावा **डरावने ख़्वाब** भी तंग करते हैं, यहां तक कि बा'ज़ अवक़ात आ़मिल "अ-सरात" कह कर मज़ीद ख़ौफ़ज़दा कर देते हैं ! ह़ालां कि वोह आसेब ज़दा नहीं होती । इस्लामी बहन या इस्लामी भाई को जिस वज्ह से भी **डरावने ख़्वाब** आते हों तो रोज़ाना सोते वक़्त **یَا مُتَکَبِّرُ** 21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ लिया करे । इस अ़मल की पाबन्दी करने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़्वाब में नहीं डरेंगे ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

कस्रते हैज़ के दो इ़लाज

《1》 बहुत ज़ियादा ख़ून गिरता हो और चक्कर आते हों तो थोड़े से **तुलसी** के रस में एक चम्मच **शहृद** मिला कर पीना मुफ़ीद है 《2》 छ ग्राम **धनिया** (बीज) आध किलो पानी में ख़ूब पकाइये यहां तक कि पानी आधा रह जाए अब उतार कर एक **चम्मच शहृद** मिला कर नीम गर्म पी लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जल्द फ़ाएदा हो जाएगा। (मुद्दत 20 दिन)

माहवारी की ख़राबियों के तीन[3] इ़लाज

《1》 हींग खाने से रेहूम (बच्चादान) सुकड़ता और हैज़ साफ़ आता है 《2》 12 ग्राम **काले तिल**, पाव किलो **पानी** में ख़ूब जोश दीजिये जब तीन हि़स्से पानी जल जाए तो उस में कुछ **गुड़** डाल कर दोबारा जोश दीजिये (पीने के क़ाबिल हो जाने के बा'द) येह पानी पीने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ माहवारी की तक्लीफ़ कम और अय्याम दुरुस्त हो जाएंगे 《3》 **कच्ची प्याज़** खाने से माहवारी साफ़ आती है और दर्द नहीं होता।

हैज़ बन्द होने के 6 इ़लाज

《1》 अगर गरमी या ख़ुश्की के बाइ़स हैज़ बन्द हो जाए तो एक कप **सोंफ़ के अ़रक़** में एक छोटा चम्मच **तरबूज़ के बीज का मग़्ज़** और एक चम्मच **शहृद** मिला कर सुब्ह़ व शाम पियें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

फ़ाएदा हो जाएगा। पानी ख़ूब कसरत से पियें, हो सके तो रोज़ाना 12 गिलास पी लें ﴾2﴿ 25 ग्राम **गुड़** और 25 ग्राम **सोंफ़** एक किलो **पानी** में जोश दीजिये, अन्दाज़न जब एक पियाली रह जाए तो छान कर गर्म गर्म पी लीजिये। ता हुसूले शिफ़ा रोज़ाना सुब्ह़ व शाम येह इ़लाज कीजिये ﴾3﴿ हर खाने के साथ **लह्सन का एक जवा** (या'नी लह्सन की पोथी की काश, कली) बारीक काट कर निगल लीजिये और बेहतर है कि उबाल कर पी लीजिये। (नमाज़ और ज़िक्रो दुरूद के लिये मुंह ख़ूब साफ़ कीजिये ह़त्ता कि बदबू ख़त्म हो जाए) ﴾4﴿ तीन अ़दद **छुहारे**, मग़्ज़े बादाम 10 ग्राम, नारियल 10 ग्राम और **किशमिश** या'नी ख़ुश्क छोटे अंगूर 20 ग्राम ह़ैज़ के दिनों में रोज़ाना **गर्म दूध** के साथ इस्ति'माल कीजिये ﴾5﴿ अय्यामे ह़ैज़ से एक हफ़्ता क़ब्ल रोज़ाना दूध के साथ 25 ग्राम सोंफ़ इस्ति'माल कीजिये ﴾6﴿ आलू, मसूर और ख़ुश्क ग़िज़ाएं माहवारी में रुकावट बनती हैं लिहाज़ा इन अय्याम में इन से परहेज़ कीजिये।

ह़ैज़ के दर्द का इ़लाज

25 ग्राम गुड़ और गाजर के बीज 15 ग्राम दो गिलास पानी में उबालिये जब आधा गिलास रह जाए तो छान कर पी लीजिये। अगर ह़ैज़ दर्द से आता हो तो उस के अय्याम में बिग़ैर दर्द के आने लगेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلٰی)

"या ख़ुदा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से बांझ पन के 5 इलाज

«1» हर नमाज़ के बा'द दोनों मियां बीवी (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ) कुरआने करीम में वारिद येह **दुआए इब्राहीम** علیہ الصلوۃ والسلام तीन बार पढ़ते रहें :

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝ (1) (پ ۱۳، ابراھیم ۴۰۔۴۱)

«2» दोनों हर नमाज़ के बा'द (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) **दुआए ज़-करिय्या** भी तीन मर्तबा पढ़ लिया करें :

(1) رَبِّ هَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّیَّةً طَیِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِیْعُ الدُّعَآءِ ۝ (پ ۳، اٰل عمران ۳۸)

«3» एक अ़दद जाइफ़ल बारीक पीस कर सात ह़िस्से कर लीजिये। तीन माह तक औ़रत एक एक ह़िस्सा रोज़ाना सुब्ह़ पानी से इस्ति'माल करे। मगर ह़ैज़ के दौरान न ले «4» 12 ग्राम सोंफ़ और 50 ग्राम गुलक़न्द रोज़ाना रात को गर्म दूध से खाइये «5» आधा किलो शकर, आधा किलो सोंफ़, 250 ग्राम मग़्ज़े बादाम, आधा किलो देसी घी। सोंफ़ को बारीक पीस कर गर्म घी में मिला दीजिये नीज़ शकर डाल दीजिये फिर चूल्हे से उतार कर कूटे हुए बादाम ऊपर डाल दीजिये।

---

1 : तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब ! और हमारी दुआ़ सुन ले ऐ हमारे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसल्मानों को जिस दिन ह़िसाब क़ाइम होगा।

2 : तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद, बेशक तू ही दुआ़ सुनने वाला।

www.dawateislami.net

तरकीबे इस्ति'माल : जिस दिन माहवारी शुरूअ़ हो उस दिन से मियां बीवी दोनों तीस तीस ग्राम सुब्ह़ व शाम **दूध** के साथ इस्ति'माल करना शुरूअ़ कर दें। (मुद्दते इ़लाज कम अज़ कम 92 दिन)

ह़ामिला की तकालीफ़ के 6 इ़लाज

《1》 देसी घी में भुनी हुई हींग देसी घी के साथ खाने से **दर्दे ज़िह** और **चक्कर** में फ़ाएदा होता है 《2》 अगर **ह़ामिला** को भूक न लगती हो तो दो चम्मच **अदरक** के रस में सुपारी जितना गुड़ और पाव चम्मच **अजमा का चूरन** मिला कर सुब्ह़ व शाम इस्ति'माल करने से भूक ख़ूब लगती है 《3》 दौराने ह़म्ल **बुख़ार** और विलादत के बा'द **दर्दे कमर** हो तो आधा चम्मच **पिसी हुई सूंठ**, आधा चम्मच **अजमा** और आधा चम्मच **देसी घी** मिला कर सुब्ह़ व शाम खिलाइये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आराम आ जाएगा 《4》 ह़ामिला रोज़ाना **माल्टा** और सिर्फ़ एक अ़दद **छोटा सेब** खाए, अगर मजबूरी हो तो तब भी आयरन की गोलियां कम से कम इस्ति'माल करे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हर क़िस्म की बीमारी से ह़िफ़ाज़त होगी और बच्चा **ख़ूब सूरत** होगा। सेब और आयरन की गोलियां ज़ियादा खाने से **बच्चा काला** पैदा हो सकता है 《5》 क़ै, मतली, बद हज़्मी, गेस से पेट फूलना, बल्ग़म, पेट का दर्द और ह़ामिला की दीगर तकालीफ़ में **अजमा का चूरन** आधा चम्मच नीम गर्म पानी के साथ सुब्ह़ व शाम इस्ति'माल करना बहुत मुफ़ीद है 《6》 तीन ग्राम **पिसा हुवा धनिया** और 12 ग्राम शकर को चावल के धोवन

www.dawateislami.net

(या'नी चावल का धोया हुवा पानी) के साथ ह़ामिला इस्ति'माल करे तो क़ै में इफ़ाक़ा (कमी, फ़ाएदा) होता है।

ह़सीन व अ़क़्ल मन्द औलाद के लिये

ह़ामिला अगर ब कसरत ख़रबूज़ा खाए तो **औलाद ह़सीन** और सिह़्ह़त मन्द पैदा होगी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ। और अगर ह़ामिला "लोबिया" (जो कि एक मश्हूर सब्ज़ी है) कसरत से खाए तो औलाद अ़क़्ल मन्द पैदा हो। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

अय्यामे ह़म्ल के लिये बेहतरीन अ़मल

ह़म्ल में किसी क़िस्म की भी तक्लीफ़ हो उस के लिये नीज़ वज़्ए **ह़म्ल** (या'नी विलादत) में आसानी की ख़ातिर **सूरए मरयम** (पारह : 16) का विर्द बेह़द मुफ़ीद है। ह़ामिला रोज़ पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया करे या कोई दूसरा पढ़ कर दम कर दे। रोज़ाना न पढ़ सके तो जब दर्द की शिद्दत हो या बच्चा पेट में टेढ़ा हो जाए तो पढ़ कर दम कर लिया करे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें ख़ूब ज़ाहिर होंगी।

ह़म्ल में ताख़ीर

अगर **ह़म्ल** में मत़्लूबा दर्द शुरूअ़ होने में ताख़ीर हो जाए तो बहुत पुराना गुड़ 30 या 40 ग्राम ले कर 100 ग्राम पानी में गर्म कीजिये, जब गुड़ पिघल जाए तो "सुहागा" और "फूली हुई फट्करी" दो ग्राम मिला कर पिलाने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आसानी से विलादत हो जाएगी।

अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया तो......

सू-रतुल इन्शिक़ाक़ की इब्तिदाई पांच आयात तीन बार पढ़े। (अव्वल व आख़िर तीन मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े) आयतों के शुरूअ़ में हर बार بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ ले। पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले। रोज़ाना येह अ़मल करती रहे। वक़्तन फ़ वक़्तन इन आयात का विर्द करती रहे। दूसरा कोई भी दम कर के दे सकता है। اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बच्चा सीधा हो जाएगा। दर्दे ज़िह के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है।

सफ़ेद पानी

﴾1﴿ तीन तीन ग्राम ज़ीरा और शकर को पीस कर मिला लीजिये। इस चूरन को मुनासिब मिक़्दार में चावल के धोवन में मिला कर पीने से اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **सफ़ेद पानी** गिरना बन्द हो जाएगा ﴾2﴿ 6 ग्राम ख़ालिस घी और एक पक्का केला साथ खाने से اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ पानी गिरना बन्द होगा।

"या फ़ातिमा" के सात हुरूफ़ की निस्बत से ह़म्ल की ह़िफ़ाज़त के 7 इ़लाज

﴾1﴿ **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ** (ए'राब लगाने की ह़ाजत नहीं अलबत्ता दोनों जगह ہ के दाएरे खुले रखिये) किसी काग़ज़ पर 55 बार लिख कर (या लिखवा कर) ह़स्बे ज़रूरत ता'वीज़ की त़रह़ तह कर के मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े या रेग्ज़ीन या चमड़े में सी कर **ह़ामिला** गले

www.dawateislami.net

में पहन या बाज़ू में बांध ले। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **ह़म्ल** की भी हि़फ़ाज़त होगी और **बच्चा** भी बला व आफ़त से सलामत रहेगा। अगर 55 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ) पढ़ कर पानी पर दम कर के रख लें और पैदा होते ही **बच्चे के मुंह** पर लगा दें तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बच्चा ज़हीन होगा और बच्चों को होने वाली बीमारियों से भी मह़फ़ूज़ रहेगा। अगर येही पढ़ कर **ज़ैत** (या'नी ज़ैतून शरीफ़ के तेल) पर दम कर के **बच्चे के जिस्म** पर नरमी के साथ मल दिया जाए तो बेह़द मुफ़ीद है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कीड़े मकोड़े और दीगर मूज़ी जानवर बच्चे से दूर रहेंगे। इस त़रह़ का पढ़ा हुवा ज़ैत बड़ों के **जिस्मानी दर्दों** में मालिश के लिये भी निहायत कारआमद है (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 995) **《2》** **لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ** (बिग़ैर ए'राब मगर दोनों जगह **ہ** के दाएरे खुले हों) किसी रिकाबी (या काग़ज़) पर 11 बार लिख कर धो कर औ़रत को पिला दीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ह़म्ल की हि़फ़ाज़त होगी। जिस औ़रत को दूध न आता हो या कम आता हो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है। चाहें तो एक ही दिन पिलाएं या कई रोज़ तक रोज़ाना ही लिख कर पिलाएं हर त़रह़ से इख़्तियार है **《3》** **یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ** 111 बार किसी काग़ज़ पर लिख कर **ह़ामिला** के पेट पर बांध दीजिये और विलादत के वक़्त तक बांधे रहिये (ज़रूरतन कुछ देर के लिये खोलने में ह़रज नहीं) اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ह़म्ल भी मह़फ़ूज़ रहेगा और

www.dawateislami.net

बच्चा भी सिह्ह़त मन्द पैदा होगा। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 1296) ﴾4﴿ हि़फ़ाज़ते **ह़म्ल** के लिये शुरूए ह़म्ल से ले कर बच्चे का दूध छुड़ाने तक रोज़ाना एक बार **सूरए वश्शम्स** (पारह : 30) पढ़े ﴾5﴿ **ह़म्ल** ज़ाएअ़ होने के ख़त़रे की सूरत में रोज़ाना बा'दे नमाज़े फ़ज्र शोहर ह़ामिला ज़ौजा के पेट पर शहादत की उंगली रख कर दस बार दाएरा बनाए और हर बार उंगली घुमाते हुए **يَا مُبْتَدِئُ** पढ़े ﴾6﴿ **يَا رَقِيْبُ** सात बार रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द अपने पेट पर हाथ रख कर ह़ामिला पढ़े اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ बच्चा ज़ाएअ़ न होगा ﴾7﴿ जिस औ़रत का **ह़म्ल** गिर जाता हो उसे चाहिये कि आग़ाज़ से ले कर आख़िरी दिन तक रोज़ाना सुब्ह़ ख़ुश्क धनिया 21 दाने और शाम को काला ज़ीरा दो चुटकियां ठन्डे पानी के साथ निगल लिया करे। اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ मुक़र्ररा वक़्त पर तन्दुरुस्त बच्चे की विलादत हो जाएगी

लीकोरिया का इ़लाज

﴾1﴿ नाश्ते के बा'द **तीन ख़ुश्क अन्जीर** खाइये اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

इ़र्क़ुन्निसा के दो[2] इ़लाज

﴾1﴿ रोज़ाना दर्द के मक़ाम पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ **सू-रतुल फ़ातिह़ा** एक बार और सात मर्तबा येह दुआ़ पढ़ कर दम कर दीजिये : **اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّیْ سُوْءَ مَا اَجِدُ** (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से मरज़ दूर फ़रमा दे) अगर दूसरा कोई पढ़ कर दम करे तो

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

عَنِّیْ की जगह मर्द के लिये [1] **عَنْہُ** और औ़रत के लिये [2] **عَنْہَا** कहे। (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा) ﴾2﴿ **یَا مُحْیِیُ** सात बार पढ़ कर गेस हो या पीठ या पेट में तक्लीफ़ या **इर्कुन्निसा** या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उ़ज़्व के ज़ाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ हो, अपने ऊपर दम कर दीजिये। (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा)

देसी मुर्ग़ी के फ़वाइद

देसी मुर्ग़ी का गोश्त पेट के दर्द के लिये मुफ़ीद है, इस से **कुव्वते हाफ़िज़ा** भी बढ़ती है। आज कल मुजरिमाना ज़ेहन के लोग छोटी छोटी फ़ार्मी मुर्ग़ियों और फ़ार्मी मुर्ग़ी के अन्डों को रंग लगा कर देसी की त़रह़ बना देते हैं। **देसी मुर्ग़ी** की एक पहचान येह भी है कि उस का पेट क़दरे पतला होता है और वज़्न भी बहुत ज़ियादा नहीं होता। **وَاللّٰہُ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

घरेलू झगड़ों का इलाज

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **घर** में दाख़िल होते वक़्त بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर पहले सीधा क़दम दरवाज़े में दाख़िल करना चाहिये फिर घर वालों को **सलाम** करते हुए घर के अन्दर आएं। अगर घर में कोई न हो तो **اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَ رَحْمَۃُ اللّٰہِ وَ بَرَکَاتُہٗ** कहें। बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया है कि दिन की इब्तिदा में घर में दाख़िल होते

1, 2 : या'नी इस से

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

वक़्त بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم और قُلْ هُوَ الله शरीफ़ पढ़ लेते हैं कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है (या'नी झगड़ा नहीं होता) और रोज़ी में ब-र-कत भी। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 9)

या इलाही हर घड़ी शैत़ान से मह़फ़ूज़ रख
दे जगह फ़िरदौस में नीरान [1] से मह़फ़ूज़ रख

कलौंजी के 19 म-दनी फूल

﴾1﴿ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : काला दाना (**कलौंजी**) में मौत के सिवा हर बीमारी की शिफ़ा है। **(بُخاری ج٤ ص١٩ حدیث٥٦٨٧)** **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हर मरज़ से मुराद हर बल्ग़मी और रत़ूबत के अमराज़ हैं क्यूं कि **कलौंजी** गर्म और ख़ुश्क होती है लिहाज़ा मरत़ूब और सर्दी की बीमारियों में मुफ़ीद होगी। (मिरआत शर्हे मिश्कात, जि. 6, स. 216) ﴾2﴿ रोज़ाना नहार मुंह चुटकी भर **कलौंजी** तक़रीबन 12 क़त़रे अस्ली शह्द में मिला कर بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर शहादत की उंगली से चाटिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ **बहुत सी बीमारियां ख़त्म** हो जाएंगी ﴾3﴿ **कलौंजी** को जला कर खाना **बवासीर** को दूर करता है ﴾4﴿ **कलौंजी** खाने से **पेट के कीड़े** मर जाते हैं ﴾5﴿ **कलौंजी** को तेल में जोश दे कर सर में वोह तेल लगाने से **दर्दे सर, नज़्ला** और **ज़ुकाम** में फ़ाएदा होता है ﴾6﴿ अगर ख़ुश्की की वज्ह से सर पर **पपड़ियां** सी

1 : नीरान या'नी दोज़ख़

www.dawateislami.net

बन गई हों तो **कलौंजी** खाने से ख़त्म हो जाती हैं ﴾7﴿ **कलौंजी** को पानी में जोश दे कर ग़रारे करने से **दांतों का दर्द** दूर होता है ﴾8﴿ पेशाब न आने की सूरत में **कलौंजी** के खाने से **पेशाब खुल** कर आ जाता है ﴾9﴿ **कलौंजी** में सिर्का मिला कर खाने से **बल्ग़मी वरम** दूर होता है ﴾10﴿ ज़ैतून के तेल में **कलौंजी** डाल कर सूंघने से **आंखों का दर्द** जाता रहता है ﴾11﴿ **कलौंजी** बल्ग़मी बुख़ार के लिये मुफ़ीद है ﴾12﴿ **कलौंजी हैज़** की रुकावट को दूर करती है ﴾13﴿ **कलौंजी** सिर्के में मिला कर **बरस** (कोढ़) पर लगाने से फ़ाएदा होता है ﴾14﴿ फ़ोते की सूजन में **कलौंजी** पीस कर सिर्के में मिला कर लगाएं तो फ़ाएदा होता है ﴾15﴿ **कलौंजी** पीस कर मेंहदी में मिला कर सर में लगाने से सर के **बाल** झड़ना बन्द होते हैं ﴾16﴿ **कलौंजी** का इस्ति'माल **सीने के दर्द** और **खांसी** में मुफ़ीद है ﴾17﴿ घर में **कलौंजी** की धूनी देने से **खटमल** और **मच्छर** का ख़ातिमा होता है ﴾18﴿ दिमाग़ की बीमारी हो तो **कलौंजी** के इक्कीस दाने कपड़े की पोटली में बांध कर पानी में उबालिये। पहले दिन सीधे नथने में दो क़तरे और उल्टे नथने में एक क़तरा। दूसरे दिन उल्टे नथने में दो क़तरे और सीधे नथने में एक क़तरा डालिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तीन दिन में शिफ़ा ह़ासिल हो जाएगी ﴾19﴿ **कलौंजी** शहद के साथ खाने से (गुर्दे मसाने की) **पथरी** निकल जाती है।

अन्जीर के 33 म–दनी फूल

﴾1﴿ **अन्जीर** में दीगर तमाम फलों के मुक़ाबले में बेहतर

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

गिज़ाइय्यत है। ﴾2﴿ **अन्जीर** बवासीर को ख़त्म कर देता और जोड़ों के दर्द के लिये मुफ़ीद है ﴾3﴿ **अन्जीर** नहार मुंह खाने के अ़जीबो ग़रीब फ़वाइद हैं ﴾4﴿ ख़ुश्क **अन्जीर** सख़्त हों तो उन को कमो बेश 25 मिनट पानी में भिगो दीजिये और धो कर छाउं में सुखा दीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ नर्म हो जाएंगे। सब्ज़ियां, फल, ख़ुश्क मेवे वग़ैरा मुम्किना सूरत में धो कर ही इस्ति'माल किये जाएं ताकि जरासीम कुश अदविय्या का असर धुल जाए ﴾5﴿ अगर ख़ूनी बवासीर हो तो पांच अ़दद **अन्जीर** टुकड़े कर के पाव भर दूध में उबाल कर ठन्डा कर के रोज़ाना सोने से पहले खा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ थोड़े ही दिनों में ख़ून बन्द हो जाएगा। येह अ़मल मुस्तक़िल जारी रखें तो बहुत अच्छा है ﴾6﴿ ख़ुश्क बवासीर के सबब बहुत दर्द हो तो पानी में एक चम्मच शह्द मिला कर उस के साथ नहार मुंह या'नी नाश्ते से क़ब्ल और अगर रोज़ा हो तो इफ़्तार में ख़ाली पेट पांच अ़दद **अन्जीर** रोज़ाना खाइये ﴾7﴿ ताज़ा **अन्जीर** का रस निचोड़ कर मस्सों को लगाया जाए तो मस्से झड़ जाने की उम्मीद है ﴾8﴿ जिन को बवासीर की तक्लीफ़ कम मगर बद हज़्मी ज़ियादा हो वोह हर खाने से क़ब्ल तीन अ़दद **अन्जीर** खा लें ﴾9﴿ जिन के पेट में बोझ हो जाता हो वोह हर बार खाना खाने के बा'द तीन अ़दद **अन्जीर** खा लें ﴾10﴿ **अन्जीर** मोटे पेट को छोटा करता और मोटापा दूर करता है ﴾11﴿ कमर के दर्द वाले रोज़ाना सात अ़दद **अन्जीर** खा लिया करें ﴾12﴿ जिस को क़ब्ज़ रहता हो वोह रोज़ाना नहार मुंह 5 अ़दद **अन्जीर** खा ले ﴾13﴿ **अन्जीर** खाने से हैज़ के ख़ून में इज़ाफ़ा

www.dawateislami.net

और दूध में ज़ियादती होती है ﴾14﴿ **अन्जीर** में **खांसी** और दमे का इलाज है ﴾15﴿ **अन्जीर** चेहरे का रंग निखारने के लिये मुफ़ीद है ﴾16﴿ **अन्जीर** पुरानी बल्ग़मी **खांसी** के लिये नफ़्अ़ बख़्श है ﴾17﴿ **अन्जीर** बल्ग़म को पतला कर के ही निकाल देता है ﴾18﴿ **अन्जीर** प्यास बुझाता है ﴾19﴿ **अन्जीर** का गूदा बुख़ार के दौरान मरीज़ के मुंह को ख़ुश्क नहीं होने देता ﴾20﴿ मेथी के बीज और **अन्जीर** पानी में पका कर ख़ूब गाढ़ा कर के उस में शह्द मिला कर खाने से **खांसी** की शिद्दत में राह़त होती है ﴾21﴿ **अन्जीर** गुर्दा और मसाना (या'नी पेशाब की थेली) की सोज़िश के लिये मुफ़ीद है ﴾22﴿ सफ़ेद **अन्जीर** सब से बेहतरीन माना जाता है। येह गुर्दा, मसाना और पित्ते की पथरी को ह़ल कर के निकाल देता है ﴾23﴿ अगर किसी के गुर्दे फ़ेल हों और वोह त़वील मुद्दत तक **अन्जीर** इस्ति'माल करे तो बि फ़ज़्लिही तआ़ला उस को सिह़ह़त मिल सकती है ﴾24﴿ **अन्जीर** पेट की रीह़ को बाहर निकालता है ﴾25﴿ **अन्जीर** और बादाम मिला कर खाएं तो पेट की अक्सर बीमारियां दूर भागती हैं ﴾26﴿ **अन्जीर** ह़ल्क़ की सोज़िश, सीने के बोझ और फेफड़ों की सूजन में फ़ाएदा करता है ﴾27﴿ **अन्जीर** जिगर और तिल्ली को साफ़ करता है ﴾28﴿ **अन्जीर** जिगर और पित्ते के सुद्दे या'नी गन्दी गांठों को निकालता है ﴾29﴿ **अन्जीर** छाती की पुरानी सोज़िश के लिये नफ़्अ़ बख़्श है ﴾30﴿ **अन्जीर** के जोश दिये हुए पानी के ग़रारे करने से मसूड़ों और गले की सोज़िश कम होती है ﴾31﴿ ख़ुश्क **अन्जीर** को जला कर उस की राख से मन्जन करने से दांत का

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

मैल और धब्बे दूर होते हैं ﴾32﴿ जव शरीफ़ की रोटी और **अन्जीर** मिला कर खाना मु-तअ़द्दद दिमाग़ी अमराज़ का इ़लाज है ﴾33﴿ **अन्जीर** ब्लड प्रेशर (B.P.) और कोलेस्ट्रोल (CHOLESTROL) के मरीज़ के लिये मुफ़ीद है।

100
एक चुप सो सुख

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब
21 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1437 सि.हि.
22-02-2012

ماٰخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قران پاک	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت
تفسیر کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	شمائل ترمذی	داراحیاء التراث العربی بیروت
تفسیر نعیمی	مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیاء لاہور	مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر بیروت
صحیح بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مراۃ المناجیح	ضیاء القران پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	ردالمحتار	دار المعرفۃ بیروت
سنن ابوداود	داراحیاء التراث العربی بیروت	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
سنن ترمذی	دار الفکر بیروت	فتاوی افریقہ	نوری کتب خانہ مرکز الاولیاء لاہور
سنن ابن ماجہ	دار المعرفہ بیروت	قوت القلوب	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
معجم الاوسط	دار الفکر بیروت	بہجۃ الاسرار	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مستدرک	دار المعرفہ بیروت	حیاۃ الحیوان الکبری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
الترغیب والترھیب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	حصن حصین	مکتبۃ العصریہ بیروت
عمل الیوم واللیلۃ	بیروت	الوظیفۃ الکریمۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
جامع صغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فیضانِ سنت جلد اول	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net